CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

31.2/SC

राग विज्ञान

षष्ठ भाग

आम्नाय-ग्रन्थालय,
[illegible]
वाराणसी-५

ग्रन्थालय
वाराणसी-५
/S6

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

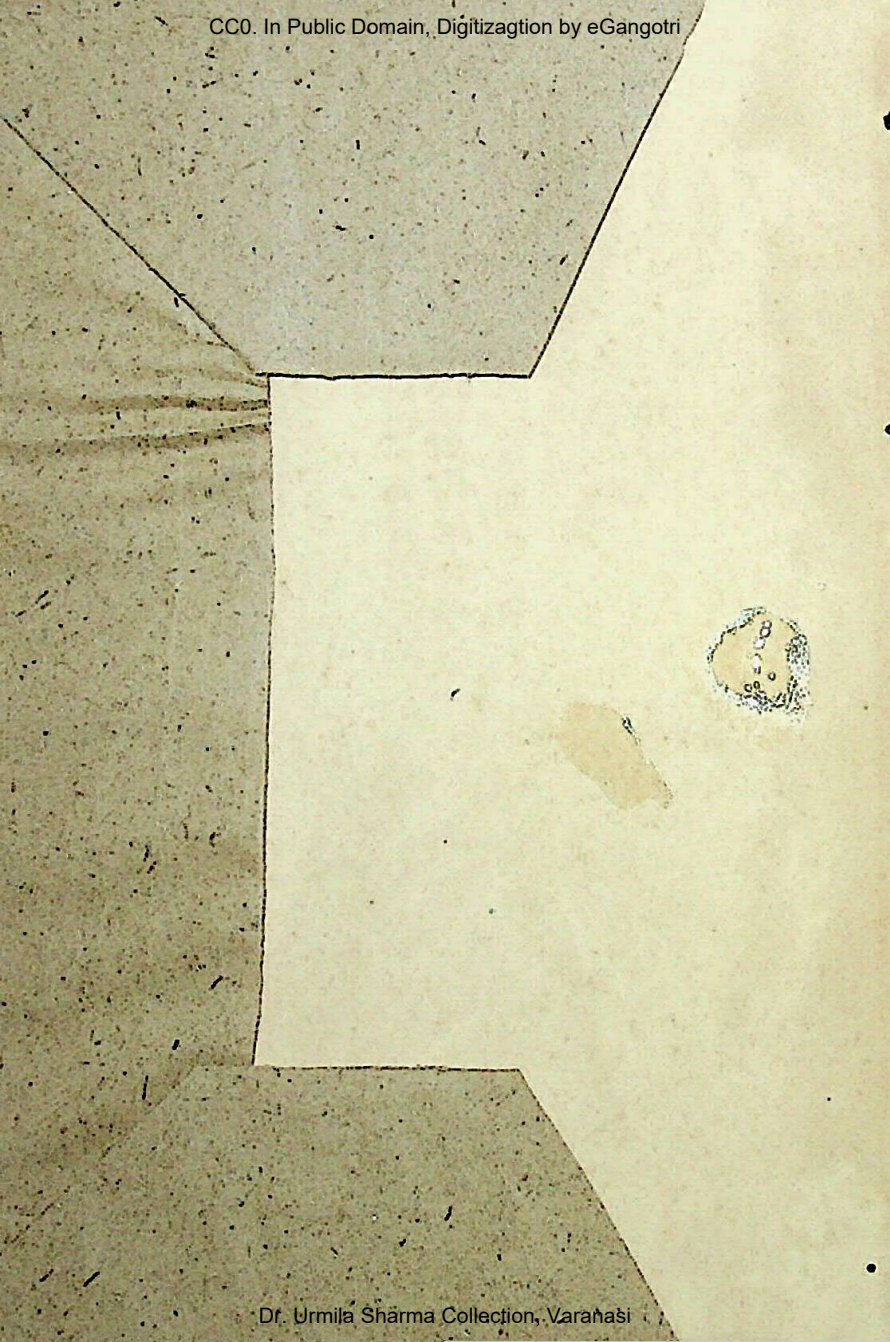

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीराम प्रसन्न ॥

संगीत गौरव ग्रंथमालाका ११ वा पुष्प

राग-विज्ञान

षष्ठम भाग

लेखक

संगीत-प्रवीण, संगीत-चूडामणि,

पं. विनायक नारायण पटवर्धन

प्रिन्सिपॉल, विष्णु दिगंबर संगीत विद्यालय, पुणें

सन १९५८] प्रथम आवृत्ति [मूल्य ३ रु.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरलिपी के चिन्हों का संक्षिप्त परिचय

सां–मंद्र सप्तक, सा–मध्य सप्तक. सां–तार सप्तक

– लघु; १ मात्राः–सा; ० द्रुत, आधी मात्राः– ग;

⌣ अणुद्रुत; $\frac{1}{8}$ मात्राः–सा; अणु-अणु-द्रुत, $\frac{1}{2}$ मात्राः–सा

ऽ उच्चारणः–ऽ; ' विश्रांतिः– ' ;

जहां दो स्वरों में एक स्मर उपर लिखा हुआ तो उस स्वर को कण स्वर (Grace Note) समझना चाहिये ।

स्वर का विकृत रूप दिखानें के लिये उसे हल् कर के लिखा गया है । जैसेः–नि् (नि कोमल); म् (म तीव्र)

सम, ताली और खाली

"१"–यह अंक ताल की मात्रा या सम के लिये है । समके अतिरिक्त जिस मात्रापर ताली आती है उसके नीचे उसी की संख्या का अंक दिया गया है । खालीके लिये '+' इस चिन्ह का प्रयोग किया गया है ।

मुद्रक—स. रा. सरदेसाई, बी.ए., एल्एल्.बी., नवीन समर्थ विद्यालय का 'समर्थ भारत' छापखाना, ४१ बुधवार, पूना २.

प्रकाशकः—मधुसूदन विनायक पटवर्धन, संगीत गौरव ग्रंथमाला, जमखंडीकरवाडा, ४९५ शनवार, तिमालेपर, ब्लॉक नं. ११ ए, पूना २.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम संस्करणकी भूमिका

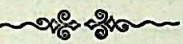

यस्य सर्वे स्वनारंभाः संगीतोद्धारहेतवे।
तस्मै दिगंबरांशाय विष्णवे गुरुवेनमः॥

भगवानकी असीम कृपासे 'राग-विज्ञान षष्ठम भाग' प्रकाशित करनेका सुयोग १९ वर्षके पश्चात आज मुझे प्राप्त हुवा है। राग विज्ञानके ४ थे और ५ वे भागके नये संस्करणमे लगभग बीस राग नये दिये है। षष्ठम भाग छपानेका विचार नहि था। कारण अभ्यासक्रममे नये राग कही नहि है तो यह पुस्तक कौन लेंगे ऐसा मुझे डर था। परंतु आजकल यह पुस्तकको भी जनताकी मांग है। ऐसा देखनेमे आया इसीलिये यह पुस्तक लिखनेका साहस करके छपवाया है। इस पुस्तकमे ३५ नये राग और गत पांच भागोंमे १२५ राग देकर १६० रागोंकी मैंने पूर्ती की है। स्व. गुरुदेव पं. विष्णु दिगंबरजीके २६ पुण्यतिथीमे हरवर्ष १-२ नये राग बिठाकर गुरु-देवजीके चरणोंमे अर्पण करनेका मेरा निश्चय था। उसीका यह फल पुस्तक रूपसे दीख रहा है। जो राग गुरु घरसे नहि मिले थे परंतु विद्वान गायकों से सुननेको मिले और उसका शास्त्र परिचय भी अनेक पुस्तकोंमे देखकर यह राग मैंने बिठाये। और पुराने पद (चिजें) मिलानेका प्रयत्न किया तो केवल २० चिजें मिली। पश्चात एक विचार और भी मेरे मनमें आया वह यही की पुरानी कविताएं जो अप्रचलित रागोंमे एकेक दो दो होगी उसके साथमे नई कविताएं और बिठा देनेसे उन रागोंमे कविता और बढेंगी, उससे फायदाही होगा। मेरे बुद्धीके अनुसार बहुतसी नई कविताएं बिठाई हुई इस पुस्तकमे दी है। मुझे नया काव्य बनाना नहीं आता इसी कारण पुराने संतजनोंकी कविताएं ख्याल, तीनताल, द्रुत एकताल इ. तालोंमे बिठाकर जनताके सामने रखनेका प्रयत्न किया हैं। रसानुकुल और गायनके योग्य कविताओंको ढुंढकर उनको रागोंमे बिठाया है। इसमें पुरानी चिजें तो नहीं हैं। ये तो भजन दिख पडते हैं ऐसा आक्षेप मेरे उपर पुराने गायक और पुराने मतवाले वाचक अवश्य लेंगे। पिया, सास, ननंद इ.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

या बीभत्स शृंगारकी कविताएं मुझे पसंद नहीं हैं। और नई कविताएं बनाकर पुरानी कविताओंका आभास करनेका मेरे पास दंभभी नहीं हैं। पुरानी चिजें भी कोई गायक या कवीनेही बनवायी होगी। वह चिजें या कविताएं वेदके माफक वेदोनारायणके मुखसे तो निकली हुई नहीं है? किसी ना किसी गायकने अपने बुद्धीसेही अवश्य बिठायी होगी। उसको बिठाकर गाने लगे और उसमें गानेका पूरा ढंग जब आया होगा तबही पुरानी चीज पुरानी चीज कहकर पुकारा होगा। लेकिन मैने पुराने संत जनोंके कविताओंको रागोमें बिठाकर संगीतप्रेमी जनताके सामने रखनेका प्रयत्न किया हैं। पुरानी पद्धतीके अनुसार गुरुमुखसे मुझे यह चीज मिली ऐसा झूट कहना मुझे पसंद नहीं है। इस लिये इतना खुलासा किया है। कई कविताएं अच्छी नहीं बैठी होगी। परंतु बहुतसी कविताएं ढंगदार बिठानेका मैनें प्रयत्न किया है। अब जनता उसको अपनाकर गाने लगेगी तो मेरा श्रमपरिहार होगा। पाँच भागोको जैसा संगीत रसिकोंने आश्रय दिया है वैसाही इस अल्पकृतिको अपनाकर लेखकका परिश्रम सफल करें।

षष्ठयब्दीपुर्ती दिन
२२ जुलाई १९५८

पं. विनायक नारायण पटवर्धन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रमणिका

राग-मध्यमादि सारंग—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १-३, आज अंजन पृ. ३, अबतौ पृ ४, हमनभई पृ. ५.

राग-वडहंस सारंग—शास्त्रीय परिचय, आलाप तान पृ. ६-८, जाको मन पृ. ९, मोहन इतनो पृ. १०.

राग-सामंत सारंग—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ११-१२, आज दिवस पृ. १३, मदन गुपाल पृ. १४.

राग-लंकादन सारंग—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १५-१६, दीन दयाल पृ. १७, मनमोहन पृ. १८, उमंड घुंड पृ. १९.

राग-तालसेनी सारंग—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. २०-२१, राधावल्लभ पृ. २२, सो मन गिरिधर पृ. २३.

राग-नारायणी—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ २४-२५, है हरितें पृ. २६, युगुल छवि पृ. २७.

राग-जैज बिलावल—परिचय, शास्त्रीय आलापतान पृ. २९-३०, ज्ञानरंग पृ. ३१, दिन दिन प्रीत पृ. ३३.

राग-देवरंजनी—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ३४-३५, अब घर पाया पृ. ३५, भूल्यो मन माया पृ. ३६.

राग-गोपिका वसंत—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ३७-३८, चल चल रे हंसा पृ. ३९, नामबिन भाव पृ. ४०.

राग-अम्बिका—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ४२-४५, सुनिये नाथ पृ. ४६, करहु प्रभु पृ. ४६, हरि समान दाता पृ. ४७.

राग-प्रदीपकी—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ४८-४९, पिया घर आलेरी पृ. ५१, मैतो यही पृ. ५१, सो मेरो मन लेगयो पृ. ५२.

राग-पटमंजरी—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ५४-५५, बिलम-रहे पृ. ५६, मेरो दग लाग्यो पृ. ५८, अपनी ओर पृ. ५९.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग-सामन्त कल्याण—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ६०-६१, कैते दरस पृ. ६२, ठुमुक ठुमुक पग पृ ६३.

राग-सिन्धु बहार—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ६४-६५, मान मनायो पृ. ६६, मेरि गति जानकी जीवन राम पृ. ६७.

राग-बरवा—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ६८-७०, ऐसे पिये पृ. ७१, मनरे परसि पृ. ७२, आजुहौ पृ. ७३, बाजे मोरि पृ. ७४.

राग-गुंजी कानडा—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ७५-७७, सुंबे सुगंध पृ. ७७, चलोरी मुरली पृ. ७८, पिया मिलन कैसे पृ. ७९.

राग-कौसी कानडा (मालकंस अंग)—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ८०-८२ राधोराम पृ. ८३, अवहरी पृ. ८४.

राग-कौसीकानडा (वागेश्री अंग)—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ८६-८७, आजुरी नंदलाल पृ. ८८, कानन दे पृ. ८९, तराना पृ. ९०.

राग-अभोगी कानडा—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ९१-९३, जयति श्रीराधिके पृ. ९४, पारगया पृ. ९५, प्रभु संगति पृ. ९६.

राग-काफी कानडा—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ९७-९९, सुखकर आई पृ. ९९-१०१, सखीरी यह मेरो पृ. १०२.

राग-जयंत कानडा—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १०३-१०५, मेरे प्रीतम प्राण पृ. १०५, हमरी आँखिनके पृ. १०६.

राग-मुद्रिकी कानडा—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १०८-१०९, हरो मेरे दुख पृ. ११०, जबते श्याम सरन पृ. १११.

राग-हुसेनी कानडा—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ ११२-११३, बेणी निरखत पृ. ११४, चंचल दृग पृ. ११५, बन्यो सिय प्यारी, पृ. ११६.

राग-कानडा मल्हार—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. ११७-११८, बमनबर पूरे पृ. ११९, मोरि बूंदरिया पृ. १२०.

राग-मालव—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १२१-१२२, राधे राधे पृ. १२३, मुकुंद मुकुंद पृ. १२४, हे मेरो मन पृ. १२५.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग-संपूर्ण मालकंस—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ.१२६-१२८, आपनो रूप पृ. १२९, मुरली की टेर पृ. १३०.

राग-जोग—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १३१-१३३, अब मै कैसे पृ. १३४, सखी तवसों पृ. १३५, द्वारे मेरे बन्सी पृ. १३६.

राग-जोगकंस—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १३७-१३८, आव पियारे पृ. १३९, प्रीतमतू पृ. १४०.

राग-चंद्रकंस—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १४१-१४२, नाथ मेहि अवकी पृ. १४३, अब मोहि भीजत पृ. १४४.

राग-पंचम मालकंस—ऐसे प्रभु अनाथके पृ. १४६.

राग-मालती वसंत—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १४८-१४९, ताल सुर भेद पृ. १५०, संतो ऐसा पृ. १५१.

राग-भटिहार—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १५३-१५४, तू करतार पृ. १५५, आओ प्यारे पृ. १५६, पियाको संदेसवा पृ. १५७.

राग-अंकार—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १५८-१५९, सिमिर सुमिर पृ. १६०, नैनों नीर बहै पृ. १६१, मनरे सांचा पृ. १६१.

राग-ललितावरी—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १६३-१६४, हमसे तुमसे पृ. १६५, भला जागरे पृ. १६६, कहा नर अपनो पृ. १६७.

राग-पंचम—शास्त्रीय परिचय, आलापतान पृ. १६८-१६९, फूलीं बसंत पृ. १६९, देखो प्यारी पृ १७०, मै इनके संग पृ. १७२, वामदेव पृ. १७२, अवकर सोलाह पृ. १७४, मन पछि तैहो पृ. १७५.

पुरवणी—भेटेल कधि जगदंबा पृ. १७६.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तुत पुस्तक में प्रयुक्त तालों के ठेके

ख्याल–तिलवाडा, मात्रा १६; (१, ५, १३ पर ताली)

धा ति रि कि ट धिं ड धिं ना ना तीं तीं ता ति र कि ट धीं ड धीं
— ० ० ० ० — ० ० — — — — — ० ० ० ० — ० ०
१ ५ +

ना ना धीं धीं ।
— — — — —
१३

झुमरा मात्रा १४; (१, ४, ११ पर ताली)

धिं ड धा ति र कि ट धिं धिं धा गि ति र कि ट तिं ड ता ति र कि ट
— ० ० ० ० ० — — ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ०
१ ४ +

धिं धिं धा गि ति र कि ट ।
— — ० ० ० ० ० ०
११

(धृपद) चौताल मात्रा १२; (१, ५, ९, ११ पर ताली)

धा धा दिं ता कि ट धा दिं ता कि ट त क ग दि ग न ।
— — — — ० ० — — — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
१ ५ + ९ ११

एकताल मात्रा १२; (१, ५, ९, ११ पर ताली)

धीं धीं धा गि ति र कि ट तू ना क त्ता धा गि ति र कि ट धी ना ।
— — ० ० ० ० ० ० — — — — ० ० ० ० ० ० — — —
१ ५ + ९ ११

तीनताल (मध्यलय) मात्रा ८; (१, ३, ७ पर ताली)

धा धीं धीं धा धा धीं धीं धा धा तीं तीं ता ता धीं धीं धा ।
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
१ ३ + ७

झपताल मात्रा १०; (१-३-८ पर ताली)

धी ना धी धी ना ती ना धी धी ना ।
— — — — — — — — — —
१ ३ + ८

८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञानीय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

राग-विज्ञान

भाग ६ ठा

राग—मध्यमादि सारंग

इस रागमें गान्धार धैवत वर्जित है। निषाद कोमल है। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते है।

जाति—ओडव, वादी—रिषभ, संवादी—पंचम

समय—दो पहर

राग का मुख्य अंग—नि॒, सा रे म रे, रे म प म॑रे, सा॑नि॒ सा

आरोह—नि॒, सा रे म प, सा॑नि॒ सा

अवरोह—सा॑ नि॒ प म म॑रे, म रे सा॑नि॒ सा

विशेष—यह राग सारंग अंगका है। सारंग राग के अनुसार इसमे भी गान्धार धैवत वर्जित है। इसके पूर्वांगमे 'प रे' और उत्तरांगमे 'नि॒ प', यह स्वर संगति राग-बोधक होती है। इस रागमें शुद्ध निषाद का प्रयोग बहुतसे गुणी-जनों के मतानुसार निषिद्ध माना जाता है। इन रागों का चलन स्पष्टतया लिखना कठिन है। तो भी शास्त्रीय भाग को देखते हुए जितना हो सकता है उतना लिखने का प्रयत्न किया है। पासपासके रागों का विवरण करते हुए भली भांती रागोंके चिजोंको देखकर और आलापोंको देखकर राग स्वरूप का ज्ञात करलेना ठीक होगा।

आलाप

१ सा, रे सुनि॒सा॑नि॒पं, पसा॑नि॒सा॑नि॒सा, पं नि॒ सारे, सा रे सानि॒, पंसा॑नि॒रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२ पं निं सारे, सारेमरे, मरेनिंसा, रे सानिं, पं निं सारे, सानिंरे, सा

३ पं निं सारेमरे, रे मपमरेमरे, म रे सानिं, पं निं सा रेनिं, मरेसा

४ सारेमरे, पमप, म पनिप, नि मपमरे, रे मपमरेममनिंरे, सा

५ सारेममरे, म पनिप, म पसानिंसानिंसा, सानिंरे सा निप, निप, म प नि पमरे, मम रे सा रे सा निंसानिंसा

६ निंसा रे म पनिप, मपसानिंसानिंसा, प नि सा रे, नि सा रे सानिप, नि प म पनिप मरे, रे म प रे मपमरेम मनिंरेसा

७ निंसा रे म पसानिंसानिंसा, प नि सा रे, सारेमरे, रे म पमरे, मरेनिंसा, सारेनिंसानिप, नि प म पनिप, नि प मरे, रे म प निमपमनि प मरे, रे म प मरे, मम रे सा रे सानिंसानिंसा

तान

८ सारेमपनिनिपमरेसा, सारेमपनिसानिपमरेनिंसा, सारेमपनिसा रेरेसानिपमरेसानिंसा, सारेमपनिसारेमरेसानिनिपमरेसानिंसा

९ सारेमपनिनि–पनिनि–पनिनि–पमरेसा, सारेमपनिसारेरे–सारे रे–सारेरे–सानिपमरेसा, सारेमपनिसारेमम–रेमम–रेसानिनि पमरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१० निनिपमरेसा–सासा निनिपम– रेरेसानिपम– ममरेसानिसा–रेरे सानिपम–निनिपमरेसा

११ निनि–पनिनि–पनिनि–पम–रेरे–सारेरे–सारेरे–सानि–मम– रेमम–रेमम–रेसा–रेरे–सारेरे–सारेरे–सानि–सासा–निसा सा–निसासा–निनिपम–निनि–पनिनि–पनिनि–पमरेसा

१२ ममरेसा–निनिपम–रेरेसानि– ममरेसा–रेरेसानि–सासानिप– निनिपम–पपमरे–ममरेसा

१३ मम–रेमम–रेमम–निनि–पनिनि–पनिनि–रेरे–सारेरे–सारेरे– सासा–निसासा–निसासा–निनि–पनिनि–पनिनि–पप–मपप– मपप–मम–रेमम–रेमम–रेसा

१४ सारेरे–रेमम–मपप–पनिनि–निसासा–सारेरे–निसासा–पनिनि– मपप–रेमम–रेसासा

१५ सारे–सारे–मरे–रेम–रेम–पम–पनि–पनि–सानि–सारें–सारें– मरें–निसा–निसा–रेसा–पनि–पनि– सानि–मप–मप–निप– रेम–रेम–पम–सारे–सारे–मरे–निसा

क्र. १ राग–मध्यमादी सारंग, झपताल

आज अंजन दियो राधिका नैन को ॥ ध्रु० ॥ मीन मृग हीन कुल लजत खंजन नरेस अधिक चंचल सुरस श्याम सुख नैन को ॥ १ ॥

सा	ऽ	सा	नि	प	मरे	म	प	नि	प	नि	प	नी	प	मरे	ऽ	रे	म	प	मरे	सा	ऽ
आ		ज	अं	.	ज	न	दि	यो	.	रा	.	धि	का	नै	.	.	न	को	
१		३			+		८			१		३		+			८		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म ऽ म प नि॒ प | नि॒ सां ऽ नि॒ सां सां | सांनि॒ सांनि॒ सां रें ऽ सां सां
मी न मृ ग . ही न कु ल | ल ज त खं ज न
१ ३ + ८ . १ ३ +

रें सां नि॒ प | सांनि॒ सांनि॒ सां नि॒ सां रें मं रें सां रें सां नि॒ प |
न . रे स | अ धि क चं . . . च ल सु . र स |
८ १ ३ + ८

नि॒ प॒नी प नि॒ प | मरे म प नि॒ सां रें सां नि॒ प म प |
इथा . म सु ख नै . न को . . . . . .
१ ३ + ८

क्र. २ राग–मध्यमादी सारंग, (मधमाद) ख्याल; एकताल

अब तौ तेरिय हाथ बिकानी। मृदु बोलन मुसक्यान माधुरी तन मन नैन समानी ॥ ध्रु० ॥ होनी होय सो होय भले ही, तन-मन लगन लगी है ॥ १ ॥

—कवी–ललित किशोरी

रे म ध म रे सा नि॒ सा रे म | नि॒ प प नि॒ प म रे ऽ म सारे सा
अ . ब . तो . . ते रिय | हा . थ बि . का . . . नी
११ १ ५

सांनि॒ सांनि॒ सा मरे म म ऽ मरे रे म प नि॒ सां ऽ नि॒ प ' नि॒ म प |
मृ दु बो . ल न . मुसक्या . . न . मा . धु |
+ ९ ११

सां नि॒ सां सांनि॒ सांनि॒ नि॒ सां रें ऽ रें सां ऽ नि॒ नि॒ प म प ऽ मरे
री . त न म . . न . नै . . . . न
१ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

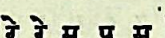

९

॥ अंतरा ॥

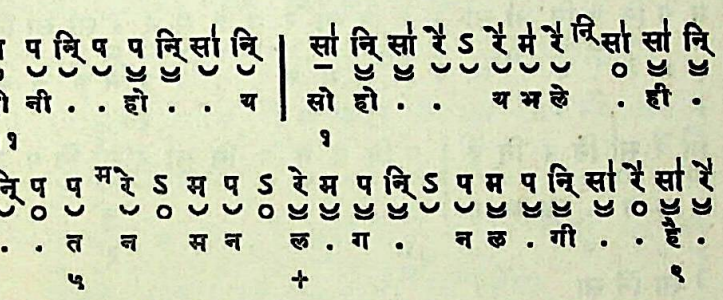

क्र. ३ राग–मध्यमादी सारंग (मधमाद) तीनताल (मध्यलय)

हम न भईं वृन्दावन–रेनु। जिन चरनन डोलत नँदनन्दन नित प्रति चारत धेनु ॥ ध्रु० ॥ हमतें धन्य परम ये द्रुम–बन बालबच्छ अरु धेनु ॥

—कवी–सूरदासजी

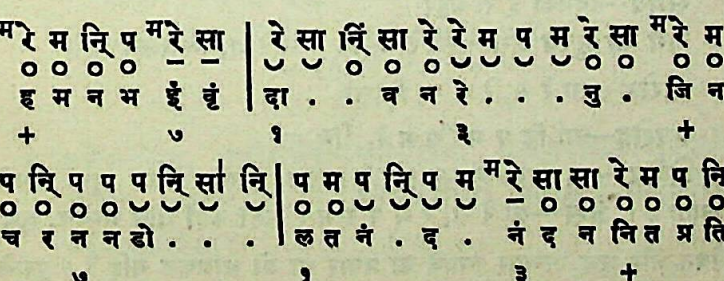

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

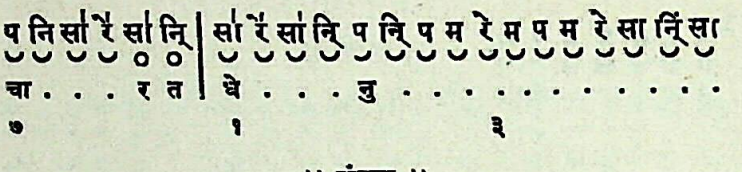

॥ अंतरा ॥

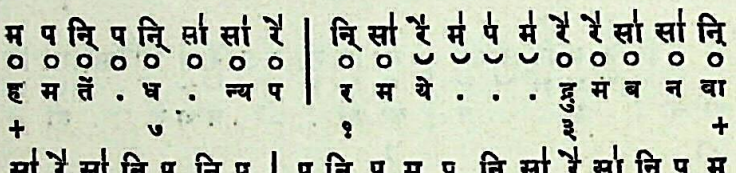

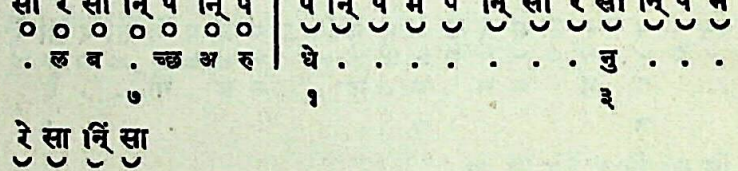

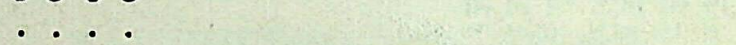

राग—बडहंस-सारंग

इस रागमें दो निषाद लगते हैं, गान्धार और धैवत वर्जित हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—ओडव, वादी—ऋषभ, संवादी—पंचम.

समय—दिनका ३ रा प्रहर

राग का मुख्य अंग—सा रे म, नि प म रे म, नि रे सा

आरोह—सा रे म, रे म प, नि सां

अवरोह—सां नि प म ध प म रे; रे नि सा

विशेष—यह सारंग अंगका राग है। इस रागमें मध्यम मुक्त रूपमे लगता है। जैसे—सा रे म, रे म प रे म। कहीं कहीं तीव्र मध्यम, शुद्ध धैवत और शुद्ध गान्धार लगाने का प्रचार था जो आजकल नहि है। पुराने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

ग्रंथोमे यह सारंग मेल का राग है ऐसा उल्लेख मिलता है। कहीं कहीं वैवत अवरोह मे लेते है। वर्तमान प्रचार के अनुसार चलना ही ठीक है।

आलाप

१ सा, रे सानिं, पंनिं, सा, सारें, रे सा निं, पंनिसा

२ सा, रे सानिं, सारेम, मरे, मम रे निंसा

३ रे सानिं, सारेम, मरेपमप, नि मपमरे, मरेम, रेनिंसा

४ रेरे सानिं, सारेम, रे म पनिप, नि मपमरेम, मरे, मम रे सा रे सानिंसा

५ निं सा रे म पनिप, नि मपमरेम, रे म पनिसानिसा, सारें नि सानिप, निनि प मपमरेम, रे मपमरेममनिंरेसा

६ सा रे म पनिधनीप, नि प म पसा, रेसा, रेमरेसा, सारें निसा निप, निनि प मप, नि प मरे, मरेमरे, मरेनिंसा

७ रेसारेम, निनिप, म प निसानिप, प नि सारें, सा, मरेसा, सारेसा, रें सानिनिमप, निनि प मरे, मरेम, रे सानिंरेसा

८ मरेनिंसा, सानिप, रे म पसा, सारें, सारेम, सारेम, रे म पसा पनिपमरेम, रेपमनिपमरे, मम रे सा रे सानिंसा

तान

९ सारेममरेसा, सारेमपनिनिपमरेमरेसा, सारेमपनिसानिनिपमरे मरेसा, सारेमपनिसारेरेसानिपमरेमरेसा, सारेमपनिसारेमरेसा निनिपमरेमरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१० सारेमपनिनि–पनिनि–पम–रेमम–रेमम–रेसा, सारेमपनिसा रेंरें–सारेंरें–सारेंरें–सानिपम–रेमम–रेमम–रेसा

११ मम–रेमम–रेमम–रेसा, निनि–पनिनि–पनिनि–पम–सासा–निसासा–निसासा–निप, रेंरें–सारेंरें–सारेंरें–सानि–मंमं–रेंमंम–रेंमंम–रेंसा–निनि–पनिनि–पनिनि–पम–मम–रेमम–रेमम–रेसा

१२ मम–रेमम–निनि–पनिनि–रेंरें–सारेंरें–मंमं–रेंमंम–रेंरें–सारेंरें–सासा–निसासा–निनि–पनिनि–पप–मपप–मम-रेमम-रेसा

१३ पनिनि–पनिनि–पमरेसा–सारेंरें–सारेंरें–सानिपम–रेंमंम–रेंमंम–रेंसानिप–पसासा–निसासा–निनिपम–मनिनि–पनिनि–पमरेसा

१४ सासा–रेरे–मम–पप–निनि–सासा–निनि–पप–मम–रेरे-सासा

१५ मम–पप–निनिपम–निनि–सासा–रेंरेंसानि–सासा–रेंरें–मंमं–रेंसा–निनि–सासा–रेंरेंसानि–मम–पप–निनिपम–सासा–रेरे-ममरेसा

१६ निनिपमरेसा–सासानिनिपम–रेंरेंसानिपम–मंमंरेंसानिनि-सासा निनिपम–निनिपमरेसा

१७ ममरेसा–निनिपम–सासानिनि–रेंरेंसासा–मंमंरेंसा–रेंरेंसानि–सासानिप–निनिपम–पपमरे–ममरेसा

१८ सारेरे–रेमम–मपप–पनिनि–निसासा–सारेंरें–रेंमंम–सारेंरें–निसासा–पनिनि–मपप–रेमम–सारेरे–निंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ४ राग–बडहंस-सारंग, ख्याल ताल झुमरा

जाको मन लाग्यो नन्दलालहिं। ताहि और नहि भावे हो ॥ ध्रु० ॥ जैसे सरिता मिले सिन्धुको। बहुरि प्रवाह न आवे हो ॥ १ ॥ ऐसे सूर कमल लोचन ते। पित नहि अनत डुलावे हो ॥ २ ॥ —कवी–सूरदास

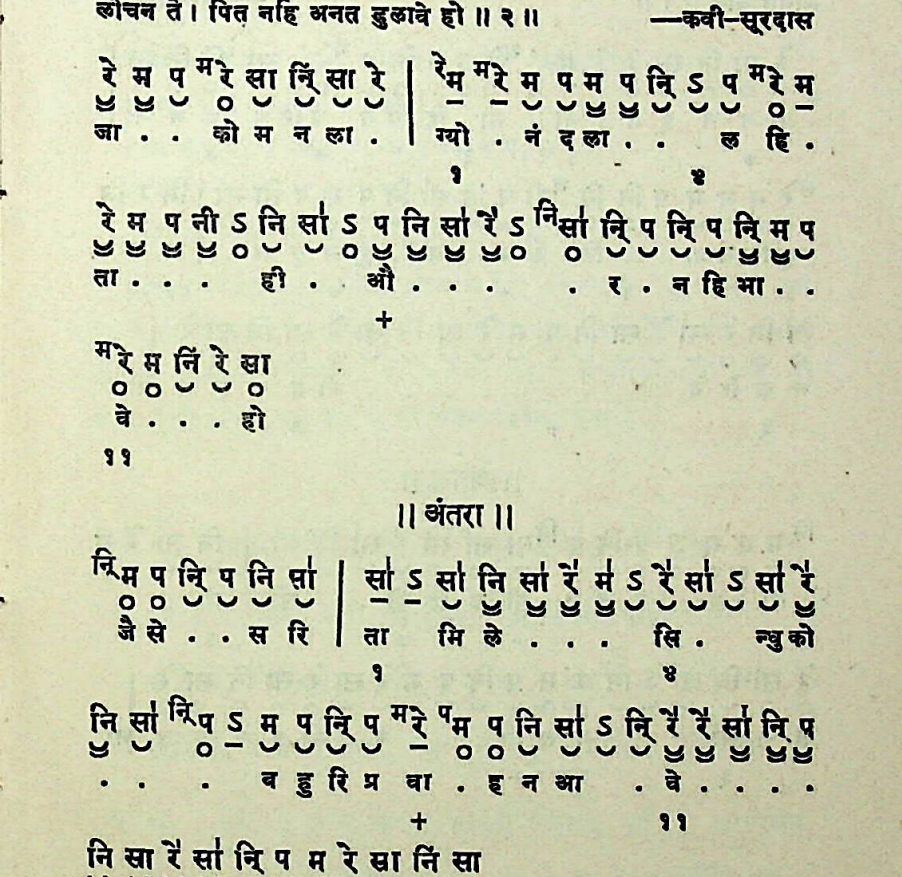
रे म प मरे सा निं सा रे | रेम मरे म प म प नि ऽ प मरे म
जा . . को म न ला . | ग्यो . नं द ला . . ल हि .
१ ४
रे म प नी ऽ नि सां ऽ प नि सां रें ऽ निसां नि प नि प नि म प
ता . . . ही . औ . . . . र . न हि भा . .
+
मरे म निं रे सा
वे . . . हो
११
॥ अंतरा ॥
नि म प नि प नि सां | सां ऽ सां नि सां रें मं ऽ रें सां ऽ सां रें
जै से . . स रि | ता मि ले . . . सि . न्धुको
१ ४
नि सां निप ऽ म प नि प मरे प म प नि सां ऽ नि रें रें सां नि प
. . . व हु रि प्र वा . ह न आ . वे . . . .
+ ११
नि सा रें सां नि प म रे सा निं सा
. . . . . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

क्र. ५ राग–बडहंस-सारंग, तीनताल (मध्यलय)

मोहन इतनो मोहि चित धरिये। जननी दुखित जानिकै कब हूँ। मथुरा गमन न करिये ॥ ध्रु० ॥ बार बार जननी कहि मोसों माखन मांगत जौन ॥ १ ॥ —कवी–सूरदास

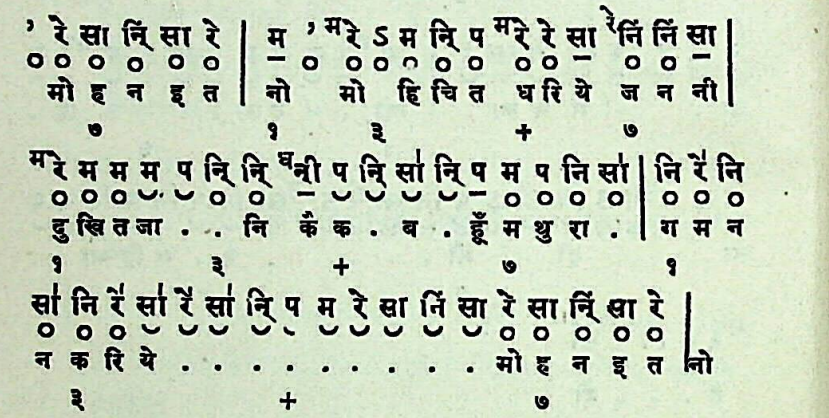

॥ अंतरा ॥

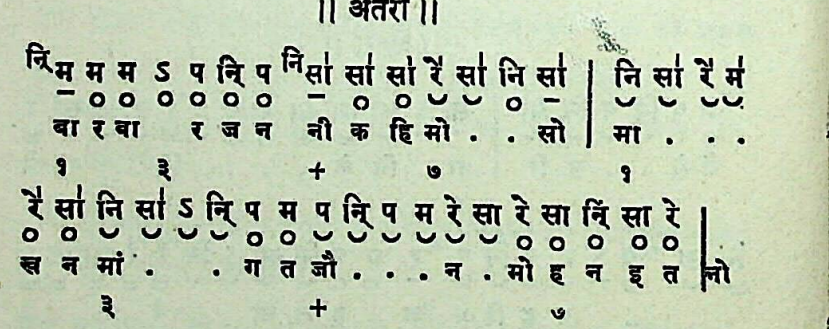

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—सामंत-सारंग

इस राग में गान्धार वर्जित है तथा दो निषाद लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—ओडव-षाडव वादी—ऋषभ संवादी—पंचम

समय—दिन का ३ रा प्रहर

राग का मुख्य अंग—रे म प नि् ध प, म रे

आरोह—सा रे म प नि सां

अवरोह—सां नि् ध प म रे, म रे निं सा

विशेष—यह सारंग अंगका ही राग है। अवरोहमें 'नी ध प' इस प्रकार ही धैवत का उपयोग किया जाता है। इस रागमें देस और सारंग रागोंका मिश्रण है। अन्यथा पूरे रागका चलन सारंगका होते हुवे भी केवल 'नी ध प' इन स्वरोंसे ही अलग दिखाई देता है।

आलाप

१ सा रे सानिंसांनिंसा, निं सा रे सानिंधंपं, पंनींसांनिंसा

२ सा रे सानिंसा, सारे, सारेमरे, निंसानिंधंपं, पंनींसांनिंसा

३ सारेमरे, मरेपमप, प, नि् प म रे, रे मपमरे, सानिंसांनिंसा

४ सारेमरे, रे म पनिधप, पध प म रे, रे मपरेम, मनिंरेसा

५ सा रे मप, रे म प निधप, मपनीसांनिंसा, सां रे सांनिधप, ध प म पनीधप, मनि् प म रे, मम रे सा रे सानिंसांनिंसा

६ सा रे म प नीसांनि् ध प म प नीसांनिंसा, प नि् सां रे, सां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे॑म॑रे॑, म॑म॑ रे॑ नि॒सा॑, सा॑ रे॑ सा॑ नि॒ ध प म पनीसा॑नि॒धप, म प नि॒धपमरे, रे॒ म प रे॒ मप^{म}रे, मरेनि॒सा

७ मरेनि॒सा, प^{म}रे, नीधप, म^{घ}पमरे, सा॑नि॒धप, रे॑$^{नि}$सा॑, म॑ रे॑, प॑, म॑ रे॑, प^{म}रे, रे॒ म प नि॒ सा॑ रे॑, सा॑नि॒धप, मनि॒ प मरे, प^{म}रे, म^{म}निरेसा

८ मम॒ रे॒ नि॒सा, नि॒नि॒ प म॒ रे, सा॑सा॑ नि॒ धप, रे॑ रे॑ सा॑ नि॒सा॑, म॑म॑ रे॑, रे॑ रे॑सा॑नि॒धप, नि॒नि॒धपमरे, मम॒ रे॒ सा रे॒ सानिंसा

९ पम॒ रे॒ म प नीध॒ प म पनीसा॑ नि॒ ध प म प नि मा॑, रे॑, सा॑ नि॒ ध प म प सा॑ नि॒ ध प म प नीध॒ प म रे॒ मप, म॒ रे॒ सा॒ रे॒म, रे॒ सा॒निंसा

तान

१० निंसारेमरेसानिंसा, निंसारेमपमरेसा, नींसारेमपनि॒धपमरेनिंसा, निंसारेमपनिसा॑नि॒धपमरेनिंसा, निंसारेमपनिसा॑रे॑सा॑नि॒धपमरेनिंसा, निंसारेमपनिसा॑रे॑म॑ रे॑सा॑नि॒धपमरेनिंसा

११ निंसारेमपनि॒नि॒–पनि॒नि॒धपमरेनिंसा, निंसारेमपनिसा॑सा॑– निसा॑सा॑–नि॒धपमरेसा, निंसारेमपनिसा॑रे॑ रे॑–सा॑ रे॑ रे॑–सा॑नि॒धपममरेसा

१२ रेमम–रेमम– रेसा– पनि॒नि॒– पनि॒नि॒– धप– निरे॑रे॑– सा॑रे॑रे॑– सा॑नि॒– रे॑म॑म॑– रे॑म॑म॑– रे॑सा॑–निरे॑रे॑–सा॑ रे॑ रे॑– सा॑नि॒– पनि॒नि॒– पनि॒नि॒–धप–मपप–मपप–मरे–रेमम–रेमम–रेसा

१३ रेमम–रेसा–पनि॒नि॒–धप–निरे॑ रे॑–सा॑नि॒– रे॑म॑म॑– रे॑सा॑–निरे॑रे॑-सा॑नि॒–पनि॒नि॒–धप–मपप–मरे–रेमम–रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१४ सारे–सारे–मरे–रेम–रेम–पम– मप– मप– नि्प– पनि्–पनि्–सांनि्–निसां–निसां–रेंसां–पनि–पनि्–धप–मप–मधपम, रेम–रेमपमरेसा

१५ पमरेसांनिंसा–नि्धपमरेम–सांनि्धपमप–रेंसांनि्धपम– मंरेंसां-नि्धप–रेंसांनि्धपम–नि्धपमरेम–पमरेसांनिंसा

रू. ६ राग–सामन्त-सारंग, ख्याल; एकताल

आज दिवस लेऊँ बलिहारा। मेरे घर आया राम का प्यारा ॥ ध्रु० ॥
कथा कहैं अरु अर्थ विचारैं। आप तरैं औरन को तारैं ॥ १ ॥

कवी–रैदास

नि् म प म रे सा रें निं सा म रे | म प ड प म प नि् ध प ड नि् नि्
आ . . ज दि व स ले | ऊँ . ब लि हा . रा . मे .
११ १

प म प ड म रे म रे प म रे सा म रे | म प नि सां रें निं सां नि् ध प म
. . . रे घ र आ या रा . म का . . . प्या . रा .
५ + ९

॥ अंतरा ॥

म प नि् प नी सां निं सां सां | सां नि सां रें रें सां ' सां सां रें नि
क था . . क हैं . अ | रु अ . . थं . वि चा . .
११ १

सां नि् प ड नि सां रें मं रें निं सां ड सां रें नि सां ड नि् ध प म
. रैं . आ . प त रैं . औ . . . र न को .
५ +

नि् म प म रे म निं रे सा
ता . . . . . रैं
९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ७ राग–सामन्त सारंग, तीनताल (मध्यलय)

मदन गुपाल, सरन तेरी आयो। चरन कमल की सरन दीजिये, चेरौ करि राखौ घर जायो ॥ टे० ॥ धनि-धनि चरन चलत तीरथको, धनि गुरुजन हरिनाम सुनायो ॥ १ ॥ कवी–श्रीभट्ट

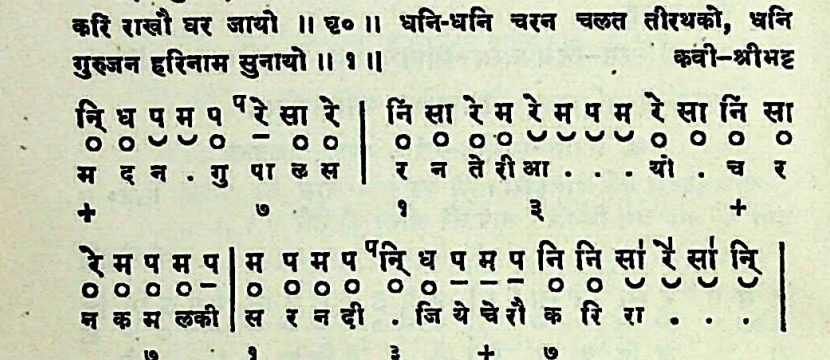

॥ अंतरा ॥

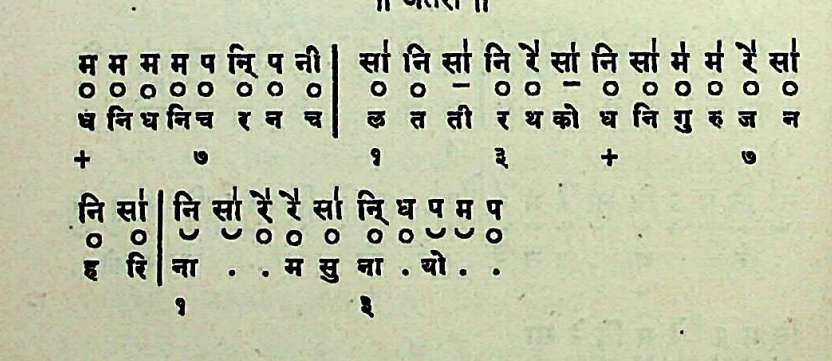

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—लंकादहन-सारंग

इस राग में दो निषाद लगते हैं और अवरोहमें शुद्ध धैवत और कोमल गान्धार वक्र रूपसे लगते हैं।

जाति—ओडव-संपूर्ण वादी—ऋषभ संवादी—पंचम

समय—दिन का ३ रा प्रहर

राग का मुख्य अंग—सा॑ध नि॒ प, म॒ग् म रे सा

आरोह—सा रे म प, नि॒ प, नी सां

अवरोह—सां सा॑ध नि॒ प, म प म॒ग् म॒ग् म रे सा

विशेष—यह राग सारंग अंगका है। इसमे सारंग रागका ही प्राधान्य अधिक होता है, केवल अवरोह में ही शुद्ध धैवत और कोमल गान्धार का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'सां ध नि॒ प म प म॒ग् म॒ग् म रे सा' इन स्वरोंसे ही यह राग सारंग से भिन्न होता है।

आलाप

१ सानि॒पं, पं॑सा॑नि॒सा, सारे, मप, म॒ग्मरे, पमरे, सा

२ सारेमरे, मरेसा, रेप, नि॒धनि॒प, मप म॒ग्म, पमरे, सा

३ सारेमरे, मपनि॒प, नी, सां, सां, नि॒ सां रें, मं रेंसां, नि॒ सां रें सांनि॒प, म॒ पसांधनि॒पमप म॒ग् म॒ग् मरेसा

४ सा रे म पनि॒प, म॒ पनि॒ सां॑निसां, प॒ नि॒ सां रें, मं रेंसां, सां सां॑धनि॒प, म॒ग् म रेंसां, रेंम रेंप, रेंमरेंसां, नि॒ सां रें सांधनि॒प, म॒ प॒ नि॒ प॒ म॒रे, सा॒ नि॒ सा रे, म॒ग्, मरे, सा॑रेसा

५ मरेसा, म॒रेप, नि॒धनि॒प, म॒ पसांधनि॒प, म॒ प॒ नि॒ प॒ म॒ग् म, प॒ मरे, सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६ म, मप, म प नि् प^{म}रे, मपनि, निसां, रेसां, धनि्प, म प नि् प^{म}रे, रेमरेप, म पसां, नि्प, नि् प म रे, ^{म}ग्मरे, सा

७ ^{म}गमरेसा, $^{सा}$धनि्प, ^{प}रेसां, ^{म}ग्मरेसां, ^{म}ग्मरेसा$^{सा}$रेसां$^{सा}$धनीप, नि्नि् प मप, ^{म}ग्मरेसा

८ सासां$^{सा}$धनीप, नि्परें, मरेसां, $^{मे}$रेमरेप, ^{म}ग्मरेसां, मम रे नि सां, नि सां रे सां$^{सा}$धनीप, नि् मप^{म}रे, ^{म}ग्मरेसा

तान

९ सारेममरेसा, सारेमपनि्धनि्पमपगमरेसा, सारेमपनिसांधनि्पमपग्मरेसा, सारेमपनिसांरेसांधनि्पमपग्मरेसा

१० ग्मम–ग्ममरेसा–पनि्नि्–पनि्नि्–पम–सां रे रे-सां रे रे-सांनि्-धनि्नि्–पनि्नि्–पम–गमम–ग्मम–रेसा

११ रेरेसासा–गमरेसा–धनि्पम–रेरेनिसां–गमरेसां– निसांरेसां–धनि्पम–नि्नि्पमग्मरेसा

१२ सारेमम–ग्मम–ग्मम–रेसा–सारेमपनीनी–धनीनी-पधध-मपप-ग्मम–रेसा–सारेमपनिसांरे रे–सां रे रे– सां रे रे– नीसांसां–धनीनी–पधध–मपप–ग्मम–रेसा

१३ मममम–रेमपम–ग्मरेसा–नीनीनीनी–धनीपमप–ग्मरेसा–रे रे रे रे–सां रेसांनि्–धनीपमप–ग्मरेसा

१४ रेमम–रेमम–पनीनी–पनीनी–नि रे रे-सां रे रे-रेमम-सां रे रे-नीसांसां–धनीनी–पधध–मपप–ग्मम–रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ८ राग–लंकादहन-सारंग, ख्याल; एकताल

दीन दयाल दिवाकर देवा। कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥ ध्रु० ॥
हिम तम करी के हरि करमाली। दहन दोष दुख दुरित रुजाली ॥ १ ॥

कवी–तुलसीदास

रे नि सा रे प | म रे ऽ रे रे म म रे सा रे सा नि ऽ सा सा सा
दी . न द | या ल दि वा . . . . . क र
१ ५

नि सा म रे म रे ' रे म प नि ऽ ध | नि प ऽ म म प नी ऽ सां नि
दे वा . . क र मु नि . | . . म नु ज . सु
+ ९ ११ १ ५

सां नि सां नि सां नि प म गु म सा रे सा रे नि सा रे नि सा रे प | म रे ऽ
रा . . सु र से . . वा . दी . न द | या
+ ९ ११ १

रे रे म म रे सा रे सा नि ऽ सा सा सा ऽ ऽ
ल दि वा . . . . . क र
५ +

॥ अंतरा ॥

म म प प सां नि नि ऽ सां सां नि सां सां | सां ' नि सां नि सां रे
हि म त म क री . के . ह | रि क र मा . .
९ ११ १

म ऽ रे नि सां नि रे सां रे नि सां सां सां ध नि प नि म म प सां सां
. ली . द ह न दो . ष दु . ख दु रि त रु जा
५ + ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मग् म रे सा रेनिं सा रेनिं सा रे प |
० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ |
. . . ली . . दी . न द | याल
११

क्र. ९ राग–लंकादहन-सारंग, तीनताल (मध्यलय)

मन मोहन सम सुंदर को है। मैं अपने अनुमान कहूँ अब उनकी पटतर और न सोहैं ॥ धृ० ॥ चितवन चपल रूप उजियारो जाकों मुख नित चंदहू जो है। नारायण जो एक दृष्टिमें सुर नर नाग सकल को मोहै ॥ १ ॥

नि् नि् प म रे म प सां | निध नि् प म प नि् प मरे म ' म प
० ० ० ० ० ० ० ० | – ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ०
म न मो . ह न स म | सुं द र को . . . है . मैं अ
+ ७ १ ३ +

म प सां नि् प | मग् मग् म मरे सा सा निं सा मरे म प नि् म प |
० ० ० ० ० | – ० ० – ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
प ने . अ नु | मा न क हूं अ ब उ न की . प ट त र |
७ १ ३ + ७

प नि सां रें सां रें सां रें सां नि् प म
◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ०
औ . . . र न सो . . . है .
१ ३

॥ अंतरा ॥

म म म म प प प नि् | ऽ प नि नि नि सां सां रेंनि सां मंरें मं रें
० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० – ० ० ० ० ०
चि त व न च प ल रू | प उ जि या . रो जा . को . मु
+ ७ १ ३ + ७

रें सां सां | रेंनि सां रें रेंध नि् प ' प रें रें रें सां | सांध नि् प प
० ० ० | – ० ० ० ० – ० ० – ० ० – | ० ० ० ०
ख नि त | चं द हू जो . है ना रा य ण जो | ए . क दृ
१ ३ + ७ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म नि॒ प म॒ रे निं सा रे म प नि सां रें | सां रें सां रें सां नि॒
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ०
. ष्टि में सु र न र ना . ग स | क ल को . . .
३ ७ १

प नि॒ प म रे म
० ० ० ० ० ०
मो . . . है .
३

क्र. १० राग–लंकादहन-सारंग, (दीनका दीपक) झपताल

उमंड धुंद दल साजे दशरथ सुत राम जब पद्म दशकोट कपि कोप धाये ॥ धृ० ॥ लंक चहूं ओर ते बिकल धनु टंकसो लंक गढे बंकको चढत पाये ॥ १ ॥ श्रीमान् बाबू उमाशंकर प्रसाद जी के संग्रहसे, मुझफ्फरपूर

सा | रे रे सा ऽ सा सा सा रेनिं सा सा | रेनिं सा मरे म रेरेनिं सा
उ | मं ड धुं द द ल सा . जे | द श र . थ सु त
१ ३ + ८ १ ३ +

पं नीं ऽ पं | निं सा रे रे रे रे रे मगु म प | मगु म मरे ऽ सा रे सा
रा म | ज ब प द म द श को . ट | क पि को प धा .
८ १ ३ + ८ १ ३ +

रे निं सा सा |
० ०
. . थो उ | मंड
८

॥ अंतरा ॥

सां ऽ सां नि॒ प नि सां रें सां ऽ | सां रें रें सां सां नि॒ प नी॒ नी॒
लं क च हूं ओ . र ते | बि क ल ध नु टं ० ० क
१ ३ + ८ १ ३ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| | | |

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

३ सा रे म पनिप, ध प मरे, सानिपमरे, मपनिधसा, सा रेसा, निधनिप, म प नि प मरे, रे मपमरे, निसानिधसा

४ सानिसानिधनिधनिप, निधनिधनीसा, मरे, मपनिधनिधनिप, मपधनिधसा, रेसा, मरेसा, सारेनिसानिधनीप, साधनिधनिप, मपमरे, मरेनिसा

५ सानिधनिधनीप, मपनीसानिधसा, सा रेम रे, सारेमरे, सानी धसा, साधनीप, म नि म प, मरेमरेनिसा

६ सा रे म प निसा, ध नि प म रे म प नीसा, प नि सा रे नि सा रे, नि सा रे म रे, पमरे, म म रे निसा, साधनीप, म प नि सा रे, निसासाधनिप, निनि प म रे, ममरेनिसा

तान

७ सासारेरेनिंसा, रेमपमरेसा, सारेमपधनिपममरेसा, सारेमपनिसा धनिपमपममरेसा

८ ममरेसा–धंनिंपंमंपंनिंसा, रेमम–रेसासा–रेमम–मपप–पनिनि-निसासा–धनिनि–पधध–मपप–रेमम–रेसासा

९ मम–रेमम–रेमम–रेसानिंसा, निनि–धनिनि– पधध– मपप– रेमम–रेसासा–निंधंनिंसा

१० सारेरे–रेमम–रेसानिंसा, धनिनि–पधध–पम–सा रे रे-सा रे रे-सानि–रेमम–रेमम रेसा, धनिनि–पधध–पम– रेमम– रेमम– रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११ पपमरे–ममरेसा–नि्धनि्प– मपमरे– निनिसासा– धनि्प–रे रे निसा–मं मं रेसा–धनि्पमपममरेसा

१२ रेमपमरेसा–साधनि्पमप–रे रेसानि्पनि्–मं मं रेसानिसा–साध नि्पमप–नि्नि्पमरेम–रेमपमरेसा

१३ मम–रेमम–रेमम– नि्नि्– पनिनि्– पनि्नि्–रे रे– सा रे रे– सा रे रे–नीसासा–धनि्प–मपप–रेमम–रेसासा

१४ नि्नि्पमरेसा–साधनि्पमप–रे रेसानि्पनि्–मं मं रेसा–साधनि्प-नि्पमरे–ममरेसा

१५ रेमम–रेमम–रेमपमरेसा–पनि्नि्-पनिनि्-साधनि्पमप-सा रे रे-सा रे रे–मं मं रेसानिसा–पनि्नि्–पसासा– साधनि्पमप– रेमम– रेमम–रेमपमरेसा

क. ११ राग–तानसेनी-सारंग, (मिया की सारंग) ख्याल; एकताल झुमरा

राधा-वल्लभ मेरौ प्यारौ। सरबो परी सबहीको ठाकुर, सब सुखदानि हमारौ ॥ धृ० ॥ स्याम कमल-दल-लोचन-मोचन, दुख नैननको तारौ ॥१॥

कवी–श्री. व्यासजी

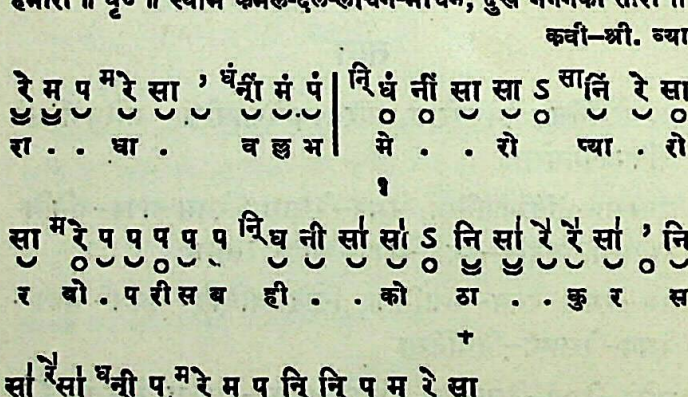

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

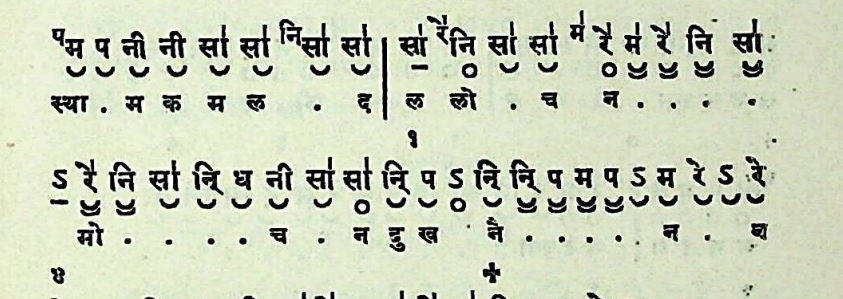

क्र. १२ राग—तानसेनी-सारंग, तीनताल (मध्यलय)

मो मन गिरिधर छबि पै अटक्यो। ललित त्रिभंग चालपै चलिकै, चिबुक चारु गड़ि ठटक्यो ॥ धृ० ॥ सजल श्याम घन बरन लीन ह्वै, फिरि चित अनत न भटक्यो ॥ १ ॥ कवी—कृष्णदास

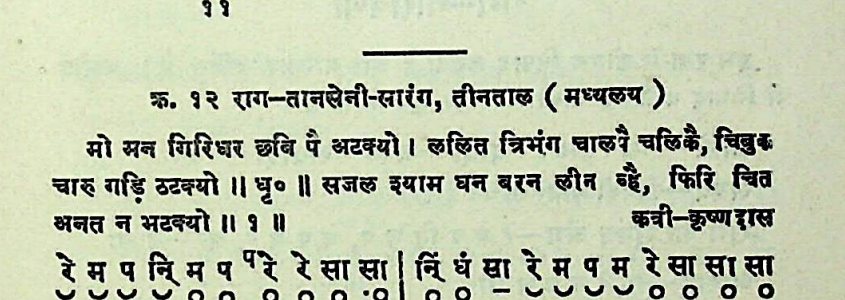
रे म प नि म प प रे रे सा सा | निं धं सा रे म प म रे सा सा सा
मो . . . म न गि रि ध र | छ वि पै अ . ट . क्यो . ल लि
+ ७ १ ३ +
म रे प प रे म | प नि प म रे रे म प म रे सा निं सा सा मं रे
त चि भंग चा . | . . ल पै . च लि . कै . चि बु क चा
७ १ ३ +
म प नि ध नी | सां रें सां नि ध ध नि प म नि प म रे सा
रु ग डि | ठ ट क्यो . . . . . .
७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

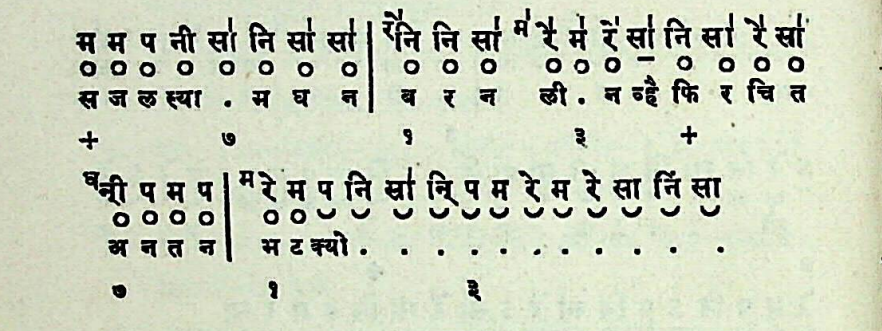
म म प नी सां नि सां सां | रें नि नि सां | मं रे मं रे सां नि सां रे सां
० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० | ० ० ० — ० ० ० ०
स ज ल स्था . म घ न | ब र न | ली . न व्है फि र चि त
+ ७ १ ३ +
घ नी प म प | म रे म प नि सां नि प म रे म रे सा निं सा
० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
अ न त न | भ ट क्यो . . . . . .
७ १ ३

राग—नारायणी

इस राग में कोमल निषाद लगता है और गान्धार वर्जित है। आरोह में निषाद वर्जित है बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—ओडव-षाडव वादी—ऋषभ संवादी—पंचम

समय—दिनको गाना उचित है।

राग का मुख्य अंग—रे म प नि् ध प, ध प म रे, सा सांधं सा

आरोह—सा रे म प ध सां

अवरोह—सां नि् ध प म रे सा, नि् धं सा

विशेष—यह राग दाक्षिणात्य-पद्धति के ग्रन्थों में से अपने विद्वानों ने प्रचार में लाया है। यह राग भी सारंग अंग का ही मानना उचित है। इस में गान्धार वर्जित है और निषाद आरोह में वर्जित होने से सारंग का पूर्ण भास होता है। यह राग गाते समय सूर-मल्हार का भास बहुत होता है और उससे बचकर गाने के लिये आरोहावरोह देखकर गानेसे ही खुल-भता आती है। आरोह में निषाद कोमल वर्जित करना ही चाहिये। जब कोमल निषाद लिया जाएगा तब उसी समय अवरोह ही करना चाहिये उसी समय सूर-मल्हार को बचाकर गाने में भी कुशलता है। यह राग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रात्री को गाने का प्रचार है परन्तु सम्पादक के मतानुसार यह राग सारंग के साथ में दोपहर को ही गाना चाहिये। यह राग दाक्षिणात्य होने से दाक्षिणात्य पद्धति में राग समय मानने का प्रचार बहुत कम है। वहाँ थाट के अनुसार गाने का प्रचार है।

आलाप

१ सा$^{सा}$धंसा, सारे, सारेमरे, सा$^{सा}$धंसा

२ सारेमरे, रेमप, पम ध प म रे, रे म प^{म}रे, म रे सानिं, धंसा

३ सारेमरे, मप, म प निधप, म ध प म रे, रे म प म रे, सानिंधंसा

४ सारेमप, मपनिधप, म प धसानिधप, निनि प मप,^{म}रे,रे म प ^{म}रे, मरेसा, निंधंसा

५ सा रे म प निधप, म प धसा, $^{सा}$नि$^{सा}$निधसा, ध सा रे, सा निधप ध प म रे म प निधप, ध प म रे, म म रे सा रेमरे, मरेसानिंधंसा

६ सा रे म प धसानिधसा, साध सा रे मं रे, रे मं पं मं रेसा, $^{सा}$धसा, धसाध सा रे सानीधप, म प ध सा ध धसानिधप, ध मप^{म}रे, मरेसानिंधंसा

७ निंधंसा, मरे, प म रे, नीधप, सा रे सानीधप, रे, मं रे निसा रे सानीधप, धध प म रे, मम रे सानिंधसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तान

८ सारेमरेसा, सारेमपममरेसा, सारेमपनीधपमरेसा, सारेमपधसा निधपमरेसा, सारेमपधसारेंसानिधपमरेसा, सारेमपधसा रेंमं रेंसा निधपमरेसा

९ सारेमपमरे– रेमपनिधप– मपधसानिध-धसारेंसानिध-पनिधपमरे-रेमपमरेसा

१० रेमपमरेसा–पधसानिधप–धसारेंमं रेंसा–रेंसानिधपम– सानिधप मरे–निधपमरेसा

११ सारेम– रेमप–मपध–पधसा–धसा रें–रेंसानि–सानिध– निधप– धपम–पमरे–मरेसा

१२ सारेमम– रेमपप–मपधध–पधसासा–धसा रें रें–सा रेंमं–मं रें सासा–रेंसानिध–सानिधप–निधपम–धपमरे–पमरेसा

१३ सारेसारेमरे– रेमरेमपम–मपमपधप–धसाधसारेंसा-सा रेंसारेंमरे-रेंमरेंसानिध–पनिधपमरे–मधपमरेसा

१४ रेमरेमपमरेसा–पधपधसानिधप–धसाधसारेंसानिध– सा रेंसा रें मंमं रेंसा–रेंमं रेंमं रेंसानिध–धसाधरेंसानिधप– मपमनिधपमरे– रेमरेपममरेसा

क्र. १३ राग–नारायणी, ख्याल; एकताल

है हरितें हरिनाम बड़ेरो। ताकों मूढ़ करत कत झेरो ॥ ध्रु० ॥ सुत हित नाम अजामिल लीनों, या भवमें न कियो फिरि फेरो ॥ १ ॥

कवी–गदाधरभट्ट

रे	म	प	नि	म	प	मरे	म	'	प	नि	ध	प	ऽ	म	ध	प	म	रे	ऽ	मरे					
ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	ु	०	ु					
है	.	.	.	ह	रि	तें	.		ह	रि	ना	.		म	ब		ड़े	.		रो					
११											१														

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा ऽ सानिं धं साधं सा ' सा रे म ऽ रे मरे म पम प ऽ म प ध
⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣
. ता . को . मू . . ढ़ क र त . क त झे
५ +

सां ऽ रें सांनि ध प म ध प म रे
⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ०
. . रो . . . . . .
९

॥ अंतरा ॥

म प ध सां ऽ नि ध | सां ऽ सां सां ध सां रें मं ऽ रें सां रें सां
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ | ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
सु त हि त . . | ना म अ जा . . . मि ल ली .
११ १

नि ध प ऽ मरे म प नि ध प ऽ म ध प म रे ऽ मरे म प सां ऽ
⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ०
. नो . या . भ व में . न कि . यो . फि रि फे .
५ +

सांप नि ध प मरे म सारे सा
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
. . रो . . . . .
९

क्र. १४ राग—नारायणी, तीनताल (मध्यलय)

युगल छबि आज अनूप बनी। गोरे श्याम साँवरी राधा नख शिखद्युति कमनी ॥ धृ० ॥ खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन रेख अनी। ललित किशोरी लाल रसिकवर मृदु मुसक्यान घनी ॥ १ ॥

' सा मरे पम प नि | ध प प नि प मरे म प मरे सा रे म प म रे
० ० ० ० ० ० | ० ० ० ⌣ ⌣ – ० ० – – ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ०
यु ग ल छ बि | आ . ज अ . नू प ब नी . गो . . . रे
७ १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा | ऽ सा मरे म प ऽ म प सां नि ध प म प ध सां | सां रें सां
० | ० ० — ० ० ०

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—जैज-बिलावल

इस रागमें दो निषाद लगते है। बाकी के सब स्वर शुद्ध लगते है।

जाति—ओडव-संपूर्ण वादी—रिषभ संवादी—पंचम

समय—रात्रीको

राग का मुख्य अंग—रे ग म प, ध म ग रे, प म ग ^{म}रे, ग रे सा

आरोह—सा रे ग म ग रे, म ध नि सां अथवा—सा रे ग म ग रे, म प नि सां

अवरोह—सां नि् ध प म ग रे, रे ग ^{म}रे सा

विशेष—यह राग जैजैवंती और बिलावल इन रागों के मेल से हुआ है। यह राग प्रचार में बहुत कम है। पूर्वांग में बिलावल और उत्तरांग में जैजैवती इस प्रकार इस राग का चलन होता है। विशेषतः ऋषभ पर प्राधान्य दिया जाता है; जैसे—रे रे ग प म रे सा निं सा रे प प म ग रे—इस प्रकार। ग प नी ध नी सां सां ध नी प प ध प म ग रे—इस प्रकार उत्तरांग में। पूर्वांग और उत्तरांग देखनेसे इस राग का चलन स्पष्ट हो जाता है। जैजैवंती का गान्धार कोमल इसमे नहि लगाना चाहिये। 'रे ग् रे सा' ऐसा स्वर समूह इस रागमें न होते हुए भी जैजैवंती राग पं रे, रे ग म ग रे, रे प म ग रे, म प ध म ग रे, इन स्वरोंसे ही प्रगट होता है। तबही जैजैवंती के साथमे बिलावल का मेल हो सकता है। देस अंग गानेमे जादा दीख पडेगा। नीचे दिये हुए निम्न लिखित आलापों से राग-ज्ञान ठीक ध्यानमे आयगा।

आलाप

१ सा $^{सा}$धंनिंरे, रेगमगरे, ग ^{म}रेसा, सारे, रेगगमगरे, रेगपमगरे, ^{ग}निं सा

२ सारे, रेगमप, पधमगरे, गप, धनीधप, धमगरे, रेगमगरे, ^{ग}निंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३ रे ग म पधमगरे, मपनी$^{सां}$नीसां, सांनिधप, धगऽमपमगरे, रे गमगरे, ग^{म}रे^{ग}रेसा

४ सा रे म पनीधप, धगऽमगरे, मपनी$^{सां}$नीसां, सांरे, सां रे ग मगरे, ग^{म}निसां, सांरेंनिधप, पधपमगरे, गपमगरे, मगरे, ग^{म}निंसा

५ धं निं सा रे गमगरे, ग मनीधप, ग म ध निंसां$^{सां}$धनिं रे, सां$^{गं}$रेंगमगरे, ग^{म}रेसां, सां$^{सां}$धनीधप, परेऽरे, गमपमग^{म}रेसा

६ ग^{म}रे, पमग^{म}रे, नीधप, धमगरे, सां$^{सां}$निधप, प^{ध}रे, गमगं^{म}रे, गमग^{म}रे, नीधप, पध^{ध}गमगरे, रे गम^{प}ग^{म}रे, ग^{म}रेसा

तान

७ सारेनिंसा, सारेगरेनिंसा, सारेगमगरेगरेनिंसा, सारेगपमगरेगरेसा, सारेमपधपमगरेगरेसा, सारेमपनिधपमगरेगरेनिंसा, गमधनिंसां निधपमगरेगरेसा, गमधनिंसांरेंसांनिधपधनिधपमगरेसा, सारेमप निंसांरेंगमगरेंसांनिधपमगरेगरेनिंसा

८ गपमग–रेंगरेसा–मनिधप–मधपम–सांरेंसांनि–धनिधप–निंरेंसां नि–गमगरें–निरेंसांनि– धनिधप – मधपम – गमगरे – गपमग – रेगरेसा

९ गमगग–मगरेसा –धनिधध – निधपम – सांरेंनिसां –रेंसांनिध– गमगग–मगरेंसां– सांरेंनिसां –रेंसांनिध – धनिधध – निधपम– पधमप–धपमग– रेगरेरे–गमगरे– रेगरेरे–गगरेसा

१० सारेगमगरे-रेगमपमग-गमधनिधप-मग^{ध}निंसांनिध -धनिंसांरेंसांनि-सांरेंगमगरें–धनिंरेंसांनिध–पधनिधपम–गमपमगरे–रेगमगरेसा

११ सारेरे–रेगग–गमम–मपप–पनिनि–निंसांसां–सांरेंरें–निंसांसां-धनिंनिं–पधध–मपप–गमम– रेगग– रेसासा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. १५ राग—जैज-बिलावल झपताल

ज्ञान रंग ध्यान रंग और विज्ञान रंग मनरंगे शुभ अंग जनमन रंगेरी ॥ अं० ॥ प्रथम रामकृष्ण रंगे रहीम करीम रंगे घट घट ब्रह्मरंगे रोम रोम तन अंग हरि रंग रंगेरी ॥ संचारी ॥ जपरंगे तपरंगे नेमव्रत धर्मरंगे अज गर धनरंगे ॥ अभोग ॥ जीवजंतु पशु पक्षि बंधु सुर असुर रंगे सुरनर मुनिरंगे बैजुरंगे और कृष्ण रंग रंगेरी ॥ १ ॥

संग्रहकारः—श्रीमान् बाबू उमा शंकरप्रसाद जी के संग्रहसे मुझफ्फरपूर

ग रे ऽ रे ग प ग ऽ म रे सा निं सा | म रे ऽ म ऽ म प ऽ प प प |
ज्ञा न रं ग ध्या . न रं ग | औ र वि ज्ञा न रं ग |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

म प ध प म ग म ग रे सा ग रे ग रे | ग रे ग म प ध प म ग ऽ म
म न रं गे . शु भ अं . ग | ज न म न रं गे . . .
१ ३ + ८ १ ३ +

ग रे सा निं सा |
री . . |
८

॥ अंतरा ॥

म म प नि् प नि नि सां सां ऽ | प प नि सां रें सां नि् ध प ऽ |
प्र थ म रा म कृ ष्ण रं गे | र ही म . क री म रं गे |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

प प म ग रे ग म म प प ऽ | नि नि नि ऽ नि सां सां प प नि् ऽ प |
घ ट घ . . ट ब्र ह्म रं गे | रो म रो म त न अं . ग |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे ग म प ध ग S म ग रे सा निं सा |
ह रि रं ग रं गे . री . . |
१ ३ + ८

॥ संचारी ॥

म रे म म S प प प प S | नि नि सा S रें सा नि् नि् ध प S |
ज प रं गे त प रं गे | वें म व्र त ध मैं रं गे |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

म म म ग रे ग म म प प S |
अ ज ग . . र ध न रं गे |
१ ३ + ८

॥ अभोग ॥

म म प नि् प नि नि सां S सां | नि सां रें सां निं सां सां नि् ध प S |
जी व जं . तु प शु प क्षी | बं धु सु र अ सु र रं गे |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

प प म ग रे ग म म प प S | प S नि सां सां सां प S नि् S प |
सु र न . . र सु नि रं गे | बै जु . रं गे . औ र |
१ ३ + ८ १ ३ + ८

ग रे ग म प ध प म ग S म ग रे सा निं सा |
कृ ष्ण रं ग रं गे . . . री . . |
१ ३ + ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. १६ राग–जैज-बिलावल तीनताल (मध्यलय)

दिन दिन प्रीति अधिक मोही हरिकी। कामक्रोध जंजाल भसम भयो, बिरह–अगिन लगि धधकी ॥ ध्रु० ॥ झरि-झरि परत अंगार अधर 'थारी' चढ़ि अकास आगे सरकी ॥ १ ॥

—कवि–थारीसाहेब

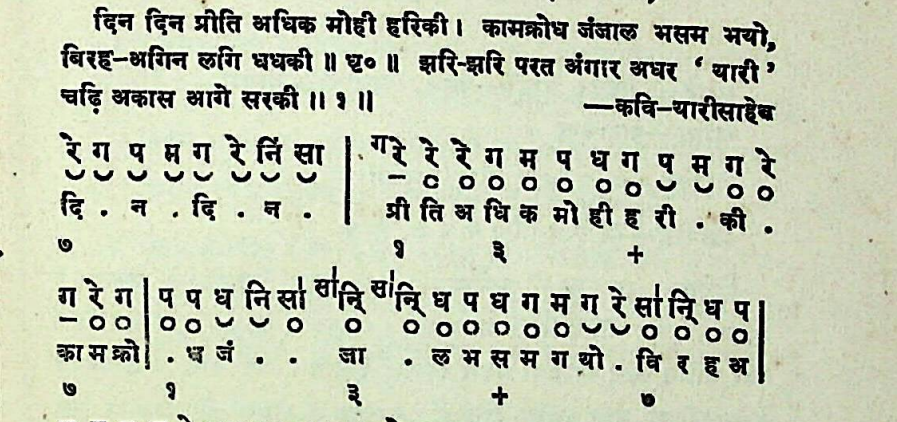
रे ग प म ग रे नि सा | ग रे रे रे ग म प ध ग प म ग रे
दि . न . दि . न . | प्री ति अ धि क मो ही ह री . की .
७ १ ३ +
ग रे ग | प प ध नि सां सां नि सां नि ध प ध ग म ग रे सां नि ध प |
का म क्रो | . ध जं . . जा . ल भ स म ग थो . वि र ह अ |
७ १ ३ + ७
ध ग म ग रे म प ध ग म ग रे सा
गि न ल गी . ध ध की . . . . .
१ ३ +

॥ अंतरा ॥

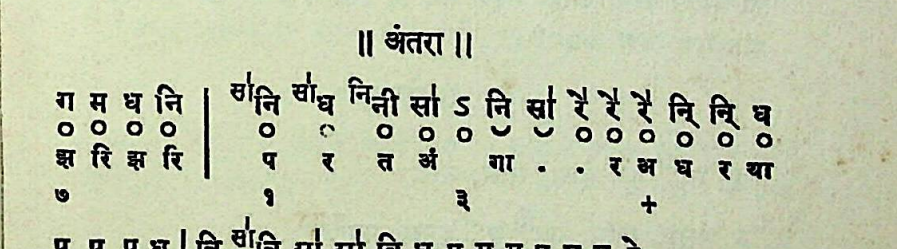

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—देवरंजनी

जाति—ओडव वादी—षड्ज संवादी—मध्यम

समय—प्रातःकाल

आरोह—सा म, म प नि॒ध् नि॒ध् सां

अवरोह—सां नि॒ध् नि॒ध् प ध् म, म सा

विशेष—यह राग भी दाक्षिणात्य होकर हमारे विद्वानों ने प्रचार में लाया है। यह ओडव जाति का राग है। और पास के ऋषभ, गांधार दोनों स्वर वर्जित करने का नया प्रकार दिखाई देता है। यह राग गाते समय आसावरी का भास अधिक होता है। अवरोह में कोमल निषाद का कण लगाना क्षम्य माना जाता है। षड्ज से मध्यम जैसे-सा म म प, म ध् ध् प ध् म, म सा इस प्रकार सा म म सा इन स्वरों के टुकड़े लेकर आलाप को समाप्त करना चाहिये। इस राग का उत्तरांग प्रबल होने से यह राग प्रातःकाल गाया जाता है।

आलाप

१ सा नि॒ ध्॒ नि॒ ध्॒ सा, साम, मसा

२ साम, मपम, मप नि॒ ध्॒ नि॒ ध्॒ पम, पम म सा

३ साम, मपम, मप नि॒ ध्॒ नि॒ ध्॒ सां, सां नि॒ ध्॒ नि॒ ध्॒ पम, मपम म सा

४ मप नि॒ ध्॒ नि॒ ध्॒ सां, सांम, मंसां, सां नि॒ ध्॒ नि॒ ध्॒ पम, सामपम, म सा

५ मप नि॒ ध्॒ नि॒ ध्॒ सां, सांम, सांमपंम, मंसां, सां नि॒ ध्॒ नि॒ ध्॒ पम, म प ध्॒ सां नि॒ ध्॒ नि॒ ध्॒ प, ध्॒ नि॒ ध्॒ ध्॒ पध्म, ध्॒ ध्॒ प म पम, म सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तान

६ सासाधंधूंपंपंसा, सासाममसासा, सासाममपपममसासा, सासामम पपधूध्ममपपममसासा, सासाममपपध्ध्ममपपधूध्सांसांपपध्ध् ममपपममसासा, ममपपधूधसांसांममसांसांधूध्पपममसासा,ममपप धूधसांसांममपपममसांसांधूध्पपधूध्ममपपममसासा

७ सासासमपप–पधूप–पधूप–धूध्ममपपममसासा, मम–पप–धूध्– धूनिध्–धूनिध्–सांसांधूध्पप–धूनिध्–धूनिध्– ममपपममसासा- धूनिध्–धूनिध्–सांसांममसांसां– पधूप-पधूप-धूध्ममपपममसासा

८ धूध्–मम–सांसां–पप–धूध्– सांसां– ममसांसां– धूध्– सांसां– पप–धूध्–मम–पप–मम–सासा

९ सासासा–ममम–पप–ममम–पपप–धूध्–पपप–धूधूध्– सांसां– ममम–सांसांसां–पप–धूध्धूध्–ममम–पप–मम–सासा

ऋ. १७ राग–देवरंजनी, ख्याल; एकताल

अब घर पाया हो मोहन प्यारा ॥ धृ० ॥ लखो अचानक अज अविनाशी उघरिं गये दृग तारा ॥ १ ॥ —चरनदास कवीकृत

सा	सा	म	म	प	म	प	|	नि॒ध्॒	नि॒ध्॒	प	ध्॒	म	ऽ	म	प	नि॒ध्॒	नि॒ध्॒	सां	–
०	०	०	०	०	०	०	|	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अ	ब	घ	र	पा	.	.	|	था	.	.	.	.	.	हो	.	.	.	.	.
११							|	१											५

नि॒ध्॒	प	ध्॒	म	'	ध्॒	ध्॒	प	म	प	ऽ	म	म	सा	ऽ					
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०					
मो	.	ह	न		प्या	.	.	.	.		रा	.	.						
		+					९												

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

म प नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ सां सां | सां सां सां मं मं मं सां ऽ नि॒ सां नि॒ ध॒
ल खो . अ चा . न | क अ ज अ वि ना . . . शी
११ १

प ध॒म म प नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ सां ऽ नि॒ ध॒ प ध॒ म पम प ऽ म मसा
. उ घ रि ग ये . दृ ग ता . रा . . .
५ + ९

क्र. १८ राग–देवरंजनी, तीनताल (मध्यलय)

भूल्यो मन माया उरझायो जो जो कर्म कियो लालच लगि तिहि तिहि आप बंधायो ॥ धृ० ॥ समझ न पडी विषय रस राच्यो यश हरि को बिसरायो ॥ १ ॥ —कवी-नानकगुरु

प ध॒ नी॒ ध॒ प प ध॒ म | म म प ध॒ प म मसा नि॒ं ध॒ं नि॒ं ध॒ं सा सा सा |
भू . . ल्यो म न मा . | या उ . र . झा यो जो जो क र्म कि |
+ ७ १ ३ + ७

म म म म प प नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ सां सां नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ नी॒ | ध॒ प ध॒ म
यो ला ल च ल गि ति हि ति हि आ प बं | धा . यो .
१ ३ + ७ १

प म म सा
. . . .
३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

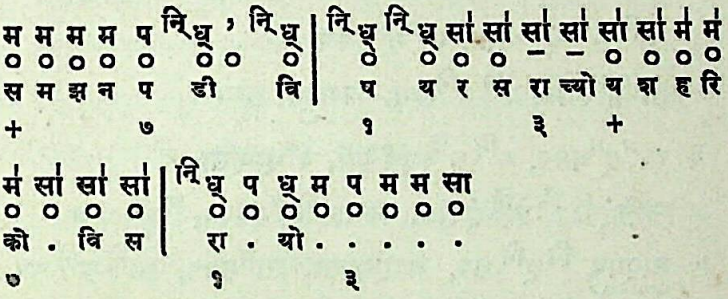

राग—गोपिका-बसन्त

जाति—षाडव वादी—षड्ज संवादी—पंचम

समय—प्रातःकाल

साधारण रूपसे राग का चलन—सा ग् म प, ध् ध् प म ग् म सा, म॒ग् म प, नि॒ध् नि॒ध् नी सां, सां नि॒ध् नी ध् म, प म॒ग्, म ग् सा

विशेष—यह राग दाक्षिण्यात्य रागों में से एक है। इस राग को गोपी-बसन्त भी कहते हैं। इस राग में ऋषभ बिलकुल ही वर्जित होने से सा ग् म प, नि॒ध् नि॒ध् प म, इन स्वरों से आसावरी का भास और चलन दीख पडता है। यह आसावरी अंग का राग होने से प्रातः काल के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। इस का चलन वक्र-स्वरूप होता है। 'ध् म प म ग् म सा' यह स्वर आलाप के समाप्तीपर आते है। ऋषभ स्वर वर्जित होने से पूर्वांग मे मालकंस राग का भी भास होता है। 'म प ध् नी सां म' यह स्वर पंक्ती राग की रंजकता बढाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सा नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ सा नि॑ सा, सा म॒ ग॒ म॒ ग॒ म सा

२ सा म॒ ग॒ म॒ ग॒ म प, म नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ म, प प म ग॒ म, ग॒ सा

३ सा म॒ ग॒ म॒ ग॒ म प, म नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ नी ध॒ म, प म॒ ग॒ म ग॒ सा

४ सा नि॑ ध॒ प, नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ नी सा, नि॑ सा ग॒ म॒ ग॒ म॒ ग॒ म प म, म॒ ग॒ म॒ ग॒ म सा

५ सा ग॒ म प, नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ प, म प ग॒ म ग॒ सा, सा म॒ ग॒ म प, सा नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ प म॒ ग॒ म॒ ग॒, म प ध॒ नी सा म, प प म ग॒ म, नी ध॒ म ग॒, म॒ प म ग॒ सा

६ सा ग॒ म प, ग॒ म नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ नी सा, सा प, म॒ ग॒ म॒ ग॒ म सा, ग॒ ग॒ सा नि॑ सा नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ म, म प ध॒ नी सा म, प प म ग॒ म, ग॒ सा

७ सा नि॑ ध॒ नि॑ ध॒, म॒ ग॒ म॒ ग॒ म सा, सा नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ प म॒ ग॒ म॒ ग॒, सा नि॑ ध॒, म॒ ग॒ म॒ ग॒ म सा, ग॒ सा नि॑ सा ग॒ सा नि॑ ध॒, नि॑ ध॒ सा नि॑ सा म, नि॑ ध॒ म ग॒, म॒ प म ग॒ सा

तान

८ सा नि॑ ध॒ प ध॒ ध॒ नी सा, ध॒ नि॑ सा ग॒ म ग॒ सा, सा ग॒ म प म ग॒ म ग॒ सा, सा ग॒ म प ध॒ नी ध॒ म ग॒ म ग॒ सा, सा ग॒ म प ध॒ नी सा नि॑ ध॒ म ग॒ म प म ग॒ म ग॒ सा, सा ग॒ म प ध॒ नी सा ग॒ सा नि॑ ध॒ नी ध॒ म प म ग॒ म ग॒ सा

९ नि॑ सा ग॒ म ग॒ सा, नि॑ सा ग॒ म प ग॒ म प ग॒ म ग॒ सा, नि॑ सा ग॒ म प ध॒ नी ध॒–ध॒ नी ध॒ नी–ध॒ म प म ग॒ म ग॒ सा, नि॑ सा ग॒ म प ध॒ नी सा नि॑ ध॒ नि॑ ध॒ म प म ग॒ म ग॒ सा, नि॑ सा ग॒ म प ध॒ नी सा ग॒ ग॒ सा नि॑ ध॒ नी ध॒ म प म ग॒ म ग॒ सा

१० सा ग॒ ग॒–ग॒ म म–ग॒ सा, सा ग॒ ग॒–ग॒ म म–म ध॒ ध॒–म प प–ग॒ म म–ग॒ सा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साग्ग्–ग्मम–मध्ध्–ध्नीनी–मध्ध्–मपप-ग्मम-ग्सा, साग्ग्–ग्मम–मपप–पध्ध्–ध्नीनी–नि्सांसां–सांग्ग्–नि्सांसां-ध्नीनी-मध्ध्–मपप–ग्मम–ग्सा

११ साग्मग्–साग्मपमग्–साग्मपध्नीधम–ग्मपध्नीसां–ध्नीसांग्-सांग्मंग्सांनि्–ध्नीध्मग्म–पमग्मग्सा

१२ साग्म–ग्मप–मध्नी–ध्नीसां–नि्सांग्–सांग्मं-ग्सांग्-सांनि्सां-नि्ध्नी–ध्पध्–पमप–मग्म–ग्सा

१३ साग्मपमग्–ग्मध्नीध्म–मध्नीसांनि्ध्–ध्नीसांग्सांनि्– सांग्मं ग्सांनि्–सांग्सांनि्ध्नी–ध्नीध्मग्म–पमग्मग्सा

१४ ग्मग्मग्सा–ध्नीध्नीध्म – नि्सांनि्सांनि्ध् – सांग्सांग्सांनि्–ध्नीध्नीध्म–मपमपमग्–ग्मग्मग्सा

१५ साग्मध्ध्ध्–पध्नीध्पम–मध्नीसांसांसां–सांग्सांनि्ध्नी– ध्नी सांग्ग्ग्–सांग्मंग्सांनि्–मध्नीसांसांसां–ध्नीध्पमग्–मध्नीनी नीनी–ध्नि्ध्मग्म–साग्मममम–मपग्मग्सा

क्र. १९ राग–गोपीका-बसंत, ख्याल; एकताल

चल-चलरे हंसा, राम-सिन्ध, बागड़मे क्या तू रह्यो बंध ॥ धृ० ॥ मान सरोवर विमल नीर, जँह हंस समागम तीर-तीर ॥ १ ॥

—कवी–दरियासाहेब

नि्ं	सा	मग्	मग्	म	प	मग्	म	नि्ध्	नि्ध्	नि्ध्	प	म	प	नि्ध्	नि्ध्	नि्ध्	नि्ध्	नि्ध्	नि्ध्
◡	◡	◡	◡	◡	◡	◡	◡	–	○	○	–	◡	◡	○	–	◡			
च	ल	च	ल	रे	.	हं	.	सा	.	.	.	रा	.	.	म	सिं			
१								१								७			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

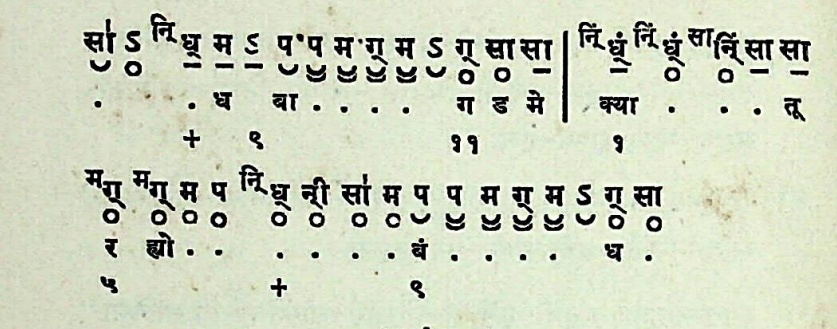

॥ अंतरा ॥

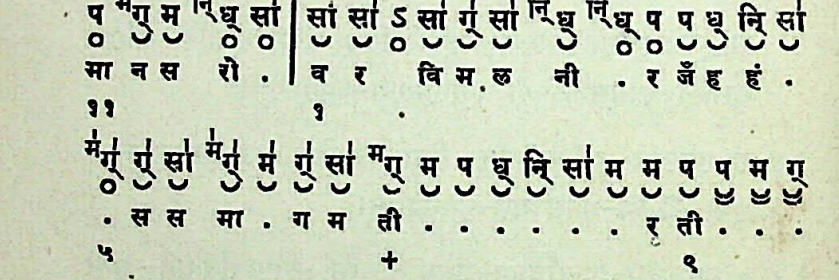

क्र. २० राग–गोपीका-बसंत तीनताल (मध्यलय)

नाम बिन भाव करम नहि छूटे। साध-संग और राम-भजन विन, काल निरंतर लूटै ॥ ध्रु० ॥ गुरुमुख शब्द गहे उर-अन्तर। सकल भरमसे छूटै ॥ १ ॥

—कवी–दरियासाहेब

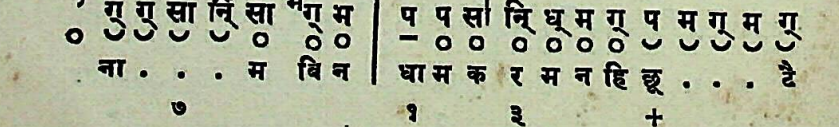

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा ऽ नि॒ं ध॒ं नीं॒ सा म | ऽ म म प नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ नी सां नि॒ ध॒ प
◡ ० ० ० ० ० | ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ०
. सा . ध सं | ग औ र रा म भ ज न बि न
७ १ ३ +

म प ध॒ नी | सां म म प ग॒ म प ध॒ नि॒ सां म प म ग॒ म ग॒ सा
० ० ० ० | ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ०
का . ल नि | रं . त र लू . . . . . टै . . . . . .
७ १ ३ +

ग॒ ग॒ सा नि॒ं सा मग॒ म | प प सां नि॒ ध॒ म ग॒
◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० | — ० ० ० ० ० ०
ना . . . म बि न | भा व क र म न हि
७ १ ३

॥ अंतरा ॥

प प मग॒ म नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ | सां सां नि॒ ध॒ नि॒ सां सां सां गं॒ सां
० ० ० ० — ० ० | — ० ० ० ० ० ० ० ० ०
गु रु मु ख श ब्द ग | हे उ र अं . त र स क ल
+ ७ १ ३ +

सां नि॒ ध॒ म | ग॒ म प ध॒ नि॒ सां म म प म ग॒ म ग॒ सा ग॒ ग॒
० ० ० — | ० ० ० ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ◡ ◡
भ र म से | छू . . . . . टै . . . . . ना .
७ १ ३ +

सा नि॒ं सा मग॒ म |
◡ ◡ ० ० ० |
. . म बि न |
७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—अम्बिका (मधुवन्ती)

इस राग में मध्यम तीव्र और अन्य सब स्वर स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ और धैवत वर्जित हैं।

जाति—ओडव-संपूर्ण वादी—पंचम संवादी—षडज

समय—दिन का तिसरा प्रहर

राग का मुख्य अंग—ध प म॒ ग्, म॒ ग् रे सा

आरोह—सा म॒ ग् म॒ प नी सां

अवरोह—सां नि ध प म॒ ग्, म॒ ग् रे सा

विशेष—यह राग मुलतानी और भीमपलासी के मेल से बना है। मुलतानी राग में ऋषभ, धैवत शुद्ध लगाने से ही इस राग का पूर्ण स्वरूप दिखाई देता है। यह राग मेरे गुरुबन्धु स्व. पं. वामनराव पाध्ये जी ने निर्माण किया है। आजकल इसी रागको "मधुवन्ती" कहने का प्रचार हो गया है। कई गायक इसी राग में दोनों निषाद लगाकर या केवल कोमल निषाद लगाकर ही गाते हैं और उसीको ही मधुवन्ती कहते हैं।

इस राग में मुलतानी के अनुसार चलन करते हुए इस राग को गाना उचित है। केवल ऋषभ और धैवत शुद्ध लगाना बाकी सब चलन मुलतानी का ही है। पूर्वांग में ऋषभ शुद्ध लगाने से दाक्षिणात्य पद्धतिका 'सिंहेन्द्रीं मध्यमा' राग का भास होता है और उत्तरांग में शुद्ध धैवत होने से पटदीप, पिलू आदि का भास होता है। इस का चलन मुलतानी के अनुसार होने से इस में शृंगार, करुण रस का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। यह राग दिन को ही गाना उचित है। यह राग रातको गाने की प्रथा अनिष्ट है।

आलाप

१ सा, रे॒ सा॒निंधंपं, मं॒पंनीं॑सा निंसा, निंसा म॒ ग् म॒ ग् सा॒ रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२ रेनिंसा^{म}ग्म-प, म-धप, ध प म-प^{म}ग्, सा^{म}ग्प^{म}ग्$^{सा}$रेसा

३ सारेसा, रे सानिं, निंसाम-ग्प, म-धप, ध प म-प^{म}ग्, ग म-प नि$^{सा}$नि$^{सा}$निधप, धप, ध प म-, प^{म}ग्, निं सा ग म- ध प म-ग्, म-ग्रेसा

४ निंसाम-ग्प, धपम-ग्, ग्म-पनि, $^{सा}$नि$^{सा}$निसा, सा रे सानि धप, प ध प म- ग म- पनीधप, ध प म-ग्, सा ग म- प ग म- ध प म-ग्, म-ग्रेसा

५ निं सा ग म- पनीध प म-ग्म-ग्, ग म- पसा, रे सानि$^{सा}$निसा, निसा^{म}ग्$^{सा}$रेसा, रे सानि, धपम- ग्म-ग्, सा ग म- प ग म- पनिधप, धध प म- प ध प म-ग्, रेनिंम-ऽग्पऽम-धपम- ग म-ग्, सा ग म-प^{म}ग्$^{सा}$रेसा

६ रेनिंम-ग्, पऽम धम-पम- ग, नीधम-पम-ग्, साऽनि रे नि सा, म-ग् रे$^{नि}$सा, साऽनि ध प म- ग म- पसाऽनि रे$^{नि}$सा, सा ग म-प^{म}ग्$^{सा}$रेसा, सा ग म- प^{म}ग्रेसा

७ रे सा निं सा^{म}ग्, ध प म- पनी, रे सा नि सा ग्, सा ग म- प^{म}ग्, सा ग म- प^{म}ग्, ग म- पसाऽनिध प म- ग्म-ग्$^{सा}$रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८ साम-ऽग्, साधपम्-ग्, सानिधपम्-ग्, सासांऽ निसांरेंऽसां, सार्ग्, सार्म-ग्, म-ग्, सापम-ग्सारेसा

तान

९ निंसाम-ग्रेसा, निंसाग्म-पम-ग्रेसा, निंसाग्म-पनिधपम-ग्रेसा, निंसाग्म-पनिसांनिधपम-ग्रेसा, निंसाग्म-पनिसांरेंसांनिधपम-ग्रेसा, निंसाग्म-पनिसांग्रेंसांनिधपम-ग्रेसा

१० निंसाग्म-म-ग्म-म-ग्रेनिंसा, निंसाग्म-पनीनी-पनीनी-धपम-ग्रेसा, निंसाग्म-पनिसां रें रें-सां रें रें-सांनिधपम-ग्रेसा, निंसाग्म-पनि-सांग्ग्-सांग्ग्-रेंसांनिधपम-ग्रेसा

११ म-म-ग्म-म-ग्म-म-ग्रेनिंसा-धध-पधध-पधध-पम-ग्म-नीनी-पनिनि-पनिनि-धपम-ग्-रें रें-सां रें रें-सां रें रें-सांनिधप-मं-मं-ग्मं-मं-ग्रेंसांनि-रें रें-सां रें रें-सां रें रें-सांनिधप-नीनी-पनिनि-पनिनि-धपम-ग्-म-म-ग्म-म-ग्म-म-ग्रेनिंसा

१२ म-म-ग्रेनिंसा-धधपम-ग्म-नीनीधपम-ग्-रें रेंसांनिधप-ग्ग् रेंसांनिसां-मं-मं-ग्रेंसांनि-रें रेंसांनिधप-नीनीधपम-ग्-धधपम-ग्म-पपम-ग्रेसा

१३ साग्ग्-ग्म-म-म पप-पनिनि-निसांसां-सांग्ग्-सां रें रें-निसांसां-पनिनि-पधध-म-पप-ग्म-म-ग्रेनिंसा

१४ सारेनिंसाग्ग्रेसा-पधम-पधपम-ग्-सां रेंनिसां रेंसांनिनि-ग्मं-ग्ग्मं-ग्रेंसां-सां रेंनिसांरेंसांनिध-पधम-पधपम-ग्-ग्म-ग्ग्म-ग्रेसा

१५ ग्म-ग्ग्म-म-पधम-पनीनी-सां रेंनिसांग्ग्-ग्मं-ग्ग्मं-मं-सां रेंनिसां रें रें-पधम-पनीनी-ग्म-ग्ग्म-म-सारेनिंसाग्ग्रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६ ग्ग्रेसा–मम ग्ग्–धधपम–नीनीधप–सांसांनिनि–रें रेंसांसां–ग्ग्रें रेंसां–रें रेंसांनि–सांसांनिध–नीनीधप–धधपम– पपम ग्–म म ग्रे–ग्ग्रेसा

१७ सासा–ग्ग्–मम–पप–नीनी–सांसां–ग्ग्रें–रें रें–सांसां–नीनी–धध–पप–मम–ग्ग्–रेरे–सासा

१८ साग्–ग्म–मप–पनि–निसां–सांग्रें–ग्रें रें–रेंसां–सांनि– निध–धप–पम–मग्–ग्रे– रेसा

१९ म ग्रेसा–धपम ग्–निधपम–सांनिधप–रेंसांनिध– ग्रें रेंसांनि–म ग्रें रेंसां–ग्रें रेंसांनि–रेंसांनिध–निधपम–धपम ग्–म ग्रेसा

२० मम–ग्मम–निनि–पनिनि–ग्ग्रें– सांग्ग्रें– मं मं– ग्मं मं– रें रें–सां रें रें–नीनी–पनिनि–धध– पधध– मम– ग्मम– रेरे–सांरें रें–निंसा

दोनों निषाद के आलाप

२१ साम ग्ु म प, धप, नीधपम ग्, ग्म पनिधप, नीधपम ग्, म ग्रेसा

२२ ग्ु म पनीधप ध प म ग्, ग्ु म पसांरेंनिधप, पनीधप ध प म ग्, सा ग्ु म पनीधप, नि धनि पध म प ग्, सा ग्ु म पम ग्, म ग्रेसा

क. २१ राग–अंबिका, ख्याल; एकताल

सुनिये नाथ गरीब निवाज। आई सरन तुम्हे सब लाज ॥ध्रु०॥ अधम-उधारन बिरद सम्हारन। त्रिभुवन के सिरताज ॥ १ ॥

(कवी–युगलप्रिया)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

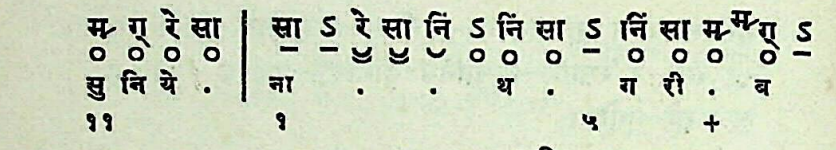

॥ अंतरा ॥

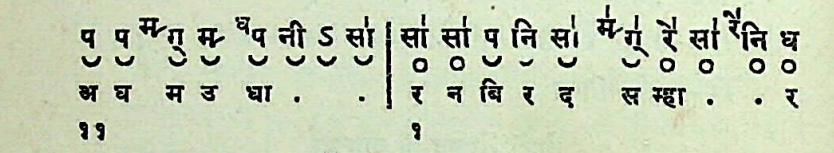

क्र. २२ राग–अंबिका, तीनताल (मध्यलय)

करहु प्रभु भव सागरसे पार। कृपा करहुतो पार होत हौं। नहि बूडति मँझधार ॥ धृ० ॥ मैं हौं अधम अनेक जनमकी। तुम प्रभु अधम उधार॥१॥

(कवी–रूपकुंवरी)

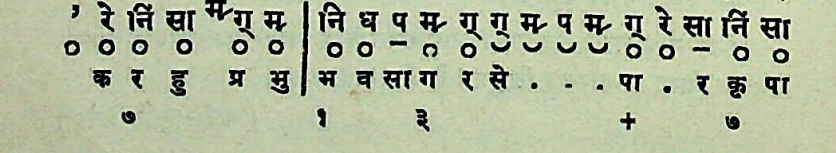

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

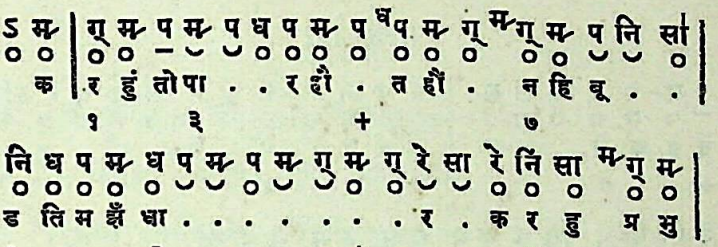

॥ अंतरा ॥

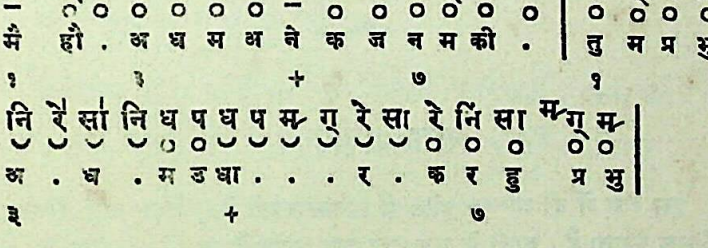

फ्र. २३ राग–अम्बिका (मधुवन्ती), दो निषाद प्रकार; तीनताल (मध्यलय)

हरि समान दाता कोउ नाहीं, सदा बिराजैं संतन माहीं ॥ धृ० ॥ देइ अनेक न मुख पर ऐने, औगुन करै सो गुन करि मानैं ॥ १ ॥

(कवी–मलूकदास)

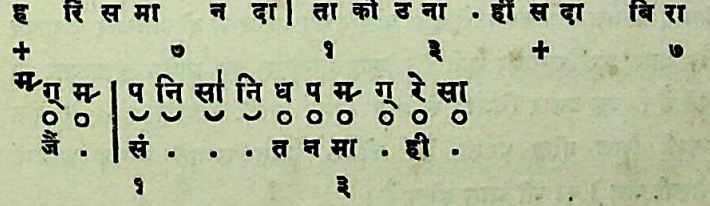

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

| | | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सा^सा^नि्^सा^नि्^सा, ^सा^नि्^धं^पं, ^सा^नि्^सा^नि्^सा

२ सा, ^म^ग्रेसा, ^रे^नि्^साम, मग्, ^प^मग्रेग्ऽसा

३ ^रे^नि्^साम, मग्^प^मग्रेग्, ^प^म-^प^म-प, ध्पम, पप म ग्म, ग् म ग् म पमग्रेग्सा

४ ^रे^नि्^साम, पमग्रेग्, ^प^म-^प^म-प, ^प^म-^ध्^पनीध्ऽपप पध्, ध्पम, पप म ग्म, ग् म ग् मप^म^ग्रेग्सा

५ ^रे^नि्^साम, ग् म पनि्^सा^नि्^सा^नि्प^सा^नीसा, प नि्सा^ग्, रे^सा, सा^नि ध्प, म-^ध्^पनीध्प, ^ध्^पमग्रेग्, साग् म प ग् म^ध्^प^म^ग्रेग्सा

दूसरे प्रकारमे लेनेके आलाप

६ ^सा^नि्^सा^नि्^सा, ^सा^नि्^धंपंसा, सामपगमप, नीधप, ध प मगम, प^सा^नि्^सा^नि्^सा, सा^नि्धप, नि् ध प मगऽमगमप, ^म^ग्साग्मग्रेसा

७ सासा^नि्धप, म म प धसा^ऽरे^सा^नि्ध पधसा, सा, रे^सा^नि् ध प मगम, सारेमऽरे, मपऽध् प मप^म^ग्रे^नि्^सा

तान

८ रेसानि्^सा, नि्^सामग्रेसा, रेसानि्^धंपंमंपंसा, सारेमपधधपमनीध पमगमपमग्रेसा

९ मग्रेसा–पमग्म–नि्धपम–सा^नि्धप–धधपम–पपमग्–ग्मग्म–पग्मग्रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१० सामम–ग्पप–मनि्नि्–पसा॑सा॑–नि्रें॑रें॑–सा॑ग्॑ग्॑–सा॑रें॑रें॑-नि्सा॑सा॑-पनि्नि्–पध्ध्–मपप–ग्मम–ग्रेसा

११ सासाममपमग्म–पपनीनी्ध्ध्पप-म॒म॒पपध्ध्पप-म॒म॒पपग्गमम-ग्मग्मपमग्म–ग्रेसा

१२ सासामग्रेसा–म॒पध्नी्ध्प–मपसा॑नि्ध्प–म॒पध्पमग्– ग्मग्मप मग्रेग्सा

१३ मपमप–ग्मग्म–पसा॑नि्सा॑–ग्॑रें॑सा॑नि्– पनि्ध्पम॒पग्म – पमग्म ग्रेग्सा

१४ साम–ग्प–मनि्–पसा॑–नि्रें॑–नि्सा॑–पनि्–पध–मप–ग्मग्रेसा

क्र. २४ राग–प्रदीपकी, ख्याल; एकताल (एक प्रकार)

पिया घर आलेरी कैसे करूं धीरज धरिये ॥ धृ० ॥ उमगे जोबना पार बिरहा सतावुं रैन दिना धीरज धरिये ॥ १ ॥

रे मग् रे सा रे सानि्ं धं पं | धं मं पं पं ' रे मग् रे ग्सा सा सा रे
पि . या . . घ र . | ना . . ही आ . ले . री कै से
११ १ ५

म म ऽ रे मरे म रे म प ऽ ध् प म प मग् रे सानि्ं ऽ सा
क रूं . धी . . र ज . ध . . री ये . .
+ ९

॥ अंतरा ॥

म म प ध सा॑ सा॑ ऽ रें॑ | सा॑नि् ध प ध सा॑ नि सा॑ ऽ रें॑ रें॑ सा॑ नि्
उ म गे जो ब ना . | पा . . र बि र हा स ता . .
११ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

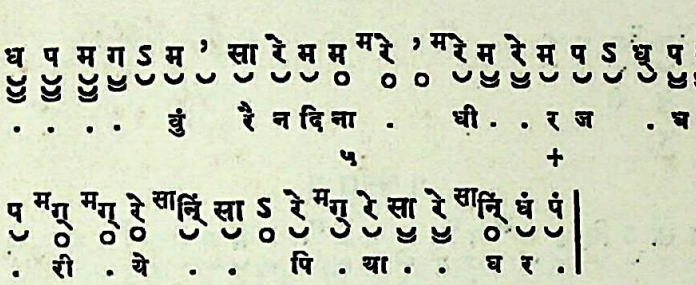

क्र. २५ राग–प्रदीपकी, ख्याल; एकताल (दूसरा प्रकार)

मैं तो यही जानुरी माई कान्हा कैसे हूं ना बोले ॥ ध्रु० ॥ ऐसी प्रीत करी कान्हा मोसो अबक्यौंना घर घर तोरी ॥ १ ॥

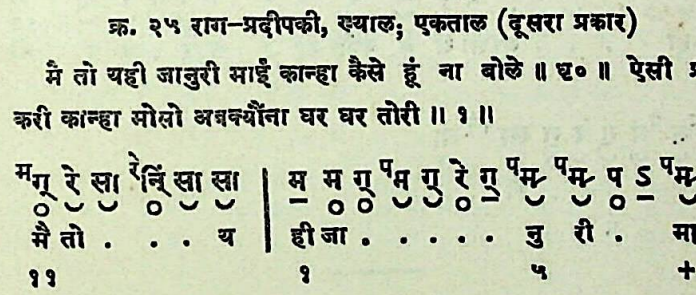

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग् प म् प म् प ऽ
. जु री .
५

॥ अंतरा ॥

सा सा ऽ नि् ध् प म् प ध् ध् प म म् ग् म म म म ऽ | ग् म ग् म
ऐ . . . . सी . प्री . . . . त क री | का . . .
+ ९ ११ १

प प ' ध् प म ग् रे ग् म् म् प् म् प् प नि् प प म प म् ग् ' म् ग्
. न्हा . . . मो सो अ ब क्यौं ना . घ र . घ र तो
५ +

म प् म प् म ग् रे ग् सा नि् सा
. . . . . री .
९

क. २६ राग-प्रदीपकी, तीनताल (मध्यलय) (दूसरा प्रकार)

सो मेरो मन लेगयो डार ठगीरी बंशीमे कछु मदन मंत्र पढके गयो ॥ध्रु०॥ प्रीत अटपटी लागी चटपटी चेटक सो चित है गयो ॥ १ ॥ या ब्रजनिंधकी प्रीत कपटकी लपट झपट दुख दे गयो ॥ २ ॥

ध् म प म् ग् म ग् रे सा रे नि् | सा म ऽ म प् म ग् रे ग् ' प् म् म् म्
सो . . मे . . रो . म न | ले . ग यो . . . डा र ठ
+ ७ १ ३ +

ध् प नी ध् प | ' ध् प म म प म ग् म म प नि् प म ऽ ग् रे ग्
गी . री . | बं . शीमे . . क छु म द न मं त्र प ढ
७ १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग़ म ग़ म प ध़प मग़ म ग़ रे सा
ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० ० ऽ ऽ ० ०
के . . . . ग थो . . . .
१ ३

॥ अंतरा ॥

सां नि़ ध़ प प मग़ म | प सांनि़ सां नि़ सां ग़ रे सां ' ग़ रे सां
– ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
श्री ति अ ट प टी . | ला . गि च ट प टी . चे ट क
+ ७ १ ३ +

सांनि़ ध़ प | मग़ रे ग़ म़ ग़ म़ ग़ म़ प प प प ध़ प म म
– ० ० | ० ० ० ० ऽ ऽ ऽ ऽ – ० ० ० ऽ ऽ ० ०
सो चि त | है . . ग थो . . . . या ब्र ज नि . . .
७ १ ३ + ७

ध़ म ग़ म | ग़ म प प ध़ प मग़ म ग़ रे सा रे नि़ सा म ग़ म
ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ० ० ऽ ऽ ० ० ऽ ० ० ० ० ० ० ० ०
की . . . | श्री . . त क . प ट . की . ल प ट झ प ट
१ ३ + ७

नि़ प | ग़ म ग़ म प ध़प मग़ म ग़ रे सा
० ० | ऽ ऽ ऽ ० ० ० ऽ ऽ ० ०
दु ख | दे . . . ग थो . . . .
१ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—पटमंजरी

इस राग में गांधार और निषाद कोमल लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

वादी षडज और पंचम संवादी है। यह राग भी सायंकाल में गाया जाता है। यह राग संपूर्ण जातीका है। आरोहमें गान्धार और धैवत दुर्बल रहते है।

विशेष—यह राग काफी अंगसे गाते है। सा रे म प यह स्वरोंसे सारंगांग व्यक्त होता है। धैवत गान्धार का योग्यतासे प्रयोग करने पर तिरोभाव प्रगट होता है। यह राग अप्रसिद्ध होनेसे इसके लिये मतभेद होना संभवनीय है। सारंग रागके बाद इस रागको गाते हैं।

साधारण रूपसे रागका चलनः—सा, रे नि॒ ध॒ प॒ सा, सा रे म प, प ध ग॒ रे॒ ग॒ म ग॒ रे सा, म प प सां, रें सां, गं॒ रें गं॒ सां, नी॒ सां प, रे॒ म॒ प॒ नि॒ ध प, म॒ प॒ ध ग॒, म ग॒ रे सा

आलाप

१ सा, सानिंसा, रेनिंधंपंसा, मग॒रेग॒सा, नि॒सा॒रेनिंधंपंसा

२ रेनिंसा, रेमप, धपमघपमग॒रे, रे॒ ग॒ मग॒रेसा

३ साम, मप, म॒ प॒ धमग॒रे, मपधपसां, सांपधपममग॒रेम, मग॒रे, प मग॒रे, रेसा

४ मप, पसांपमप, धपनिप, म॒ प॒ सां-पधपमग॒रे, म॒ पधमग॒रे, मग॒रेसा, नि॒सा॒रेनिंधंपंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

५ म म पसां, सां रेंसां, गं रें, गंसां, निंसांप, रे म प निंधप, म प धप मगंरे, पमगंरेमगंमगंरे, सारेसा

६ रेसानिंधंपं, धंपंसांनिंसा, रे म प धमगंरे, निंधप, सांप, रेंसां, मगंरेंसां, रे म पसांप, म प धमगंरेसा, निंसा रेगंरेसानिंधंपसा

७ निंसारेमप, धपनिंप, म प सां, रेंसां, गंरेंगंसां, निंसांरेंसां, मप मरेपमप, निंधप, म प धप, पमगंरे, गं, मगंरे, सा

तान

८ सारेसा, सारेगंरेसा, सारेमपधगंरेमगंरेसा, सारेमपसांसांरेंसांमप धपगंरेसा, सारेमपसांसांरेंसां रेंगं रेंसांपपधमपगंगंरेसा

९ सांरेरें–रेमम–मपप–पधध–पसांसां–सां रें रें–रेंगंगं–सां रें रें–निंसांसां–पधध–मपप–मगंगं–सांरेरें–निंसासा

१० रेगंरेसा–मपधप– निंसांरेंसां– सां रेंगं रें– निंसांरेंसां– मपधप–धगंरेगं–मगंरेसा

११ रेगंरे–रेगंरे–निंसा–पधप–पधप–मप–सां रेंसां–सां रेंसां–निंसां–रेंगं रें–रेंगं रें–निंसां–पधप–पधप–मगं–रेगंरे–रेगंरे–निंसा

१२ सारेगंरेसानिंधंपं–रेमपमगंरेसानिं–रेमपधमगंरेगं– पधनिंसांसानिं धप–सां रेंगं रेंसांनिंधप–मपधपगंरेसानिं–सारेमगंरेसानिंसा

१३ सासा–रेरें–मम–पप–निंनिं– सांसां– रेंरें– मंमं– गंगं– रें रें– सांसां–निंनिं–पप–धध–मम–गंगं–रेरें–सासा–निंनिं–सासा

१४ सांरेरें– रेमम–मपप–पनिंनिं–निंसांसां–सां रेंरें–निंसांसां–पधध–रेमम– रेगंगं–सांरेरें–निंसासा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

क्र. २७ राग–पटमंजरी, ध्रुपद; चारताल

विलम रहे मनमोहन भेजूं कित संदेस आली कवन देश गए सुधहु न लीनी मोरी ॥ धृं० ॥ ढूंढन जाऊं कित आली सर्व बन घूम आई आज रात-नार व्याकुल भई गोरी ॥ अभोग ॥ ढूंढे कुंज बार बार सखि कोई संगन साथ दरश दो गोपाल चितवन चहूं ओरी ॥ संचारी ॥ भूषण विसरिके कर चूरी उतारके अंग विभूतर मायके वैरागिन भई तोरी ॥ १ ॥

श्रीमान् बाबू उमाशंकर प्रसादजी के संग्रहसे मुझफ्फरपूर–(बिहार)

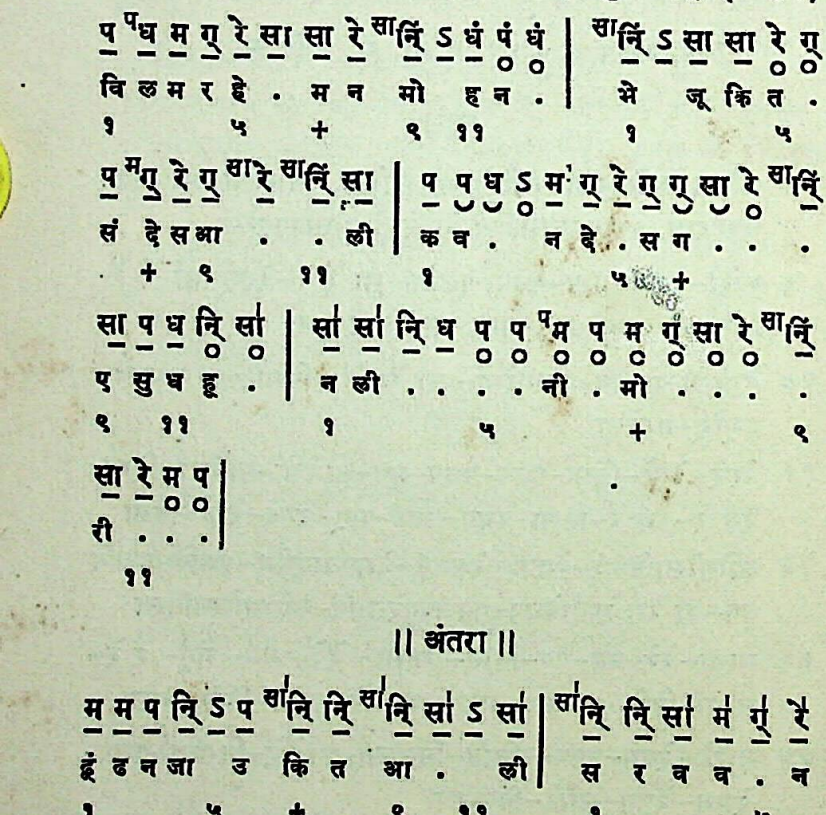
प प ध म ग रे सा सा रे सा नि ऽ धं पं धं
वि ल म र हे . म न मो ह न .
१ ५ + ९ ११
सा नि ऽ सा सा रे ग
भे जू कि त .
१ ५
प म ग रे ग सा रे सा नि सा
सं दे स आ . . ली
+ ९ ११
प प ध ऽ म ग रे ग ग सा रे सा नि
क व . न दे . स ग . . .
१ ५ +
सा प ध नि सां
ए सु ध हू .
९ ११
सां सां नि ध प प प म प म ग सा रे सा नि
न ली . . . . नी . मो . . . .
१ ५ + ९
सा रे म प
री . . .
११

॥ अंतरा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां सां सां नि् ध प | प प ध ऽ म ग् रे म ग् रे ग्रे सा प ध
चू म आ . . ई | आज . रा . . त ना . र . ब्या .
+ ९ ११ १ ५ + ९

ध नि् सां | सां ऽ नि् ध प म प म प म ग् सा रे सा नि् सा रे म प
० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
कृ . ल | म . . . . ई . गो . . . . री . . .
११ १ ५ + ९ ११

॥ अभोग ॥

ग् म म म म प ऽ प प प प प प नि् नि् सां नि् सां सां नि् ध ऽ प
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ढूं ढे कुं ज बा र बा र स खि को ऊ सं . ग न सा थे
१ ५ + ९ ११

प प प प प प म ऽ ग् ग् ग् रे रे सा सा सा रे सा नि् सा रे म प
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
द र श दो गो पा ल चि त व त च हु ओ . . री . . .
१ ५ + ९ ११

॥ संचारी ॥

म प नि् प प नि् सां ऽ सां सां ऽ नि् सां | मं गं रें रें ऽ सां नि्
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
भू प ण . वि स . रि के क र | चू डि ड . ता .
१ ५ + ९ ११ १ ५

सां नि् ध प म प ऽ प ध ध प | म म म म ग् ऽ रे रे ग् सा
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
रि के . . अं . ग वि भू . | . त र मा . थ के . .
+ ९ ११ १ ५ +

प ध नि् ध सां सां ऽ सां | सां ऽ नि् ध प म प म प म ग् सा रे
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
बै रा . . गि . न | म . . . . ई . तौ . . .
९ ११ १ ५ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा नि॒ सा रे म प |
— — — ० ० |
. री . . . |
९ ११

क्र. २८ राग–पटमंजरी, ख्याल; एकताल

मेरो दृग लाग्यो जाय सुन रामा रूप निहारो ॥ धृ० ॥ राम सखे अब बिन पिया देखे सब सुख लागत खारो ॥ १ ॥

रे सा सा नि॒ सा नि॒ धं पं | सा रे नि॒ सा नि॒ सा नि॒ सा ऽ म रे म म प प
० ० ◡ ◡ ◡ ◡ | ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ◡ ◡ ◡ ◡
मे रो . . दृ ग | ला . . ग्यो . जा . य सु न
११ १

ऽ म प ध ध प म प ध म ग॒ ऽ रे म ग॒ सा रे सा रे नि॒ सा नि॒ सा
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ० ◡ ◡ ० ◡ ◡
. रा . . . . . मा . रू . प . नि हा . रो .
५ + ९

रे ग॒ रे ग॒
◡ ◡ ◡ ◡
. . . .

॥ अंतरा ॥

सां नि॒ सां नि॒ सां नि॒ सां नि॒ सां सां | सां सां नि॒ सां सां नि॒ सां रें गं॒ ऽ रें
० ◡ ◡ ० ◡ ◡ | — ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡
रा म स खे . अ | ब बि न पि या . . . .
११ १

गं॒ रें रें ऽ सां सां प म म प प ध ध प म प ध म ग॒ रे म ग॒ रे
◡ ◡ ◡ ◡ ० — ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ०
. दे . खे . स ब सु ख ला . . . . . ग त . . खा
५ + ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

सा नि सा नि सा रे ग रे ग
० ० ० ० ० ० ० ० ०
. . री . . . .

क्र. २९ राग—पटमजरी, तीनताल (मध्यलय)

अपनी ओर निबाहिये वाकी वाहू जाने ॥ धृ० ॥ भली बुरी कछु जानत नाही कर्म लिख्यो सो पाइयो ॥ १ ॥

सा रे म ग रे सा रे नि धं मं | पं सा ऽ नि सा ऽ मरे म प
० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० — — ० ० —
अ . प . नी . ओ . र नि | बा . हि ये वा . की

+ ७ १ ३ +

नी सां प प | रे म प ध ऽ म ग रे सा
० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० —
वा . . हु | जा . . . . ने . .

७ १ ३

॥ अंतरा ॥

म प ऽ सां नि सां सां सां | नि सां रें गं रें सां नि सां प प ' म प
० ० ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
भ ली बु री क छु | जा . . . न त ना . . ही क र्म

+ ७ १ ३ +

सां नि सां प प म | ' रे म प ध ऽ म ग रे सा
० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ०
लि ख्यो . सो . | पा . . . इ यो . .

७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—सामन्त कल्याण

इस राग में दो मध्यम लगते हैं अन्य सब स्वर शुद्ध हैं।

वादी—पंचम **संवादी**—षडज **समय**—रात्री का प्रथम प्रहर

साधारण रूपसे राग का चलन—सा सापं, निंधं नीं निंधं पं, पं सा धं सा, सा ऽ निं रे, ग म ग ग ऽ रे, प ग, ग ग रे सा रे म ग गनिं रे सा.

विशेष—यह राग कल्याण का प्रकार है। कल्याण का मध्यम तीव्र लेकर सभी कल्याण ही गाया जाता है परन्तु शुद्ध मध्यम लगाने का एक प्रकार नियमबद्ध ढंग से ही होता है। **जैसे**—ग ग रे सा रे, ग रे म ग, गनिं रे सा। यह राग गाते समय कल्याण और भूप इन दोनों का भास करना पडता है और वह भास करते समय उपरोक्त दोनों रागों से सामन्त कल्याण अलग दिखाना यही कलाकी चतुरता है।

यह राग अप्रचलित है। इस राग के चलन में मतभेद होना संभवनीय है। पुरानी चीजों से या महान् विद्वानों के मुख से सुने हुए आलापों पर निर्भरीत होकर यह चलन रसिकों के सामने रखने का प्रयत्न किया है। निम्नलिखित आलाप द्वारा यह भली भाँति ज्ञात होगा।

आलाप

१ सापं, निंधंनीं, निंधंपं, पंसाधंसा, साधंपंगं, पसाधंसाधंसा

२ पंसाधंसा, सारेसा, साऽनिंरे, गमगगऽरे, सारेसा, सापंनिंधंसा

३ पंनिंधंनींऽधं, निंरे, गमगगऽरे, पपग, गगरेसारेमग, गनिंरेसा

४ साऽनिंरे, गमगगऽरे, मगमप, नीनीधप, पपगरेमग, गनिंरेसा

५ सागरेगऽरे, पपग, पधपपगरे, गपसाधसा, साधपपपग, पसाधसा, साऽरेसा, साऽरेगरेसासा, साध पपगरे, गरेमग, गनिंरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६ साग प ध प पसांसांधसां, सांऽनिरेंसां, सांगरेंग, गरेंपपंग, गंगरेंनिसां, सांप, पऽम-ध, पधपसांसांधपपगरे, गगरेसारेमग, गनिंरेसा

७ मग, गनिंरेसा, पपग, म-गम-पनीनीधप, सांसांपध, सांरेंसांगंग रेंसां, पंपंगरें, सांरेंसां, सांसांधपपगरे, गपऽम-धपपगरे, सांसां पधपपगरे, गगरेसारेमग, गनिंरेसा

८ सांपं, निंधंनींऽधं, गगऽरे, नीनीधप, रेंरेंनींध, गंगरेंसां, सांपध, पधपसांऽनिधम-पगरे, गगरेसारेमग, गनिंरेसा

तान

९ सासारेंरेसासा, पंपंधंधंपंपंसा, सारेगगरेसा, सारेगपपगरेमगनिं रेंनिंसा, सारेगपधधपपगरेमगनिंरेंनिंसा, सारेगपधसांनिधपम-गरे मगनिंरेंनिंसा, सारेगपधसांरेंगरेंसांनिधपम-गरेमगनिंरेंनिंसा

१० गगरेसा–गम-पम-गरे–गम-पनीनीधपम-ग–पपधधपप–सांसांरेंरें सांसां–गंरेंनिसां–पपधधपप–नीनीधपम-ग–गरेमगनिंरेंनिंसा

११ सारेंसासा–पधपप–गरेंसासा–पधपप–सांरेंनिसां-गंगरेंसांपंपंगरें-गंरेंसांनिधपपगरे–गम-पनिधपम-ग, गरेमगनिंरेंनिंसा

१२ गग–रेगग–रेगग–पप–गपप–गपप–धध–पधध–पधध–सांसां–धसांसां–धसांसां–रेंरें–सांरेंरें–सांरेंरें–गंगं–रेंगंग–रेंगंग–सांरेंरें–निसांसां–धनीनी–पधध–गपप–रेगग–रेमम–निंरेरे–धंसासा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ३० राग–सामन्त कल्याण, ख्याल; एकताल

कैसे दरस परस वे तुम सुघर चतुर सुरजन प्यारे को मोहे तो डरहे सास ननंदको निसदिन घडी पलछिन ये मोरी माई ॥ ध्रु० ॥ मोहे तो नितलगी रहत बिन देखत दूबर भइला अब कहा करीये नित लगन धरत ये मोरी माई ॥ १ ॥

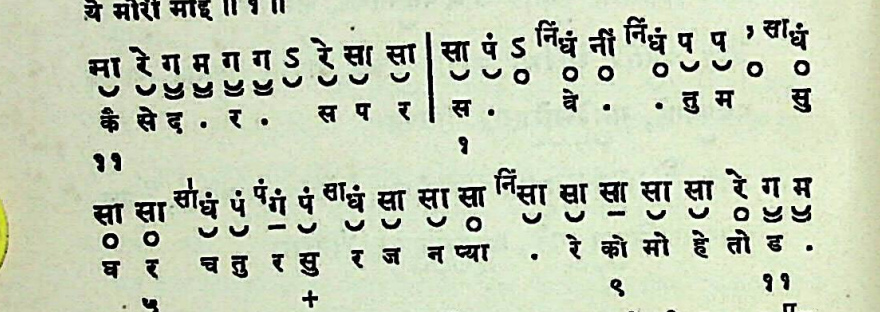
मा रे ग म ग ग ऽ रे सा सा | सा पं ऽ निंधं नीं निंधं प प ' सांधं
कै से द . र . स प र | स . वे . . तु म सु
११ १
सा सा सांधं पं पंगं पं सांधं सा सा सा निंसा सा सा सा सा रे ग म
घ र च तु र सु र ज न प्या . रे को मो हे तो ड .
५ + ९ ११
ग ग ऽ ग | ग ग ग ग गरे प पग ग ग म प नी नी ऽ ध प पग
र . हे | सा स न नं . द . को नि स दि न . घ डि प
१ ५
गरे सा सा ग ग रे सा रे ऽ ग रे म ग गनिं रे सा
ल छि न ये . . . . मो रि मा . . . ई
+ ९

॥ अंतरा ॥

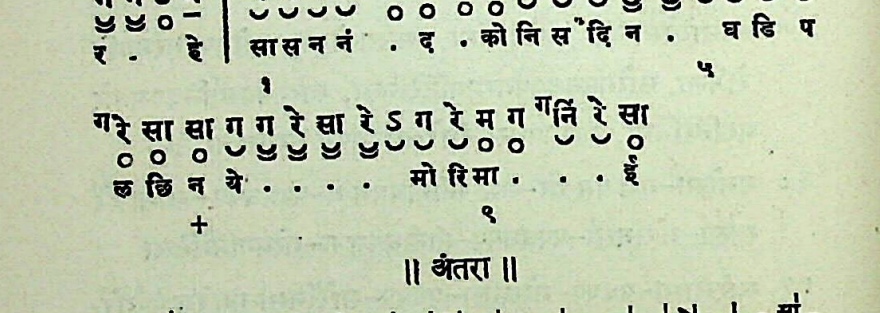

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां ध प प ग ग रे ग ग रे सा रे ऽ ग रे म ग म नि रे सा
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
न ध र त . ये . . . . मो रि मा . . . ई
५ + ९

क्र. ३१ राग—सामन्त कल्याण, तीनताल (मध्यलय)

ठुमुक-ठुमुक पग, कुमुक-कुंज-मग चपल चरन हरि आये, हो हो चपल चरन हरि आये ॥ ध्रु० ॥ मेरे प्राण-भुलावन आये, मेरे नयन-लुभावन आये ॥ १ ॥

प ध म प ग प ग रे रे सा सा | सां पं धं पं सा ऽ सा रे सा ग ग
ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ठु . मु . क ठु मु क प ग | कु मु क कुं ज म ग च प
+ ७ १ ३ +

ग ग ग रे ग ध प | ग रे सा ग म ध प म ग ऽ म ध नि रे नि ध प
० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ल च र न ह रि | आ ये हो . . . हो . च प ल च र न
७ १ ३ + ७

ग रे | ग ग रे सा रे म ग म नि रे सा
० ० | ० ऽ ऽ ऽ ० ० ० ० ० ०
ह रि | आ . . . . . ये
१ ३

॥ अंतरा ॥

प ग प सां ध सां सां सां | ग रे ग रे सा सां रे सा नि ध प ध नि रे
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
मे रे प्रा . ण भु | ला . व न आ . . ये . . मे . .
+ ७ १ ३ +

सां नि ध प ग ग रे | ग ग रे सा रे म ग म नि रे सा
ऽ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
. रे न य न लु | भा . . . . व न आ . ये
७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—सिन्धु-बहार

इस राग में गान्धार कोमल और दो निषाद लगते हैं। बाकी सब शुद्ध लगते हैं।

जाति—ओडव-संपूर्ण वादी—तारषडज संवादी—पंचम

समय—रात्री का २ रा प्रहर

राग का मुख्य अंग—म प ध सां, नि ध प, नि नि प म प मग् म रे सा

आरोह—सा म, म प मग् म, म प ध सां

अवरोह—रें नि सां नि ध, प, म प नि प मग् म, रे सा रे सा

विशेष—यह राग सिन्धुरा और बहार के मेल से हुआ है। पूर्वांग में बहार और उत्तरांग में सिन्धुरा इस प्रकार उस का थोडे में नियम हो सकता है। फिर भी कभी पूर्वांग में सिंधुरा और उत्तरांग में बहार करने से राग-स्वरूप अधिक ही कलात्मक दीख पडता है।

आलाप

१ सासांनिं्सांनिंधंसा, सा रे म, मपमग्मग्मरेसा

२ रे रे सा निं सामं, पमपमग्म, म प धसांनिं्सांनिंधप, ध ध प म प धममग्रेम, पमग्मग्मरेसा

३ सारेमपधमग्रेम, म प धसांनिंधप, म प ध म प धमग्रेम, पमपमग्मरेसा

४ म ध निसांसांनिं्सांनिंधसां, सां रेंमग्मग्मरेंसां, रें रें सां निं सां निंध, ध निसांनिंप, म प धसांनिंधप, ध ध प म प धमग्रेम, मपमग्मरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ ^{म}ग्^{म}गमरेसा, म प धमग्रेम, सां रें निसांनिध, ध निसांनिप म प धसांनिसांनिधप, ध मप^{म}ग्^{म}ग्रेम, मप^{म}गमरेसा

६ सारे^{म}ग्^{म}गमरेसा, मप, म प धम, म प धसांनिधप, म प धसां, ध सां रें^{म}ग्^{म}ग्मरेसा, नि सां रेंनिधप, म म ध प^{म}ग्रेम, मप ^{म}गमरेसा

तान

७ सारेग्मरेसांनिंसा, सासाममपपग्मरेसा, सारेमपधधपमग्मरेसा, सारेमपधसांनिधपमनिनिमपग्मरेसा, ग्मधनिसांसांनिनिपम–पध धपमग्रेमग्रेसा, सारेमपधसारेसांनिधपम–मपधसां रेग्रें सांनिध पम–पधसांनिधप–मपधधपम–ग्मरेसा

८ सारेसांनिंधंनिंसारेग्मरेसांनिंसा–ममपपग्मरेसांनिंसा,मपधधपम-पधसांसांनिधपम–पधधपम– ग्मरेसांनिंसा– पधसांसांनिधपम– मपधसारेसांनिधपम-धनिसांरेग्रें सांनि-धनिसांसांनिनिपम-पधध पमग्मरेसांनिंसा

९ पधधपम–धसांसांनिध-सां रें रेसांनि-ग्ममं रेसांनि-सारे रेसांनि-धसांसांनिध–पधधपम–ग्ममरेसांनिंसा

१० रेग्रेसांनिंधं–ग्मरेसांनिंसा–मपनिपमग्–धनिसांसांनिध– सां रें ग्रें सांनि–धनिसांसांनिप–मपधधपमग्रेमग्रेसा

११ धधपमग्रे–सांसांनिधपम–रें रेंसांनिधनि– ग्मं रेंसांनिसां– रें रें सांनिधनि–सांसांनिधपम–धधपमग्रे–ग्मरेसांनिंसा

१२ सारेरे– रेमम–मपप–पधध–धसांसा–सां रें रें– रेंग्रें–सां रें रें-निसांसां–पनिनि–मपप–ग्मम– रेसासा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१३ सासाममपपमग्ममम–पधसासांनिधपम-धनिसां रेंग् रेंसांनि-सां रें
मग् रेंसांनिसां– रें रेंसांनिधनि-सांसांनिपम-पधधपमग्रे- मग्रेसा

१४ निनिमपग्मरेसा–पपमग्–धधपम– सांसांनिध– रें रेंसांनि– ग्मं
रेंसां–निरेंसांनि–धनिसांसां–निपमप–धधपम–पपमग्–ममरेसा

क्र. ३२ राग–सिंधु-बहार, ख्याल; एकताल

मान मनायो राधा प्यारी। मान सरोवर मानकर बैठी कुंजन कुंज लतारी ॥ ध्रु० ॥ दोऊ कर जोरे करत विनती संग लिये ललिता री ॥ १ ॥

| | | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि॒ ध ध नि॒ सां नि॒ प नि॒ म प म॒ग॒ म म प सां॒ध सां ऽ नि॒ ध प म
. . सं . . ग लि ये . . . ल लि ता . . . . .
५ +
प ध म॒ग॒ रे म॒ग॒ सा रे सा
० ० ० ० ० ०
. . री . . . .
९

क्र. ३३ राग-सिंधु-बहार, तीनताल (मध्यलय)

मेरी गति जानकी जीवन राम चौरासी को भटकत आयो कही न पायो विश्राम ॥ ध्रु० ॥ यही लोक परलोक हमारा चरण कमल नित ध्यान। जन साधोके तन मंदिर मे विराजत सीताराम ॥ १ ॥

' सा ऽ रे म प | सां॒ध सां नि॒ ध नि॒ म प ध म॒ग॒ रे ऽ सा ' नि॒
० ० ० ० ० ० | ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ० ०
मे री ग ति | जा . न की जी व न रा . म चौ
७ १ ३ + ७

सा म | म म म म प प म प नि॒ प म॒ग॒ म म म प ध प | सां॒ध सां
० ० | — — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ०
रा . | सी को भ ट क त था . . . यो . क ही . . न | पा .
१ ३ + ७ १

नि॒ सां रें ' सां रें सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा सा ऽ रे म प |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
यो . . वि श्रा . . . . . म मे री ग ति |
३ + ७

॥ अंतरा ॥

म म ऽ प ऽ प ध प॒ध सां सां रें नि॒ ध सां | नि॒ सां रें म॒ग॒ म॒ग॒ म
० ० ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० — | ० ० ० ० ० ०
य ही लो क प र लो क ह मा . रा | च र ण क म ल
१ ३ + ७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे सा रे रे सा नि सा ऽ नि् ध् | म ग् म ध नि् सां नि् प म ग् म ग्
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
नि त ध्या . . . . . न | ज न मा . . धो . के त
+ ७ १ ३ +

म ग् म ग् म रे रे सा | सा रे म प ध सां ध सां नि् ध प म ग रे
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
न मं . दि र मे | वि रा . ज त सी . ता . . . रा .
७ १ ३ +

सा सा ऽ रे म प |
० ० ० ० ० ०
म मे री ग ति |
७

राग—बरवा

इस राग में गान्धार कोमल और दो निषाद लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

वादी—ऋषभ संवादी—पंचम समय—रात्रिमे

विशेष—इस राग में काफी सिंधोरा और देसी राग का भास होता है। यह क्षुद्र गीतार्ह राग समझा जाता है। यह राग धुन की तरह होने से उस को विशेष रूप से सजाकर गाने में कोई आपत्ति नहीं। पूर्वांग में देसी राग का भास अधिकतर आता है और दो निषाद लगाने से इस राग का चलन देसी से भिन्न हो जाता है। जैसे—रे ग रे सा, नि् ध मं पं नीं नीं सा, नि सा रे म ग रे म प नी नी सां रें गं रें नी सां, सां नि् ध म ध प ग् रे, नि नि सा।

धुन की तरह राग होते हुए भी राग अत्यन्त मधुर और आकर्षक है। शुद्ध निषाद भी एक ढंग से लगाते है। उसी से ही 'देसी' राग से यह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भिन्न होता है। जैसे—धं मं पं नीं सा, ग् रे, निं निं सा, ध म प नी नी सां, रें गं् रें नि नि सां, इ.। निम्न लिखित आलाप द्वारा इस राग का ज्ञान स्पष्ट रूप से हो सकेगा।

आलाप

१ सा, रे निं्ᵖधंपं, पनीं ᵗᵃनिंसा, रेग्ᵗᵃरेसा, रे निं सानिंसा

२ सारे, मरेम, मग्सारेसा, ᵐरेम, ᵖमप, धᵖमप, ᵐरेग्ᵗᵃरेनिंसा

३ सारेम, ᵐरेमप, ᵈपध, नीधᵖमप, प ध मपरेम, ग्रे, साᵗᵃनिंसा

४ सा रे म प धप, म प धनि्पधᵖमप, मधपसां, नि्धᵖमप, रे म प ध म प धमग्रे, सारेनिं्धंपं, नींसा

५ मᵖमप, नी, ᵗᵃनिसां, सांरेंसां, मंग्रेंसां, रेंनि्धप, धध प म पसांनीधप, धध प म पधमग्रेग्ᵗᵃरेसा, ᵗᵃनिंधंपंनींसा

६ पनींᵗᵃनिंसा, ᵐग्रेग्ᵗᵃरेसा, पᵖरेग्रेसा, धमप, नीधप, सांप, रेंसांनि्धप, म पनीᵗᵃनिसां, सांपधप, मपᵐग्रेग्रेसा

७ सा रे म पधमग्रे, रे म प ध म पनीᵗᵃनिसां, सां रेंपंᵐग्, रेंग् रेंसां, नि सां रें नि सां रेंनि्धप, रे म प धनीपधᵖमप, धमग्रे, गरेसारेᵗᵃनिंसा

८ ᵐग्रेसा, प, धमग्रे, नीधप, सांप, रेंसां, ᵐगंसांरेंसां, ᵐग्सारे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा, सापं, मु गुरेऽग्, रेसारेमप, मरेग्सारेसा, रेनिंपधंमपं नींसानिंसा

९ सानिंधंपं, पनिंसानींसा, मरेग्सा, मरेमघपमरेग्सारेनिंसा, सामग्रेसा, मरेमघप, सानिधप, सारेंनिधप, मग्रेंग्रेंसानिधप, धसाधसानिधप, धपम, धमग्रे, मग्रेग्सारेनिंसा

तान

१० सारेनिंसा, सारेमग्रेग्रेसा, सारेमपमग्रेग्रेसा, सारेमपधपमग्रेग्रेसा, सारेमपनिधपमग्रेरेग्रेसानिंसा, सारेमपसानिधपमग्रेग्रेसानिंसा, सारेमपनीसारेंसानिंसा रेंग्रेंसानिंसारेंनिधपमग्रेग्रेंसानिंसा

११ सारेनिंसा–मग्रेसा–रेमपम–रेग्रेसा–पधपम–निधपम-रेग्रेसा-सानिधप–रेंनिधप–मपधम–ग्रेमग्–रेगसारेनिंसा

१२ रेग्रेरे–मग्रेसा–पधमप–धपमग्–सारेंनिंसा–रेंग्रेंसा–रेंनिधप-पधपम–रेग्रेसा–रेसानिंसा

१३ सारेरे–रेमम–मग्रेसा–रेमम–मपप–धपमग्– पनिनि-निसासा-रेंनिधप–पधध–मपप–धपमग्–रेग्ग्–सारेरे–निंनिंसासा

१४ सारेनिंसा–पधपम–सारेंसानि– रेंग्रेंसा– मग्रेंसा– निसारेरे–निधपम–पधमप–धपमग्–रेग्रेसा–रेसानिंसा

१५ साम–रेप–मध–पसा–निसा–रेंग्–सारे–निसा–पध–मप– रेग्–सारेनिंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ३४ राग–बरवा, ख्याल; एकताल

ऐसे पिये जानन दीजै, हो। चलोरी सखी! मिली राखिए, नैनन रस पीजे हो ॥ ध्रु० ॥ स्याम सलोनो सावरो मुख देखत जीजै, हो ॥ १ ॥

कवी–मीराबाई

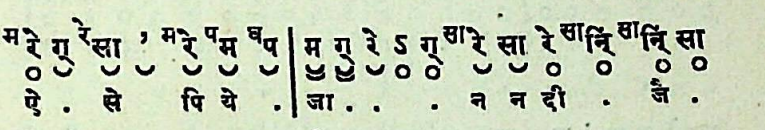

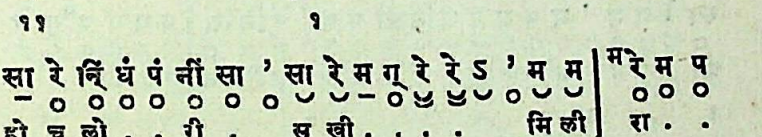

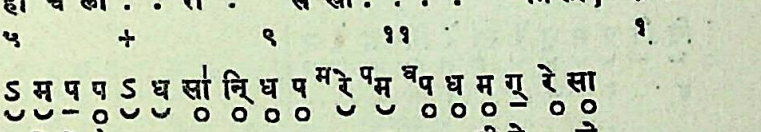

॥ अंतरा ॥

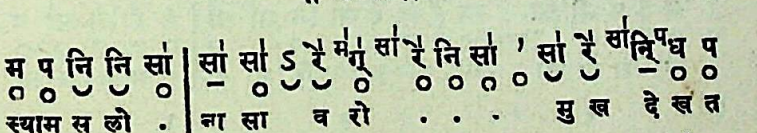

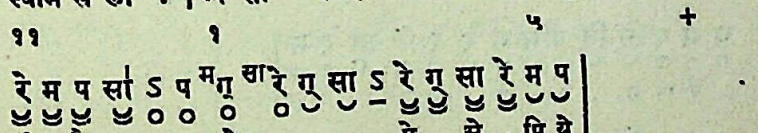

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ३५ राग–बरवा, तीनताल (मध्यलय)

मनरे परसि हरिके चरण। सुभग शीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ॥ ध्रु० ॥ दासी मीरा लाल गिरिधर अगम तारण तरण ॥ १ ॥

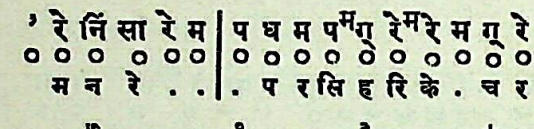

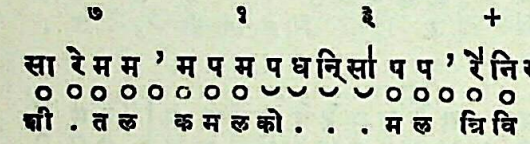

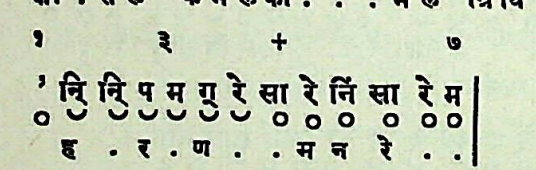

॥ अंतरा ॥

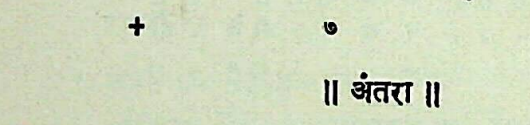

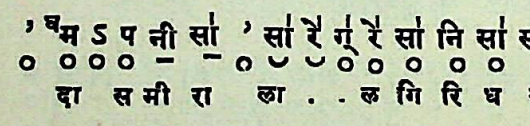

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ३६ राग–धरवा, तीनताल (मध्यलय)

आजु हौं एक-एक करि टरि हौं। के हमहीं, कै तुमही माधव, अपुन भरोसे लरि हौं ॥ ध्रु० ॥ हौं तो पतित सात पीढिनको पतितै ह्वै निस्तरि हौं। अबहौं उधरि नचत चाहत हौं। तुम्हैं बिरद बिनु करि हौं ॥ १ ॥

कवी–सूरदासजी

रे म प ध सां नि ध प मग सा रे निं सा रे | म रे म ऽ प ध रें
० ० ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० – – – ० ०
आ जु हौं . . . प् . क प् . क क रि | ट रि हौं के ह म
३ + ७ १ ३ +

निसां सांनि ध म | प ध नि सां ऽ प म प ध प मग रे सांनि ध प
– – ० ० | ऽ ऽ ० ० ऽ ० ऽ ऽ ऽ ० ० ० ० ० ०
हीं के तु म | ही . . . . मा . . . ध व अ पु न
७ १ ३ +

म रे म प ध म ग | म ग रे सा रे म प ध सां नि
० ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० | ० ० ० ० ० ० ऽ ऽ ऽ ऽ
भ रो . . . से . | ल रि हौं . आ जु हौं . . .
७ १ ३

॥ अंतरा ॥

म प नि नि सां सां रें | मं गं रें सां रें सां नि सां नि नि सां रें
– – ० ० ० ऽ ऽ | ऽ ऽ ० ० ० ० ० – ० ० ० ०
हौं तो प ति त सा . | . . त पी . ढि न को प ति तै .
+ ७ १ ३ +

सांनि् सांनि ध प | म प ध प मग रे ग सा रे निं सा रे म प ध
० ० ० ० | ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ह्वै . नि . | स्त . रि . हौं . . . . . अ ब हौं .
७ १ ३ +

सां नि् ध प प ध | म प गरे ग रे सा रे सांनिं सा नि नि ऽ सां सां
ऽ ऽ ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
. . उ ध रि न | च त चा . ह त हौं . तु म्हे बि र
७ १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें नि॒ ध | म प ध प ^म^ग॒ रे
० ० ० | ◡ ◡ ◡ ◡ ० ०
द बि नु | क . रि . हौ .
१

क्र. ३७ राग–बरवा, तीनताल (मध्यलय)

बाजे मोरि पायलिया कैसे के आवु तुमरे पास मितवा ॥ धृ० ॥ सास ननंद मोरि जनमकी बैरन चरचा करेंगी सब लोगनमे ॥ १ ॥

–संग्रहकार स्व. पं. वझेबुवा

म प ध प ^म^ग॒ रे सा रे निं सा रे | म ऽ प प ध रें ऽ सां नि॒ नि॒
◡ ◡ ◡ ◡ – ० ० ० ० ० ० | – – ० ० ० ० ० ० ० ०
बा . . . जे मो रि पा . य लि | या कै से के आ बु तु म
+ ७ १ ३ +

ध प म प ध | प म प ^म^ग॒ ^सा^रे म प ध प
० ० ◡ ◡ ० | ० ० ० ० – ◡ ◡ ◡ ◡
रे . पा . . | स मि त वा . बा . . . जे
७ १ ३

॥ अंतरा ॥

म प नि नि नि सां सां | ध सां सां सां रें गं॒ ^सां^रें सां सां सां सां
– ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ◡ ◡ ० ० ० ० ० ०
सा स न नं द मो री | ज न म की . . बै र न च र
+ ७ १ ३ +

सां रें ^सां^नि॒ ध प | रे म प ध ऽ म प ^म^ग॒ ^सा^रे ध प ^म^ग॒ रे सा
० ० – ० ० | ० ० ◡ ◡ ० ० ० ० ० ◡ ◡ ० ० ०
चा क रें गी . | स ब लो . ग न मे . बा . जे मो रि
७ १ ३ +

रे निं सा रे |
० ० ० ० |
पा . य लि | या
७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—गुंजी-कानडा

इस रागमे दो गान्धार दो धैवत और दो निषाद लगते है। बाकी सब स्वर शुद्ध है।

वादी—पंचम **संवादी**—षडज **समय**—रात्रीका दुसरा प्रहर

साधारण रूपसे राग का चलन—सा रेंनिं् सानिं् सा, सा रे मग् मग् म रे सा, सा रे ग रेग म, म प मग् म, ध नि् सां नि् प, म प निध् निध् नी सां, नि् सां रें सां ध नि् प म प निध् निध् नि् प, मग् मग् म रे सा

विशेष—यह राग बहार, मालगुंजी, और अडाना रागके मेलसे उत्पन्न हुआ है। यह राग स्वर्गीय गुरुदेव पं. विष्णु दिगंबरजीने बनवाया है। साधारण रूपसे पूर्वांगमे 'मालगुंजी' 'सा रे ग रेग म,' इन स्वरोंसे दीखता है। उत्तरांगमे 'बहार' गाकर अवरोहमे उत्तरांगमे ही 'अडाना' गाना चाहिये जैसे—म ध नि् सां, ध नि् सां रें s सां, नि् सां रें सां निध् निध् नि् प, कभी कभी पूर्वांगमे 'बहार' और उत्तरांगमे 'अडाना' गाकर अवरोहके समाप्तीमे 'रे निं् सा रे ग रेग म' यह स्वर जोडकर रागको समाप्त करना चाहिये। भली भांती आलापोंको देखनेसे रागका स्वरूप स्पष्ट रूपसे ज्ञात होगा।

आलाप

१ सा, रेंनिं्सानिंसा, सारेमग्मग्गमसारेसा

२ सारेंनिं्सानिंसा, सारेमग्मग्गमप, पमग्गमसारेसा

३ सारेमग्मग्गमप, मपनिध्निध्नीप, निमपमग्गमसारेसा, रेंनिंसोरेग रेगम, मपमग्मग्गमसारेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४ रेनिंसारेगरेगम, मपमग्म, नि्ध्नि्ध्नि्प, धनि्सांनि्प, नि्मपमग्मग्म, सारेसा, रेनिंसारेगरेगम, मपमग्मसारेसा

५ रेरेसानिंसाम, मपमग्म, मधनि्सां, सांधनि्प, मपनि्ध्नि्ध्नीप, नि्मपमग्मरेसा, रेनिंसारेगरेगम, पमग्मसारेसा

६ सानि्ध्नि्ध्नीप, मपसांनि्ध्सांनि्सां, ध्नि्सांरेंसां, रेंरेंसांनि्सां सांधनि्प, नि्मपमग्मरेसा, रेनिंसारेगरेगम, पमग्मरेसा

७ ग्मधनि्सां, नि्पमपनि्पमग्म, नि्ध्नि्ध्सांनीसां, ध्नि्सांरें, सांरेंमंग्मंग्मंरेंसां, रेरेंसांनिसांनि्ध, धनि्सांनि्प, नि्मपमग्मग्म, सारेगरेगम, मपमग्मग्मरेसा

८ मग्मग्मसारेसा, गरेगम, नि्ध्नि्ध्नीप, मपसांसांधनि्प, रेंसां, मंग्मंग्मंरेंसांमग्मग्मरेसा, रेनिंसारेगरेगम, पमग्मरेसा

९ सारेगमपमगम, मपनि्ध्नि्ध्नीप, मपसांनि्ध्नीसां, ध्नि्सांरेंनि्सांरें, सांरेंमंग्मंपमग्मंरेंसां, रेनिसांनि्ध, धनि्सांरेंग्रेंसांनि्रेंनिसांनि्ध, धनि्सांधनि्सांनि्प, नि्मपमग्म, नि्ध्नि्ध्नि्प, नि्मपमग्मरेसा, रेनिंसारेगरेगम, पमग्मरेसा

तान

१० सारेग्मपग्मरेसानिंसा, सारेमपनि्पमपग्मरेसा, सारेगमपमगम–नि्ध्नि्सां–धनि्पमपग्मरेसा, सारेमप–नि्ध्नि्सांरेंरेंनिसां–धनि्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पमपग्मरेसा, सारेगमपमगम–नि॰ध्निसारेरेसानि– धनिसारेग्रे सानि्–धनिसारेममरेसानिसाधनिपमपग्मरेसा

११ ग्मप–ग्मप–ग्मरेसानिंसा–सारेग– रेगम–गमप–मगम–धनिसा-धनिसा–निपमप–गमप–गमप–ग्मरेसानिंसा

१२ निनिपमग्मरेसानिंसा–सासा–ध्निपमप–रेरेसानिधनि–ममरेसा निसा–धनिसा–धनिसा–निपमप–गमप–गमप–ग्मरेसानिंसा

१३ ममरेसानिंसा–पपमगमम–ध्धनिनिपम –रेरेसानिधनि– ममरेसा निसा–रेरेसानिधनि–सासानिपमप–ग्मरेसानिंसा

१४ सारेरे– रेगग–गममम–मपप– ध्निध् – निसानि् – सारेरे –रेममम– सारेरे–निसासा–धनिनि–मपप–ग्मम–सारेरे–निंसासा

१५ सारेगमपमगम-मपध्निसानिध्नि–धनिसारेग्रेसानि–धनिसासा निपमप–निध्निनिपमग्म–पपमग्ममरेसा

१६ ग्मम–ग्मम–रेसा–मपप–मपप–गम–निसासा–निसासा–धनि-सारेरे–सारेरे–निसा–ग्ममम–ग्ममम–रेसा– सारेरे – निसासा– धनि–निसासा–धनिनि–पम–पनिनि–मपप·गम-मपप·ग्मम-रेसा

क्र. ३८ राग–गुंजी-कानडा, ख्याल; ताल तिलवाडा

सुंधे सुगंधवा और अबीर चढायो ख्वाजे कुतबदीनके ॥ अं० ॥ सब मिल आये औलिया अंबीया हाजरत अमीर बनाये आये दमरुवा डारे ॥१॥

| | | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प म ग म ऽ
के . . . . .

॥ अंतरा ॥

म ग म म ध नि सां | नि सां सां | सां सां रें ऽ सां ' सां रें रें सां नि
स व व न . . , आ | ये औ ली या अं बी . . .
१

सां सां ऽ नि प नि प नि सां सां ऽ रें सां गं गं रें सां रें सां नि सां
. या हा . . ज र त . अ मी . . . . . .
५

सां नि ध ऽ नी ध नी सां सां सा सां ऽ सां ऽ रें सां नि सां प
र ब ना . . . . ये आ . ये द म रु वा डा
+ १३

नी नी प प म ग म
रे . . . . . .

क्र. ३९ राग–गुंजी-कानडा, ख्याल; एकताल

चलोरी, मुरली सुनिये, कान्ह बजाई जमुना तीर ॥ ध्रु० ॥ मुरली धुनि मधुर बाजै कैसे कै धरो धीर ॥ १ ॥ —कवी–मदनमोहन

ध नि रें नि सां नि प म प प नि | म प म ग म ग म ' म म प सां ऽ
च . लो . . री . . मु र . | ली . . . सु नि ये .
११ १ ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

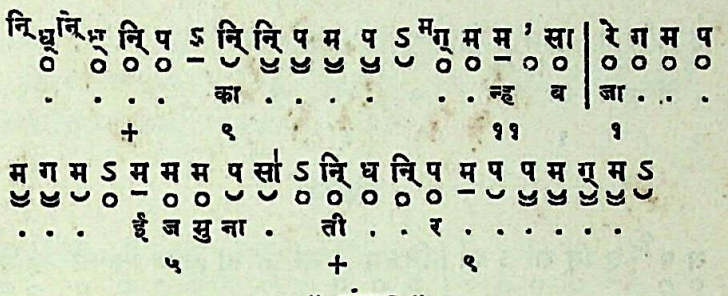

॥ अंतरा ॥

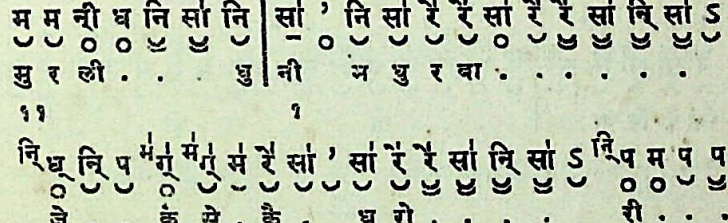

क्र. ४० राग–गुंजी-कानडा, तीनताल (मध्यलय)

पिया मिलन कैसे जाओगी गोरी। रंगरूप सब जात रहो री ॥ ध्रु० ॥ करके सिंगार पिया-घर जैयो। तब देखि है पिया तोरी ओरी ॥ १ ॥ जाय कहो कोई 'यकरंग' पियसो। तुमबिन या गत हो गई मोरी ॥ २ ॥

—कवी-यकरंग

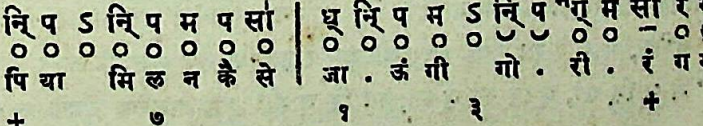

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऽ ग म म | ग॒ म प नि॒ ^नि॒^म प ^म^ग॒ म रे सा
० ० ० ० | ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ० ०
प स ब | जा . . . त र हो . री .
७ १ ३

॥ अंतरा ॥

म प ^नि॒^ध॒ नि॒ सां ऽ सां | नि सां रें सां नि सां नि॒ ध नि॒ सां ^मं^ग॒ं मं
० ० – ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
क र के सिं गा र | पि या घ र जै . यो . त ब दे .
+ ७ १ ३ +

रें सां सां नि सां | रें सा नि॒ ध ध नि॒ सां नि॒ प म ग॒ म प म ग॒ म
० ० ० ◡ ◡ | ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡
खि है पि या . | . . . . तो . . . री . ओ . . . री .
७ १ ३

राग—कौसी-कानडा (मालकंस अंग)

इस राग में गांधार धैवत निषाद कोमल लगते हैं। आरोहमें पंचम वर्ज है।

वादी—मध्यम **संवादी**—षड्ज **समय**—मध्यरात्र

साधारण रूपसे रागका चलन—सा^म^ग॒, म ध॒ नि॒ सां, नि॒ ध॒ म, प^म^ग॒ म रे सा, नि॒ं सा म, ग॒ म ध॒ म, प^म^ग॒ म ग॒ रे सा, म ध॒ नि॒ सां, ध॒ नि॒ सां ग॒ं, सां ग॒ं मं ग॒ं रें सां, सां नि॒ ध॒ म, प^म^ग॒, म ग॒ रे सा

विशेष—कौसी कानडा मालकंस और बागेश्री अंगसे गाते है। बागेश्री अंगका कौसी कानडा अलग दिया है। पूर्णतया मालकंस राग गाकर अंतमे 'प^म^ग॒, म ग॒ रे सा' यह स्वर जोडनसे रागका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। 'म ध॒ नि॒ सां, ध॒ नि॒ सां ग॒ं सां, सां नि॒ ध॒ म' यह मालकंस अंगके स्वर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरसाते है। और 'प^{म}ग, म रे सा' 'म ग्^{म}रे सा' यह स्वर कानडा दरसाते है। मालकंस अंग और बागेश्री अंग यह दोनों रूप स्वतंत्र होकर योग्य नियमसे गानेसे परिणामकारक होते है।

आलाप

१ सा$^{नि}$ध्$^{सा}$निसा, ध् नि् सा^{म}ग्^{म}ग्रेग्सा

२ ध्नि्साम, ^{म}ग्^{म}ग्, मपम^{म}ग्रेग्सा

३ नि्ध्$^{सा}$नि्$^{सा}$साम, म प् मम^{म}ग्, मध्$^{नि}$ध्$^{नि}$ध्मग्, सा ग् म प् मग्रेग्सा

४ ध् नि् साम^{म}ग्, मध्$^{नि}$ध्, म ध् नी म ध्नीध्म^{म}ग्, सा ग् मध् मग्, सा ग् मपमग्रेग्सा

५ नि् सा ग् म$^{नि}$ध्$^{नि}$ध्, म ध्नीध्मग्, म ध् नीसा$^{नि}$ध्$^{सा}$निसा, ग् ग् सा निसा$^{नि}$ध्$^{नि}$ध्, म ध् नि् सा ध् नीसा$^{नि}$ध्मग्, ग् म ध्नीध्मग्, सा ग् म प् मग्रेग्सा

६ नि् सा ग् म ध् निसा$^{नि}$ध् म ग् म ध् निसा, ध् नि् सा ग्, सा ग् म ग् रेसा, निसा$^{नि}$सा ग् सा निध्, म ध्नीध्मग्, सा ग् मध्मग्, मपमग्रेग्सा

७ ^{म}ग्^{म}ग्रेग्सा, पमग्रेग्सा, $^{नि}$ध्$^{नि}$ध्मग्, नी$^{नि}$ध्, सा$^{ऽनि}$^{म}ग् ^{म}ग्रेसा, ^{म}ग्^{म}ग्रेसा, निध्म, मपमग्, सा ग् मध्ग् म ग्रेग्सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८ सा नि ध् नि ध् मग्, मसा नि ध्, नि ग् ऽसा, मग् रे सा, सासानिध्म, साध्मग्, सापमग्, सामग्रेग्सा

तान

९ सागमग्रेसा, निंसागमधमगमपमग्रेग्सा, निंसाग्मधनीध्मग्म पमग्रेग्सा, निंसाग्मध्नीसानिध्मग्मपमग्रेग्सा, निंसाग्मध्नि सांग्सानिध्मग्मपमग्रेग्सा

१० निंसाग्मधध्–मधध्–मधध्–मग्मपमग्रेग्सा, निंसाग्मध्नीनी-ध्नीनी– ध्मग्मपमग्रेग्सा, निंसाग्मध्निसासा– निसासा– निसासा–निध्मग्मपमग्रेग्सा

११ निंसाग्मधध्–मधध्–मधध्– मग्– ग्मध्नीनीं– ध्नीनी– ध्म– ग्मध्नीसासा–निसासा–निसासा–निध्–ध्नी–सांग्ग्– सांग्ग्– सानि–ध्नीसामम–ग्मम–ग् रेग्सा–ध्नीसांग्ग्–सांग्ग्–सानि ध्म–ग्मध्नीनी–ध्नीनी–ध्म–ग्मपप–मपप-मग्रेग्मम-ग्मम-ग्मम–ग्रेग्सा

१२ सागमध्–ग्मध्नी–मध्निसा–ध्निसांग्– मग् रेसा– ग्सानिध्– निध्मग्–ध्मगम–पमग्रेग्सा

१३ मगरेसानिंसा–पमग्रेग्म–ध्नीध्मग्म– निसानिध्मध्– सांग्सा निध्नी– ग्मग् रेसानि-सांग्सानिध्नी-निसानिध्मग्-मपमग्रेसा-

१४ निंसाग्मधमग्म–ध्नीसानिध्मग्म–ध्नीसांग्सानिध्नी– सांग्म ग् रेसानिसा– निंग्सानिध्मग्म-मध्निसानिध्मग्-ग्मपपमग्रेग्-सागमग्रेसानिंसा

१५ ग्मग्सानिंसा–ध्नीध्मग्म–निसानिध्मध्–सांग्सानिध्नी– ग्म ग् रेसानि–सांग्सानिध्म–मध्नीध्मग्–सागमपमग्–रेग्मग्रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६ ग्मग्सा–ध्न्ीध्म–सांग्सांन्ि–ग्मग्सा–सा रेसांन्ि– ध्न्ीध्म–मपमग्–ग्मग्सा

१७ मग्रेग्मग्रेसा–न्िध्मध्न्िध्मग्– ग्सांन्िसां रेसांन्िध्– मंग् रेग् मंग् रेसा–ग्सांन्िसां रेसांन्िध्–न्िध्मध्न्िध्मग्–पमग्रेग्मग्सा

१८ ग्मग्मग्सा–मपमपमग्–ध्न्ीध्न्ीध्म–न्िसांन्िसांन्िध्– ग्मंग्मं ग्सां–सां रेसांरेसांन्ि–ध्न्ीध्न्ीध्म– मपमपमग्– ग्मग्मग्रे–रेग्रेग्रेसा

क्र. ४१ राग–कौमी-कानडा, (मालकंस अंग) ख्याल; एकताल

साधो राम अनूपम बानी। पूरा मिला तो वह पद पाया। मिटगई खैचातानी ॥ धृ० ॥ उलटा नाद कँवल के मारग गगना माहि समाया ॥१॥

–कवी दरिया साहेब

ग् न्िं सा सा म | म मग् ग् मग् मप ऽ म मग् म ग् सा रे ग् सा सा
ऽ ऽ ऽ ऽ | – ० ० ० ० ० ० – ० ० ० ऽ ऽ –
सा . धो . | रा . म अ नू प म बा . . . . नी
१ ५ +

सान्िं ध्ं न्ीं सान्िं सान्िं सा ऽ न्िंसा | सा सान्िं सा म म म पम ग्
० ० ० ० ० ० ० ० | ऽ ऽ ऽ ऽ – ० ०
पू रा . मि ला . . | तो ब ह प द पा था .
९ ११ १

' ग् ग् म ध् न्ि सां ' न्ि ध् म ग् मप म ग् म ग् रे ग् सा सा ग् न्िं
० ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० ० ० ० ० ऽ ऽ ऽ ऽ ० ऽ
मि ट ग ई . . खै चा . ता . . . . . नी सा
५ + ९ ११

सा सा म | म मग् ग् मग् मप ऽ म मग् म ग् सा रे ग् सा सा ऽ ऽ
ऽ ऽ ऽ | – ० ० ० ० ० ० – ० ० ० ऽ ऽ – – –
. धो . | रा . म अ नू प म बा . . . . नी .
१ ५ + ९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by.eGangotri

॥ अंतरा ॥

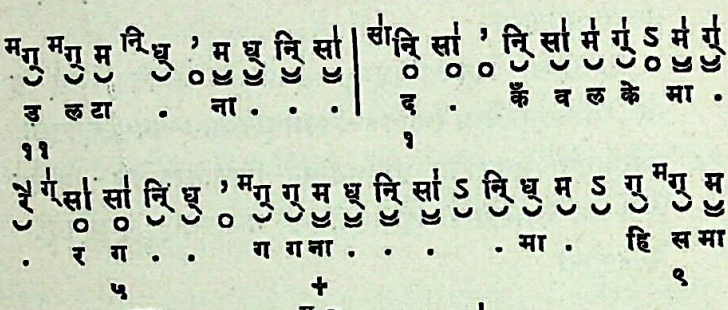

क्र. ४२ राग–कौसी-कानडा, (मालकंस अंग) तीनताल (मध्यलय)

अब हरी ! एक भरोसे भारी । नहि कछु साधन ग्यान भगतिको, नहि विराग उर हेरो ॥ धृ० ॥ परखे सकल बंधु, नहि कोऊ विपद कालको नेरो । दीन दयाल दया करि राखहु, भवजल बूडत बेरो ॥ १ ॥

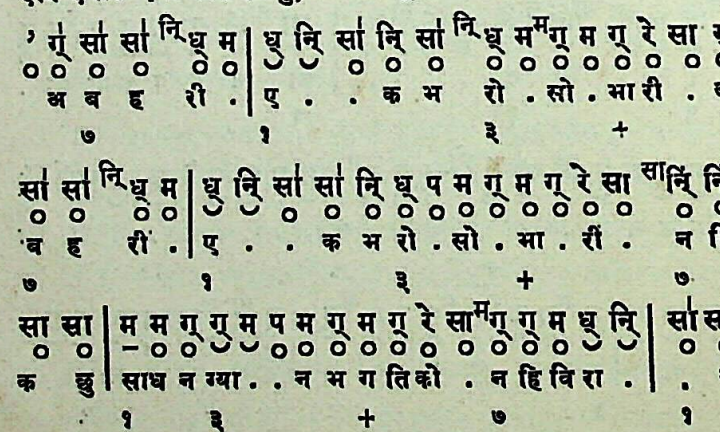

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि॒ध॒ म ग॒ म प म ग॒ रे ग॒ म ग॒ रे ग॒ सा ग॒॑ सा॑ सा॑ नि॒ध॒ म |
उ र हे . . रो . . . . . अ ब ह री . |
३ + ७

॥ अंतरा ॥

म ग॒ ग॒ म नि॒ ध॒ ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ सा॑ सा॑ सा॑ सा॑ ग॒॑ नि॒ सा॑ सा॑ | नि॒ नि॒ सा॑
प र खे स क ल बं . . धु न हि को . ऊ | वि प द
१ ३ + ७ १

म॑ ग॒॑ म॑ ग॒॑ सा॑ ग॒॑ ग॒॑ सा॑ नि॒ सा॑ ऽ नि॒ सा॑ ग॒॑ सा॑ नि॒ ध॒ | ध॒ नि॒ सा॑
का . ल को चे . . . . . रो | दी . .
३ + ७ १

सा॑ सा॑ नि॒ ध॒ म म ग॒ म प ऽ म ग॒ म ग॒ रे सा | सा ग॒ म ध॒ म ध॒
न द या . ल द या . क रि रा . ख हुं | भ व ज ल बू .
३ + ७ १ ३

नि॒ सा॑ सा॑ सा॑ नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म ग॒ म ग॒॑ सा॑ सा॑ नि॒ ध॒ म |
. . ड त . बे . . . रो . अ ब ह री . |
+ ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—कौसी-कानडा (बागेश्री अंग)

इस राग में गान्धार निषाद कोमल लगते हैं।

वादी—मध्यम संवादी—षडज समय—मध्यरात्र

साधारण रूपसे राग का चलनः—सा रेनिं सा, मग् म रे सा, प म प ध मग् म रे सा, मग् म नि् प, म नि्ध नि्ध नि् प, म प ध म, नि् सां, रें नि् सां नि् प, म ध नि् रें नि् सां, नि् प, ध म, म प मग् म रे सा

विशेष—यह कौसी-कानडा बागेश्रीः अंगका है। इस राग को गाते समय कानडा और बागेश्रीको मिलाकर गाते है। 'ग् म रे सा, रे निं् सा मग् म ध नि् प, म ध नि् रें नि् सां नि् प,' इन स्वरोंसे इस रागको गाते है। 'ग् म ध, म ध नि् रें सां' इन स्वरोंसे बागेश्री अंग दीखता हैं। 'ग् म रे सा, रे निं् सा नि् प' इन स्वरोंसे कानडा दीखता है। यह स्वरूप भी अलग हैं। इस राग को योग्य नियम से गानेसे रागका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है।

आलाप

१ सा रेनिं् सा निंसा, निंसा मग् मग्म सा रेसा

२ रेनिंसा, मग् मग्मप, नि् मुप मग् मग्म रे सारेसा

३ रेनिंसा, मग् मग्मप, धनीप, मधनिंरें निं सां, निप, निंनि् प मुप मग् मग्म रे सारेसा

४ मग् मग्मनिप, मपसां निं सां, नि् सांरेसां, रें नि्सांनि् पनीप, मध निंरें निं सां निप मगम सा रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ निपसा, निसा, मगमरेसा, रेनिसाधनिप, मगमधनिरेंनिसा निप, निनि प म पमगमसारेसा

६ ग म नि प सानिसानि प म ग म पसानिसा, नि सा रेसा, मगमग, मगमग, मधनिरेंनिसा, निप, निनि प म ग म नीप, नि म पमगम रे सारेसा

७ निप, निमपनिमप, मगमग, मधनिरेंनिसा, मगमसारेसा, रे सा निसाधनिप, नि प म गमग, म ध नि रेंनिसा प नि म पमगमग म रे सा रेसा

तान

८ रेसानिंसा, गमरेसानिंसा, निंसागमपगमरेसानिंसा, निंसागमप, निमपगमरेसानिंसानिंसागमधनिरेंरेंनिसा, निपमपगमरेसानिंसा, निंसागमधनिरेंरेंनिसा, गमरेसानिसा, निपमपगमरेसानिंसा

९ गमम–गमम–रेसानिंसा–पनिनि–पनिनि–मपप–गमम–रेसानिंसा–मधध–धनिनि–निरेंरें–निसासा–पनिनि–मपप–गमम–रेसानिंसा

१० सारेरे–सारेरे–निंसा–पनिनि–पनिनि–मप–धनिनि–निरेंरें–निसा–गमम–गमम–रेसा–पनिनि–पधध–मप–गमम–गमम–रेसा

११ रेरेनिंसा–निनिमप–रे रेसानि–मम रेसा– निनिमप– धधमप– गगमम– रेसारेरे–निंसा

१२ निंसारेरेनिंसा– गगममरेसानिंसा– निनिमपगम– धनिरेंरेंनिसा– गम रेसानिंसा–मपनिनिमप–गमरेसानिंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१३ पनिनि–मपप–ग्ममम–ध्निनि–निरें रें–निसांसां–ग्ंमंम– सांरें रें–
निसांसां–पनिनि–मपप–पधध–मपप–ग्ममम–रेसानिंसा

१४ सागमपग्म–मधनिरेंनिसां–ग्ंमं रेंसांनिसां–पनिपमग्म– मधनिरें–
निसां–धनि–मप–ग्म– रेसानिंसा

१५ ममम–पपप–ग्मरेसानिंसा–धधध– निनिनि– रेंरेंनिसां– ग्ंग्ंग्–
मंमंम–रेंसांनिसां–धधध–निनिनि–पमग्म–ममम–पपप ग्मरेसा

क्र. ४३ राग–कौसी-कानडा (बागेश्री अंग), ख्याल; एकताल

आजुरी नंदलाल निकस्यो, तुलसी बनतें बनकैं मुसकातो ॥ धृ० ॥ देखे बनै न बनै कहत अब, सो सुखजो मुखमे न समातो ॥ १ ॥

कवी–रसखानी

नि	प	ध	म	प	प	प	नि	म	ग	म	ग	म	ग	म	'	म	प	म	ग	म	ग
०	०	⏑	⏑	⏑	⏑	⏑	⏑	—	—	०	०	०	०	०	०	⏑	⏑	—	—	०	०
आ	जु	री	.	.	नं	द	.	ला		.	.	.	ल	.		नि	क	स्यो	.		
११								१					५					+			

म	ग	म	रे	सा	रे	सा	'	निं	सा	म	ग	म	ध	नि	रें	निं	सां	'	नि	प
०	०	⏑	⏑	—	—	०	⏑	⏑		—	—	०	०	०	०	—	—	०	⏑	⏑
.	.	तु	ल	सी	.		ब	न		ते	.	ब	न	कै	.		.		मु	स
९				११						१						५				

म	ग	म	सा	रे	सा	रें	निं	सा
—	—	०	०	—	—	०	०	
का	.		.	तो	.		.	
+			९					

॥ अंतरा ॥

नि	म	प	सां	ऽ	नि	सां	ऽ	सां	नि	सां	रें	ऽ	नि	सां	ऽ	सां	रें	नि	सां	ऽ		
०	०	०	⏑	⏑	⏑	—	—	⏑	⏑	⏑	⏑	⏑	⏑	०	—	⏑	⏑	⏑	⏑	⏑		
दे	.	खे		ब		नै		न	ब	नै	.			.		क	.	ह	.			
११						१								५								

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

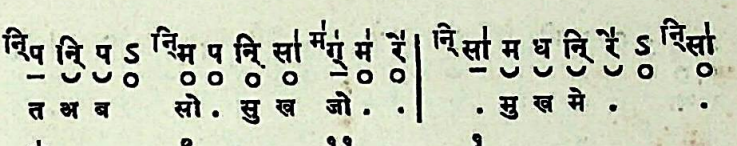

क्र. ४४ राग–कौसी-कानडा (वागेश्री अंग), तीनताल (मध्यलय)

कानन दे अंगुरी रहिबो, जबही, मुरली-धुनि मन्द बजै है ॥ धृ० ॥
माईंरी, वा मुखकी मुसुकानी, संभारी न जैहै न जैहै न जैहै ॥ १ ॥

कवी–रसखानी

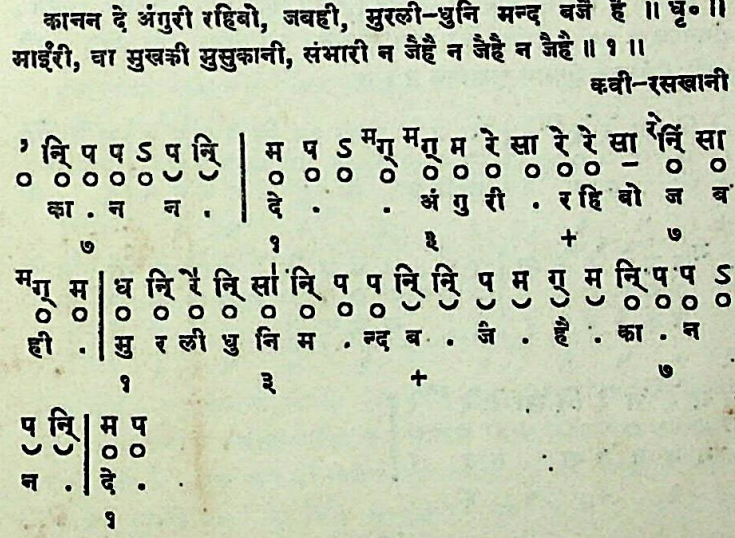

॥ अंतरा ॥

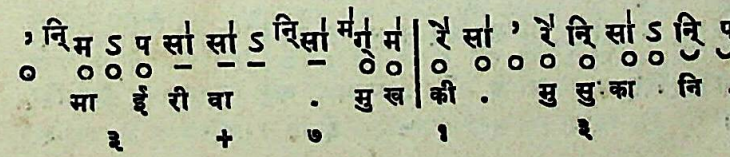

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म ध ऽ नि रे नि सां ऽ नि प | नि प ऽ म प गु मं प नि सां रें
० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
संभा रि न जै है . | न जै है न जै . . . . .
+ ७ १ ३

सां नि प म रे सा नि प प ऽ प नि |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
है . . . . . का . न न . |
+ ७

क्र. ४५ राग–कौसी-कानडा (बागेश्री अंग), द्रुतएकताल

तना तदरे। दानि दानि तुं तननन। देरेना तदरे तदरे। तुंननन तुंननन। तुंननन ॥ धृ० ॥ नादिर् दिर् तान देरेनान। तन तुंदिर् दिर् दिर् तदारे दानि। तुंननन तुंननन तुंननन ॥ १ ॥

रे निं सा रे रे सा रे | म गु म रे ऽ सा सा नि प प प प | म नि प म गु
० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० —
त ना . त द रे | दा नि दा नि तुं . त न न न | दे रे ना
+ ५ ६ १ ३ + ५ ६ १

ऽ म गु म रे रे रे सा | म ध ऽ ध ध ध नि रें ऽ सां नि सां | नि नि
— ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ०
त द रे त द रे | तुं . न न न तुं . न न न | तुं .
३ + ५ ६ १ ३ + ५ ६ १

प म रे सा रे निं सा रे रे सा रे |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
न न न न त ना . त द रे |
३ + ५ ६

॥ अंतरा ॥

नि म प सां ऽ सां सां रें नि सां सां ऽ सां | रें नि सां मं गु मं रे
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ०
ना दिर् दिर् ता न दे रे . ना न | त न तुं दिर् दिर्
१ ३ + ५ ६ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	नि्	सां	सां	प	नि्	प	म	ध	ऽ	ध	ध	ध	नि्	रें	ऽ	सां	नि्	सां
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिर्	त	द	रे	दा	.नि		तुं	.	न	न	न	तुं	.	न	न	न		
	+		५		६		१			३		+		५		६		

नी	नी्	प	म	रे	सा
०	०	०	०	०	०
तुं	.	न	न	न	न
१			३		

राग—अभोगी-कानडा

इस रागमें पंचम और निषाद वर्जित है। गान्धार कोमल है और सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

जाति—ओडव. वादी—षड्ज. संवादी—मध्यम.

समय—रात्री का २ रा प्रहर

राग का मुख्य अंग—सा सांध सांध सां रे मग् मग् म रे सा

आरोह—सा रे मग् म सांध सां

अवरोह—सां सांध सांध म मग् मग् म सा रे सा

विशेष—यह कानडा अंगका राग है। दाक्षिणात्य 'अभोगी' राग और हमारे उत्तर भारतीय संगीत के 'कानडा' राग के मेलसे इस राग की उत्पत्ति हुई है। इस राग को गाते समय दुर्गा राग की छाया दिखलाई देती है। दुर्गासे बचाने के लिये अवरोहमें 'सां ध म ग् म रे सा' इन स्वरों की संगीत का बार-बार उपयोग किया जाता है। अन्दोलित गान्धार से और साथमे 'म रे सा' यह स्वर लेनेसे ही कानडा का स्वरूप स्पष्ट होता है 'म ग् रे सा' इस प्रकार सीधे स्वर लेनेसे मूलतः कर्नाटकी 'अभोगी' का स्वरूप पूर्ण रूपसे स्पष्ट होता ह। तथा बागेश्री, काफी रागोंका भी भास होगा। इसलिये इन बातोंका ध्यान रखकर इस रागको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाना चाहिये। इस रागमें तान लेते समय वक्र अथवा दो दो स्वर लेकर तानें ली जाती है। इस रागकी प्रकृति गंभीर होते हुवे मक्कीरस की है। अतः इसका प्रस्तार बहुत श्रुति मनोहर होता है।

आलाप

१ सा सा ध सा धंसा, सारे म ग् म ग् म रे रे धंसा

२ सारेम म रे, मधधम म ग् म ग्, मरेसा, सा रे धंसा

३ सारेम, मध घ म, मध सा धसा, सा सा धम, मध सा ध सा धम, मधम म ग् म ग्, मरेसा, सा रे धंसा

४ सारेमध सा ध सा धम, म सा ध सा धसा, सा रे म रे रे धसा, धसाधसाधु सा रे सा धम, म सा धसा सा धम म ग् म ग्, मरेसा, रे धंसा

५ सारेमधसा सा धम सा धसा, धसा रे म रे रे म ग् म ग् म रे सा, धसा रे धसा रे सा सा धम, धसाधसा सा धम म ग्, मधम म ग् म ग्, मरेसा रे धंसा

६ रे धंसा, म म ग् म ग्, ध घ म, सा सा ध, रे सा, म ग् म ग् म रे सा, म ग् म ग् म रेसा, सारे धम म ग्, मरेसा

७ म ग् म ग् म रेसा, सा ध सा धम, रे सा सा ध, म ग् म ग् म रे सा, सासाधम, साधम म ग्, सामरेसा रे धंसा

८ धंसाधंधंसा, रे म रे रेम, मध ममध, धसाधधसा, रे म रे रे म रे, रे म रे रेमरे, म ग् म ग् मरेसा

९ सासा सा धम सा धसा, सारे, सा रे म रे, धसाध, मधम, रेम म ग् म ग् मरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तान

१० सारेमरेसासा, सारेमधधमग्ममरेसा, सारेमधसांसांधमग्मरेसा, सारेमधसांरेंरेंसांसांधमग्मरेसा

११ सारेमम-ग्मम-रेसा, सारेमधध-मम-ग्मम-रेसा, सारेमधसांसा-धसांसा-धसांसा-धम-गमम-ग्मम-रेसा

१२ सारेरे-रेमम-मधध-धसांसा-सांरेंरें-रेंमम-सांरेंरें-धसांसा-मधध-ग्मम-रेसासा

१३ मम-रेमम-रेमम-धध-मधध-मधध-सांसा-धसांसा-धसांसा-रेंरें-सांरेंरें-सांरेंरें-सांसा-धसांसा-धसांसा-धध-मधध-मधध-मम-ग्मम-ग्मम-रेसा

१४ ममरेसा-धधमम-सांसांधध-रेंरेंसांसा-मंमंरेंरें-सांसांधध-ममग्ग्-ममंरेरे-सासाधंधं-सा

१५ सासा-रेरे-मम-रेरे-मम-धध-मम-धध-सांसा-धध-सांसा-रेंरें-सांसा-रेंरें-मंमं-धध-सांसा-रेंरें-मम-धध-सांसा-रेरे-मम-घध-गग्-मम-रेसा

१६ मग्ममरेसा-ममधधमम-धधसांसांधध-सांसांरेंरेंसांसा-धधसांसांधध-ममधधमम-ग्ग्ममरेसा

१७ ग्मम-रेसा-मधध-मग्-धसांसा-धम-सांरेंरें-सांध-धसांसा धम-मधध-मग-ग्मम-रेसा

१८ सासा-रेरे-मम-धध-सांसा-रेंरें-सांसा-धध-मम-ग्ग्ममरेसा

१९ सासासा-रेरेरे-मम-रेरेरे-ममम-धध-ममम-धधध-सांसा-सांसांसा-धधध-मम-धधध-ममम-ग्ग्-ममम-रेरेरे-सासा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ४६ राग–अभोगी-कानडा, झपताल

जयति श्रीराधिके सकल सुख साधिके तरुनि मनि नित्य नवतन किसोरी ॥ ध्रु० ॥ कृष्ण तनु लीन मन रूपकी चातकी कृष्ण मुख हिम किरिनकी चकोरी ॥ १ ॥ —काव्य–गदाधर भट्टजी

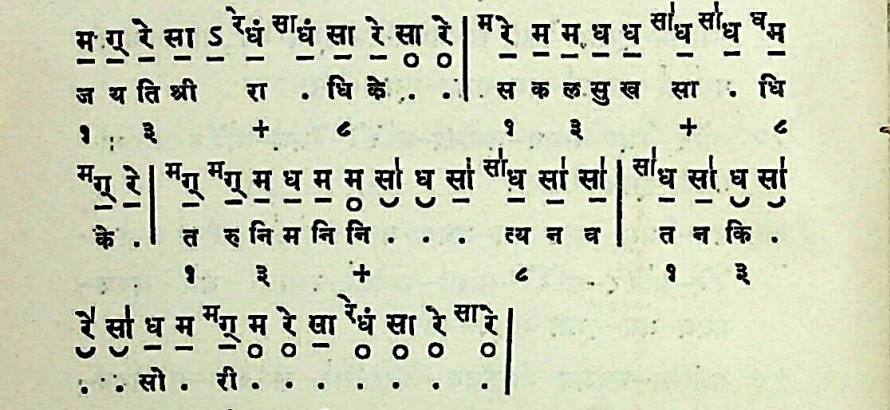

॥ अंतरा ॥

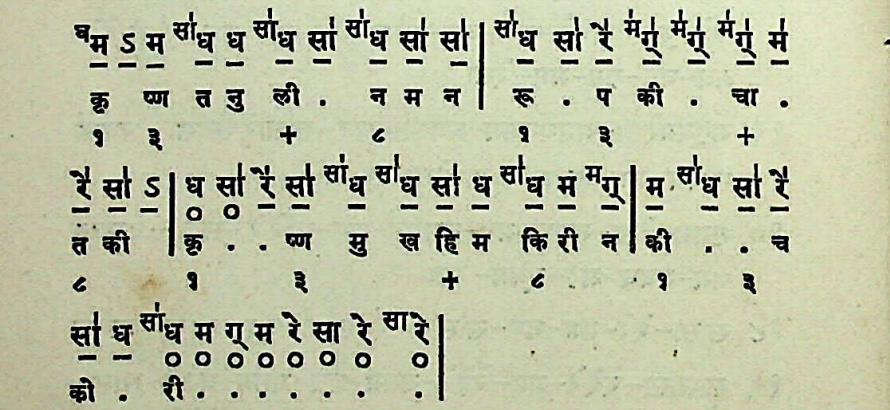

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ४७ राग–अभोगी-कानडा, ख्याल; एकताल

पार गया चाहै सब कोई। रही उस पार वार नहि होई ॥ ध्रु० ॥ पार कहै उस वार से पारा। बिन पद परसे भ्रमै गँवारा ॥ १ ॥

—कवी–रैदास

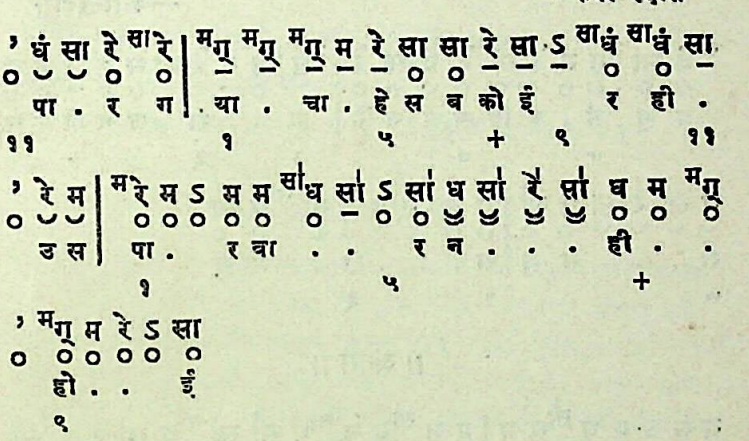

॥ अंतरा ॥

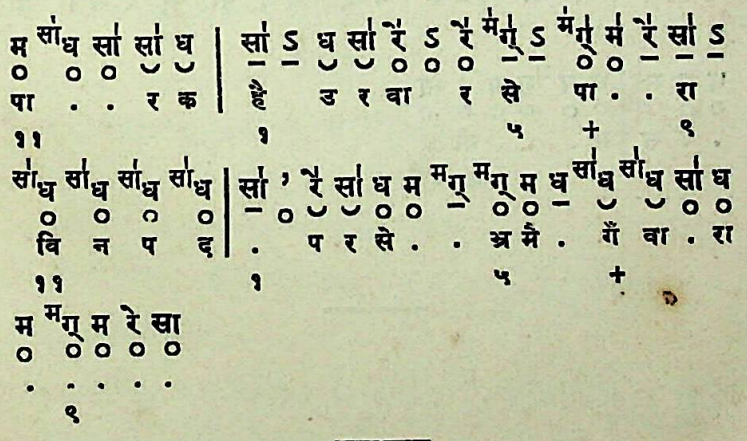

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ४८ राग–अभोगी-कानडा, तीनताल (मध्यलय)

प्रभु संगति सरन तिहारी। जग जीवन राम मुरारी ॥ ध्रु० ॥ गली गली को जल बहि आयो। सुर सरी जाय समायो ॥ १ ॥

—कवी–रैदास

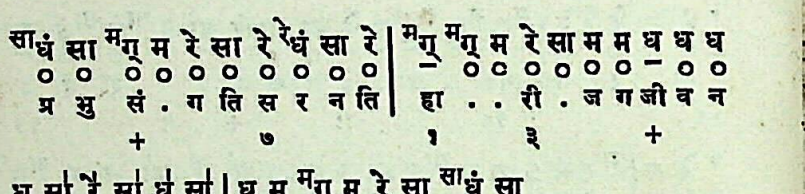

॥ अंतरा ॥

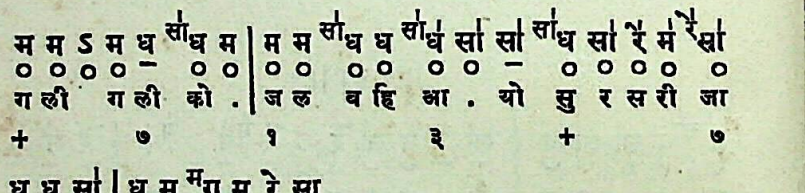

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—काफी-कानडा

इस राग में गान्धार और निषाद कोमल लगते हैं। बाकी सब शुद्ध लगते हैं।

जाति—वक्र-संपूर्ण वादी—पंचम संवादी—षडज

समय—रात्री का २ रा प्रहर

राग का मुख्य अंग—सा नि॒ सा रे सा॒रे नि॒ ध प, म॒ग॒ म रे सा

आरोह—नि॒ सा रे म॒ग॒, म प ध नि॒ सां

अवरोह—सां रें नि॒ ध प, म प म॒ग॒ म रे सा

विशेष—यह राग काफी और कानडा के मेलसे उत्पन्न हुवा। कानडाका स्वरूप 'नि॒ प' स्वरसे प्रगट होता है। अवरोह में गान्धारका वक्रत्व और गान्धार पर आंदोलन आनेसे कानडा स्वरूप संपूर्ण तथा दीख पडता है। रे ग॒ सा रे नि॒ ध प यह स्वर समूह बार बार लेना चाहिये। साथ साथ 'रे ग॒ रे ग॒ रे सा रे सा' 'नि॒ सा नि॒ सा रे' इन स्वरोंसे रागकी सुंदरता बढती है। साधारण रूपसे पूर्वांगमे कानडा और उत्तरांगमे काफी ये राग आनेसे राग स्वरूप शुद्ध रूपसे दीखता है।

आलाप

१ सा, नि॒सारेसा, नि॒धनि॒प, साऽनि॒रेसा

२ साऽनि॒रेसा, म॒गमरेसा, म॒गमप, पम॒गमरेसा

३ सारेसा॒रेम॒ग॒, मप, म पधम॒गम॒गमरेसा

४ सारेसा॒रेम॒ग॒, मरे, सा॒रेनीधप, ध प म पधम॒ग॒, रे गमरेसा, नि॒साऽनि॒सारेसा

५ सारेम॒ग॒म॒ग॒, म प धनि॒धप, म प नि॒ पसां, सांनि॒धप, म प ध म पधमग॒रे, रेग॒रेग॒ रे सारेसांनि॒सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६ सारेमप, म प नि प सां, निसारेसां, रें रें सांनिसां रें, सां रेंग् मं रेंसां, नि प म पसां, निप, नि प म प धग्मरेसा

७ सारेंमग्, रे ग्मप, ग मनीधप, मपधनिसां, सांनिसांरें, सां रें ग् रेंग् रें सां रेंसां, सांधनीप, म पनीप, ध प मपमग्, मग्मरेसा

८ रेसा, नींधनिंप, मं पंनींसा, मग्रेग् रे सारेसा, पमग्, धनी पधप, सांनिप, म प नि सां रेंमग्, मं रेंसां, रें सां निसांनिप, म पधमग्, रे ग्मरेसा, रेनिंसांनिंसारेसा

तान

९ सारेग्रेसांनिंसारेसा, सारेग्मरेसांनिंसा, सारेग्मपग्मरेसांनिंसा, सारेमपधनिधपमपग्मरेसा, सारेमपधनिसांनिपमग्मरेसा, सारेम पनिसांरेंसांनिधपमपग्मरेसांनिंसा, सारेमपधनिसांरेग्रेंसांनि, सांरेग्मरेंसांनिसां, निधपमपधग्मरेसा

१० सारेमग्–रेग्–रेग्–रेसा, सारेमपधनि–धनिपध–पध–मप-ग्म-रेग्–रेग्–रेसांनिंसा, सारेमपधनिसांरेग्रेग्–रेग्–रेंसां–रेंसांनि सांधनि–धनि–पध–मप–ग्म–रेग्–रेग्–रेसारे, सा

११ रेग्रेग्रेसा–मपग्मरेसा–पधमप–ग्म– रेग्रेसा–धनिपधमप–निसांधनिधप–सांरेंमग्रेंसां–निसांनिपमप–मनीपमग्म, ग्मरे सांनिंसा

१२ सारेरे–रेग्ग्–ग्मम–मपप–पधध–धनिनि–निसांसां–सांरेंरें–रेंग्ग्–सांरेंरें–निसांसां–पनिनि–मपप–पधध–मपप–ग्मम–रेसांनिंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१३ सारे–रेम–मप–पध–धनि–निसां–सांनि–निप–पम–गमरेसा

१४ रेगरेरेमगरेसा–धनिधधसांनिधप– रेगं रे रेगंरेसांनि– गंमगंग–मंमं रेंसां–सांरेंसांसां–रेंसांनिप, पनिपप-निपमग–गमगग-ममरेसा

१५ रेमरे रेमम–पनिपपधध–निसांनिनिसांसां–रेगं रे रेंमगं–सांरेंसां-सां रे रें–धनिधनिसांसां–मपमपनिनि–गमगमपप–गमगमरेसा

१६ मगरेसानिंसा–धनिधपमप–सांरेंसांनिधनि– गंमं रेंसांनिसां– निरें सांनिपम–पनिधपमग–गमरेसानिंसा

१७ गमगमगमपमरेसा–पनिपनिपनिसांनिपम–सांरेंसांरेंसांरेंगंमं रेंसां– धनिधनिधनिपनिपम–गमगमगमरेसा

१८ गंमप–गमप–गमपमगम–धनिसां–धनिसां– निपमपगम– पधनी– धनिसां– निसांरें– सांरेंगं रेंसांनि– पनिसांनिपम– पधनिधपम– गमरेसानिंसा

१९ पमगमरेसा–निधपमगम–सांनिधनिधप– गं रेंसांनिधनि–गंमं रें– सांनिसां–रेंसांनिधपम–सांनिधपमग–गमरेसानिंसा

२० रेसानिंसा–पमगम–निधपम–सांनिधप– रेंसांनिसां– मंगं रेंसां– रेंसांनिध–सांनिपम–निपमग–गमरेसा

क. ४९ राग–काफी-कानडा, ख्याल; धीमा त्रिताला

सुखकर आईरे पियाके संग दुरनी जठनी आई कर पून मांग ॥ धृ० ॥
टूटे बाल छूटे मुखपर तरकी अंगिया है बिछुडे अंग ॥ १ ॥

सा	रे	म	गु	सा	रे	नी	ध	नी	प	ऽ	ध	ध	प	म	प	ऽ	प	ध	म	म	गु	ऽ
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०	०	०	०	–	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०	–	–	
सु	ख	क	र			आ	.	.	.		.	.	.	.	.		इ	रे	.	.		
						१											५					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

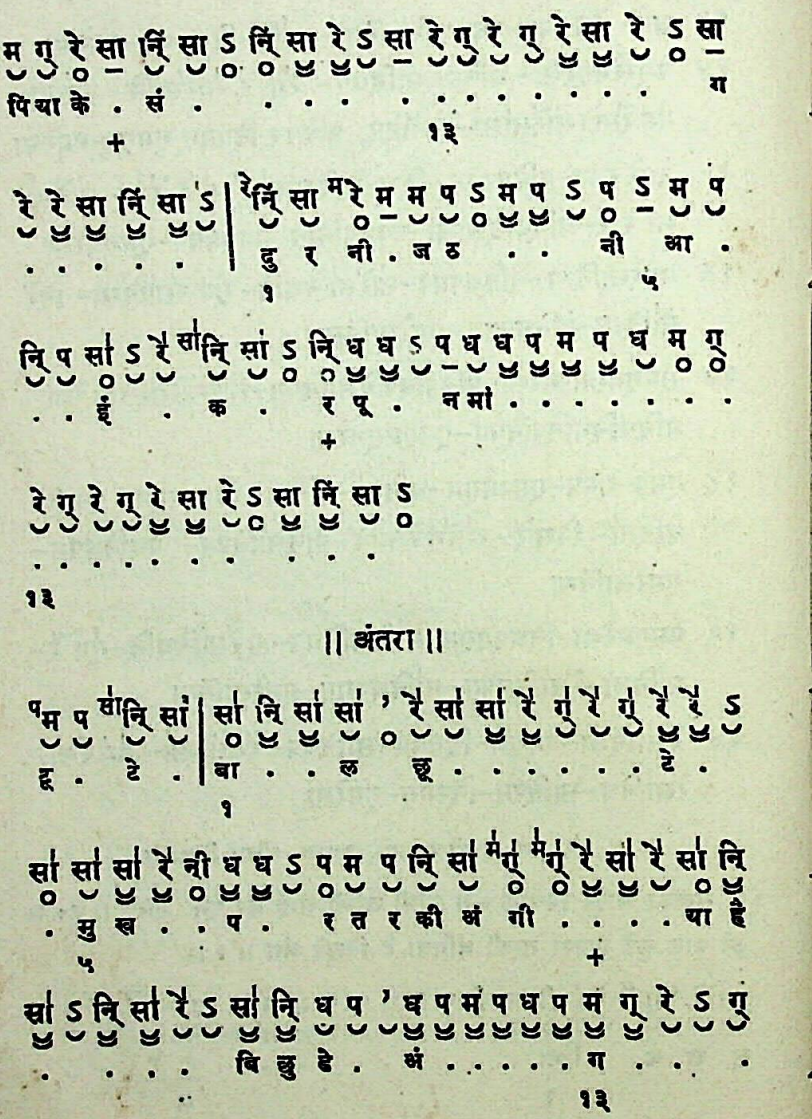

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

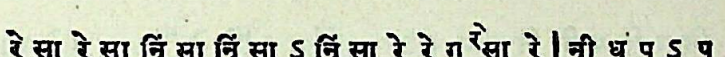

क्र. ५० राग–काफी-कानडा, ख्याल; एकताल

नाचत देदे तारी ख्याल मोहना संग खरे ॥ ध्रु० ॥ इत मुरली डफ बाज रही है बीन पखवाज ताल ॥ १ ॥ कवी–कृष्णदास

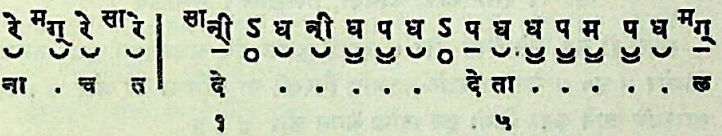

॥ अंतरा ॥

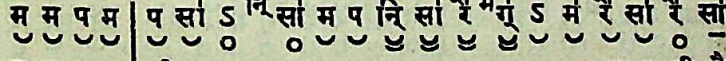

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

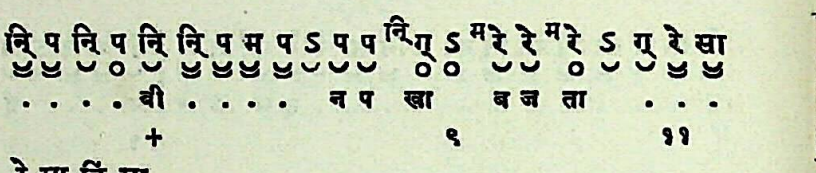

क्र. ५१ राग—काफी-कानडा, तीनताल (मध्यलय)

सखी री यह मेरो चित चोर । भृकुटी कुटिल बंक अवलोकन सुंदर नवल किशोर ॥ ध्रु० ॥ गैल चलतमे सहजहि निरखी या छलिया की ओर ॥ १ ॥ नारायण जाने कहा कियो इन लखि नैनन कोर ॥ २ ॥

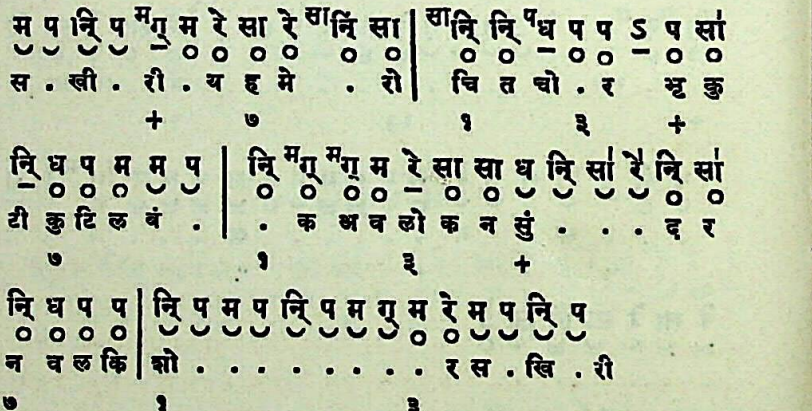
म प नि प म ग म रे सा रे सा नि सा | सा नि नि प ध प प ऽ प सां
स . खी . री . य ह मे . रो | चि त चो . र भृ कु
+ ७ १ ३ +
नि ध प म म प | नि म ग म ग म रे सा सा ध नि सां रें नि सां
टी कु टि ल बं . | . क अ व लो क न सुं . . . द र
७ १ ३ +
नि ध प प | नि प म प नि प म ग म रे म प नि प
न व ल कि | शो . . . . . र स . खि . री
७ १ ३

॥ अंतरा ॥

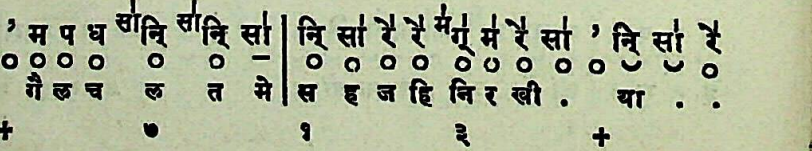

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	नि॒	ध	प	म	प	नि॒	प	म	प	नि॒	प	म	ग॒	म	रे
०	०	०	०	०	०	◡	◡	◡	◡	◡	◡	◡	◡	०	०
छ	लि	या	.	कि		ओ	.	.	.	.	.	.	.	.	र
	७					१								३	

राग—जयंत-कानडा

इस रागमें दो गान्धार और दो निषाद लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध हैं।

वादी—ऋषभ संवादी—पंचम

समय—रात्री का द्वितीय प्रहर

साधारण रूपसे राग का चलन—सा, धं नि॒ रे, रे ग ग म प, म॒ग॒ म॒ग॒ म रे सा, रे ग म प, म॒ग॒ म नि॒ प, म ◡ प ध म ग रे, ग म प म॒ग॒ म रे सा, सा धं नि॒ ग॒ रे ग॒ रे सा रे प, म॒ग॒ म रे सा, नि॒ प म॒ग॒ म, म ◡ प ध ग म ग रे, सा धं नि॒ रे.

विशेष—यह राग जैजैवंती और कानडा के मेलसे उत्पन्न हुवा है। कानडा पूर्वांगमे और उत्तरांगमे जैजैवंती यह नियम साधारण रूपसे हो सकता है। जैजैवंतीमे यथा योग्य स्थानपर कानडा जोडकर गानेसे मधुरता बढती है। ऐसे मिश्र रागोंमें भिन्न भिन्न रागोंके स्वरूप दीखना यह स्वाभाविक है। इस रागमे जैजैवंती या कानडा का अंग प्रबल रखकर गाना हो सकता है। परंतु यहांपर जैजैवंती राग प्रमुख रखा है। और उसमे कानडा प्रविष्ट किया है।

आलाप

१ रेनिंसा, साधंनिंरे, सापंनिंपंरे, गरेग॒रेसा

२ सापंनिंपंरे, रेगरेगमगरे, सापंरे, म॒ग॒म॒ग॒मरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३ रेनिंसा पंरे, रेगरेगमगरे, रे ग मपपरेमगरे, मगूममगूमसारेसा

४ निं सा रे गमगरे, रे ग मप, मनीप, नि मपमगरे, रे गमगरे, मगूममगूमरेसा

५ मगूममगूमरेसा, रे गमगरे, रे ग मनीधप, धध प म पधमगरे, रे ग मपरेमगरे, गग रे सा रे गमगरे, मगूममगूमसारेसा

६ रेधंनींमगरे, रे ग मप, मनीप, म ध निसां, सांरें सांनिधप, निनि प म पनिमगूमगू, सा रे गमगरे, गूरेसारेनिंसासाधंनिंरे

७ सामगूमगूमनीप, म ध निसांसांधनिरें, गूरेसां, सांरेंसांनिधप, परें, रेंरे, रे ग मपपरेमगरे, मगूममगूमसारेसा

८ गूरेसा, मगरे, नीप, सासांधनींरें, रें गमगरें, रें ग मपमगरें, गूरेसां, सांरेंनिधप, नीनी प म पनिमगू, रे गमगरे, गूरेसा

तान

९ निंसारेगूरेसानिंसा, निंसारेगमगरेगूरेसानिंसा, निंसारेमपनिमपमग रेगूरेसानिंसा, निंसारेमपनिमपधनिसांनिधपमपनीपमपगूमरेसानिं सा, गमधनिसांरेंगूरेंसांनिपनिमपमगमगरेगूरेसानिंसा

१० निंसारेगमग–गमग–गमग–रेगूरेसानिंसा, निंसारेगमग–रेमपनि मप–निमप–निमप–मगमगरेगूरेसानिंसा, गमधनिसांरेंनिसां– रेंनिसां–रेंनिसां–निधपम–पनिप–पनिप–मग–गमग-गमग-रेगूरे- रेगूरे–निंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११ गमगग–मगरेसा–पनिपप–निपमग–सारेनिसा–रेसानिध–धनि धध–निधपम–पनिपप–निपमग्–गमग्ग्–ममरेसा

१२ ग्म–ग्म–रेसा–पनि–पनि–पम–सारे–सारे–सानि–रेग्–रेग्–रेसा–सारे–सारे–सानि–पनि–पनि–पम–गम–गम–गरे–रेग्–रेग्–रेसा

१३ सारेरे–रेगग–गमम–मपप–मनिनि–पसासा–निरेरे–रेगग–गममम–रेग्ग्–सारेरे–निसासा–पनिनि–मपप–गमम–रेग्ग्–सारेरे–निंसा

१४ ग्मरेसानिंसा–पनिपमगरे–सारेसानिधप–ग्मरेसानिसा–पनिधप मग–रेमगरेनिंसा

१५ गरेपमगरे–रेग्रेसानिंसा–ग्मनिपमप–निसारेसानिसा–रेग्रेसा निसा–पनिपमगरे–ग्मरेसानिंसा

१६ ग्मपमरेसानिंसा–पधनिधपमगरे–निसारेसानिपमग–निसारेगमग रेसा–निसारेसानिधपम–पधनिधपमगरे–ग्मपमरेसानिंसा

क्र. ५२ राग–जयंत-कानडा, ख्याल; एकताल

मेरे प्रीतम प्राण पियारे। प्रेमभक्ति अपनो नाम दीजे दयाल अनुग्रह धारे ॥ ध्रु० ॥ सुमिरों चरण तिहारे प्रीतम हृदय तिहारी आसा ॥ १ ॥

—कवी–नानकगुरु

म	ग्रु	म	रे	सा	निं	सा	रे	निं	सा	सा	धं	निं	म	ग	रे	ऽ	रे	ग	रे	ग	म	प
	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	०	०	०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	मे	.	रे	.	.	.	.		प्री		त	म	प्रा	.	.		ण	पि	या	.	.	.	
	११												१										

ऽ	म	ग	रे	म	ग्रु	म	ग्रु	म	रे	रे	निं	रे	सा	'	सा	रे	निं	सा	ऽ	सा	धं	नीं	
—	—	०	०	०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	०	०		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०		ऽ	ऽ	
	रे	.	.	प्रे	म	भ	.	.	क्ति	अ	प	नो		ना	.	.	.				.	.	
	५		+					९										११					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

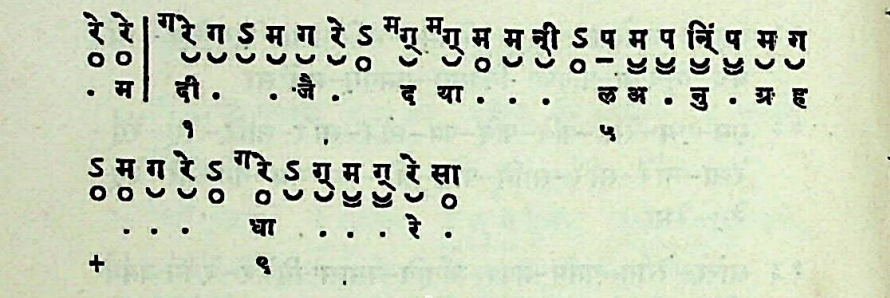

॥ अंतरा ॥

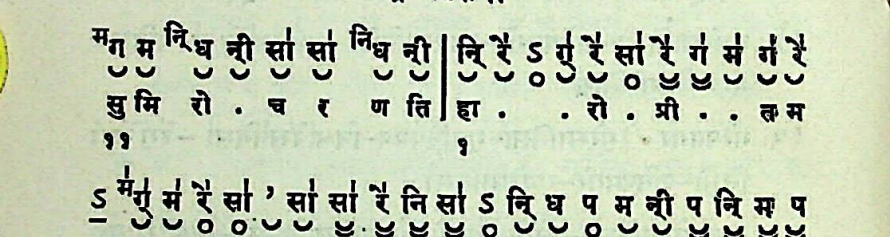

क. ५३ राग–जयंत–कानडा, तीनताल (मध्यलय)

हमरी आँखिनके दोउ तारे। राधा मोहन मोहन राधा यह दोउ रूप उजारे ॥ ध्रु० ॥ गौर श्याम अभिराम मनोहर व्रज बरसाने वारे ॥ १ ॥ शुक शारद नारद बलिहारी महिमा वर्णत हारे ॥ २ ॥

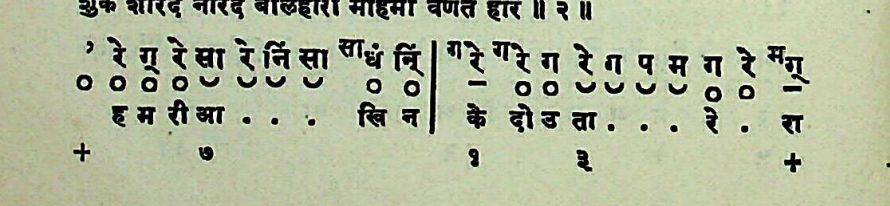

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म ग़ म म नि प प | ध नि सां नि ध प ग म प म ग रे ग़ म नि प
० ० ० ० ० ० | ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ० ०
धा . मो . ह न | मो . . . ह न रा . . . धा . थ ह दो उ
७ १ ३ +

सां नि सां नि प | नि नि प म प ध प म ग रे रे ग़ रे सा नि सां
० ० ० ० | ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡
रू . प उ | जा . . . . . रे . . . . .
७ १ ३

॥ अंतरा ॥

ग म ध नि सां सां नि सां | रें गं मं गं रें ग़ें रें ग़ें रें सां नि सां रें
— ० ◡ ◡ ० ० ० ० | ◡ ◡ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ◡
गौ र श्या . . . म श्र भि | रा . . म म नो . ह र ब्र ज ब
+ ७ १ ३ +

मं रें सां नि सां रें सां नि प | नि नि प म प नि ग ऽ म ग रे
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० | ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ० ० ०
. र . सा . . . ने . | वा . . . . . रे .
७ १ ३

ध ध ध नि सां नि ध प प ध नि ध | प म ग ग रे ग प म ग रे
० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ | ० ० ० ० ◡ ◡ ◡ ◡ ० ०
शु क ला . . . र द ना . . . | र द ब लि हा . . . री .
+ ७ १ ३

म ग़ म नि प प नि सां नि प | ध नि सां रें ग़ें रें सां नि रें सां नि
० ० ० ० ◡ ◡ ० ० ० | ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡
म हि मा . व . . णं त | हा . . . . . रे . .
+ ७ १ ३

ध प म ग रे
◡ ◡ ◡ ◡ ◡
. . . . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—मुद्रिकी-कानडा

इस राग में गांधार निषाद कोमल लगते हैं। बाकी सब शुद्ध स्वर हैं।

वादी—षड्ज संवादी—पंचम समय—रात्रिको

साधारण रूपसे रागका चलनः—सा ऽ नि॒ं रे सा, रे म रे म रे सा, नि॒ं धं नि॒ं सा, म ग् म ग् म रे सा, सा म, म प म प ध म ग् म ग्, म रे सा, म, ग् म नि॒ ध नि॒ सां, सां नि॒ सां रें सां, सां नि॒ ध प, म प ध म ग् म ग्, म रे म रे सा

विशेष—यह कानडा प्रकार मे से एक राग है। यह राग प्रचारमे बहुत ही कम है। इसलिये रागके नियममे मतभेद होना संभव है। जिस प्रकार से राग सुनने मिला उसी पर राग नियम बांधकर लिखा है। सा म इन स्वरोंसे 'बहार' रागका भास होता है। धैवत शुद्ध होनेसे 'शहाना' का भी भास होगा। 'सा रे म रे म रे सा' 'म प ध म ग् म ग् म रे सा' यह स्वर समूह राग वाचक है। सां नि॒ ध प,' 'ग् म नि॒ ध नि॒ सां' यह स्वर समूह से 'शहाना' 'हुसेनी कानडा'से यह राग अलग दीख पडता है।

आलाप

१ साऽनि॒ंरेसा, रे म रे म रेसा, नि॒ंधंनी॒ंसा

२ साऽनि॒ंरे, म ग् म ग् म रेसा, सा नि॒ंधंनी॒ंसा

३ साम, प मप, मपध म ग् म ग्, मरेसा, साऽनि॒ंरेसा

४ साम, प मप, म ग्मनीधप, धध प म पध म ग् म ग् म रे म रेसा

५ म, ग्मनीधनि॒सां, सां नि॒सां रें सां, सां नि॒धप, म पध म ग् म ग्मप, म ग् म रे म रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६ ग्मनीऽधसा, सांनिसांरें, मग्मरेंमरेसा, सांनिसांरेंसा, सांनिधप, म पधमग्मग्, ग मपमग्मग्, मरेंमरेसा, निंसारेंसा

७ मग्मग्मरेंमरेसा, पमग्मग्, नीधप, सांऽनिरेंसा, मग्मरेंमरेंसा, रें रें सां निंसांनिधप, म प ध म पधमग्मग्, मग्मपमग्मरेंमरेसा

तान

८ सांनिंरेंरेनिंसा, सारेंमग्मरेसा, सारेंमपमग्मरेसा, सारेंमपनिंनिंम पग्मरेसा, सारेंमपनिंसांनिंधमपधग्मरेसा, सारेंमपनिंसांरें रेंनिंसा ग्मरेंसांनिंधपमपधग्मरेसा

९ मरेंमरेंनिंसा–पपमग्मरेंमरेंनिंसा– निंनिंधपमपधमपधग्मरेसा– सां सांनिंध– रें रेंसांनिंधप–मपधग्मरेसा

१० सारेंरें– रेंमरेंनिंसा–मपप–पधध–मग्–निंसांसां–सांरें रें– सांनिं– धनिंनिं–धनिंनिं–धप–मपप–पधध–मग्– रेंमम– रेंमम– रेसा

११ रेंममरेसा–पधधपम–सांरें रेंसांनिं– रेंमम रेंसा–सांरें रेंसांनिं-धनिं- निंधप–पधधमग्– रेंममरेसा

१२ रेंमरेंमरेसा–मपमपमग्– पधपधमग्– निंसांनिंसांनिंध– सांरेंसांरें सांनिं–रेंमं रेंमं रेंसा–धनीधनीधप–मपमपमग्–ग्मग्मरेसा

१३ धनीधनी–पधपध–मपमप–सांरेंसांरें–निंसांनिंसां– ग्मग्मं– सांरें सांरें–निंसांनिंसां–धनीधनी–पधपध–मपमप–ग्मग्म–रेसा

१४ ममरेंसांनिंसा–धनिंधपमप–रें रेंसांनिंधनिं–मंमं रेंसांनिंसां–रें रें सांनिंधनी–धनीधपमप–धधपमग्म–ममरेंसांनिंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ५४ राग–मुद्रिकी-कानडा, झपताल

हरो मेरो दुख हरो पीर ख्वाजा मोयी ने दीन चेस्ती ॥ ध्रु० ॥ राखो शरम अब मोरवत पिया की आई परे हूं तोरे चरन मोरे ॥ १ ॥

रे मरे सा निं धं नीं | सा ऽ सा ऽ रे मरे सा सा ऽ सा | सा ऽ
० ०
ह रो . मे . रो | दू ख ह रो . पी र | ख्वा
+ ८ १ ३ + ८ १

म ऽ म प मगु मगु म प | मगु म मरे ऽ सा रे मरे सा निं धं नीं |
० ०
जा मो यी ने दी . न | चे . स्ती . ह रो . मे . रो |
३ + ८ १ ३ + ८

॥ अंतरा ॥

म गु म नी ध नि सां नि सां ऽ सां | सांनि सां रें ऽ सां नी सां निं
० ०
रा . . खो . श र म अ ब | मो र व त पि या की
१ ३ + ८ १ ३ + ८

ध प | म प मगु ऽ मगु म नी ध नी सां मगु | मगु म रे सा रे मरे
० ०
. . | आ . ई प रे . . हूं . . | तो . रे . च र
१ ३ + ८ १ ३ ३

सा नीं धं नीं |
न मे . रो |
८

क्र. ५५ राग–मुद्रिकी-कानडा, तीनताल (मध्यलय)

जबतें स्याम सरन हौं पायो। जबतें भेंट भई श्रीवल्लभ निज पति नाम बतायो ॥ ध्रु० ॥ और अविद्या छांड मलिन मति, श्रुति पथ आय दृढायो ॥ १ ॥

कवी–कृष्णदास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे मरे मरे सा ' निं धं नीं | सा सा रे मगु मगु मरे सा सा सा म
० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० — ० ० ० ० ० ० —
ज ब ते . स्या म स | र न हों पा . थो . ज ब तें

\+ ७ १ ३ +

' म प म | म प ध मगु मगु म रे सा मगु म नि ध सांनी सां
० ० ० ० | ऽ ऽ ० — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
में ट भ | ई . . श्री व . ल्ल भ नि जं प ति ना .

७ १ ३ + ७

सां सां | मगु मगु म सारे सा
० ० | — ० ० — —
अ ब | ढा . . थो .

१ ३

॥ अंतरा ॥

मगु म नी ध सांनी सां सां | नि सां रें रें मगं मगं म रें सां सांनि
ऽ ० ० ० ० ० ० — | नि ऽ ० ० ० ० ० ० ० ०
औ . र अ वि . आ | छां . . ड म लि न म ति भु

\+ ७ १ ३ +

सां रें सां सांनि सांनि ध प | म प ध मगु मगु म रे सा
० ० ० ० ० ० ० | ऽ ऽ ० — ० ० ० ०
ति प थ आ . य ड | ढा . . . थो . . .

७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—हुसेनी-कानडा

इस राग में गांधार निषाद कोमल लगते हैं। बाकी सब शुद्ध स्वर है।

वादी—पंचम संवादी—षड्ज समय—रात्री का दुसरा प्रहर

साधारण रूपसे रागका चलन—सा ऽ नि॒ रे सा, ग॒ म रे सा, प, म प ध नि॒ प, सां नि॒ सां रें सां ध नि॒ प, म नि॒ प, म प ग॒ म रे सा

विशेष—यह कानडा प्रकारका एक राग है। यह राग प्रचारमे बहुत कम है। इसलिये रागके नियममे मतभेद होना संभव है। जिस प्रकारसे उनके पद्य मिले उसीपर नियम बांधकर आलाप तान लिखे हैं। इस राग मे भी 'बहार' का भास है। इस रागको भी 'शहाना' से बचाकर गाना पडता है। सा रे ᵐग॒ म-म प ध नि॒ प-सां ध नि॒ प-म प ध नि॒ प-म प ग॒ म रे सा, इन स्वर समुदायसे राग मुद्रिकी कानडासे अलग रहेगा।

आलाप

१ सानिंधंनिंरेसा, साम, पᵐग॒मरेसा, सानिंरेसा

२ सानिंरेसा, ᵐग॒ᵐग॒मरेसा, म म रे सा रे सानिंधंनिंरेसा

३ साᵐग॒ᵐग॒ग॒म, मप, मपधनि॒प, नि॒नि॒ प म पᵐग॒मरेसा

४ मममप, नि॒ प मग॒, मधनिसां, ध नि॒सांनि॒प, धनि॒पᵐग॒ᵐग॒ग॒म, नि॒पᵐग॒म, रे सारेसा

५ ग॒ म ध नि॒सांनि॒ प म ग॒ म ध नि॒सांसांऽनि॒, निरेंसां, सांधनि॒प ᵐग॒, मपधनि॒प, नि॒सांनि॒नि॒प, म प नि॒ पᵐग॒मरेसा, साऽनिं धंनिंरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तान

६ निंसारेरेनिंसा, निंसाग्मरेसानिंसा, निंसाग्मपग्मरेसानिंसा, निंसाग्मपधनिप, मपग्मरेसानिंसा, निंसाग्मधनिंसानिपमग्मरेसानिंसा

७ निंसारेरेनिंसा–ग्मरेसानिंसा–पनिपमग्म– धनिपधमप– निंसाध निपध–मनिमपग्म–पमग्मरेसा

८ ग्मग्मपधपध– निंसानिनिपमपध– निंसा– धनिंसा– धनिंसा– निंसारेरेनिंसा– ग्मरेसानिंसा– धनिपधमप– मनिधनिपधमप– ग्मग्मरेसानिंसा

९ मम–ग्मम–ग्मम–निनि–धनिनि–धनिनि– सांसा– निंसांसा– निंसांसा– रेरे–सारेरे–निंसांसा–धनिनि– पधध– मप– ग्मम– ग्मम– रेसा

१० ग्मम–ग्मम– रेसा–धनिनि–पधध–मप–सारेरे– निंसांसा धनि-ग्मम–सारेरे–निंसा–धनिनि–पधध–मप–ग्मम–ग्मम–रेसा

क्र. ५६ राग–हुसेनी-कानडा, धृपद; चारताल

बेणी निरखत भुजंग लजपाताल लौक गए ये युगल दृगन देखत ही मीन जलद (जलज) दुरे ॥ धृ० ॥ मुख देख कलाहीन उडगन-पति व्योम बसै, हसन दसन छबि निरख द्युति अनार दरक मुरे ॥ कुच निहार चक्रवाक चाल लख मराल भज्यो, निरख निरख तनकी द्युति कंचन आग जरजुरे ॥ संचारी ॥ के हरि कटि-छवि विलोक वन बीच कियो बास, क्षेम रसिक छबि निरख रति दातन तृण तोरे ॥ १ ॥

श्रीमान् बाबू उमाशंकर प्रसादजीके संग्रहसे, मुजफ्फरपूर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि॒ ध नि॒ सां सां सांनि॒ सां रें सां सां सां ध ऽ नि॒ प | नि॒ प प
बे . . . . णी नि र ख त भु जं . . ग | ल ज पा
१ ५ + ९ ११ १

प सां सां नि॒ ध नि॒ प ऽ म म म प ऽ म ग॒ ऽ | मग॒ मग॒ म रे सा
ता , ल . . लो . क ग ए . . . | ये . यु ग ल
५ + ९ ११ १

सानि॒ सा मग॒ म प प नि॒ प नि॒ सां ऽ रें | नि॒सां नि॒ ध नि॒ध नि॒
दृ ग न दे ख न ही . मी . . | न . . ज .
५ + ९ ११ १ ५

प म मग॒ म म नि॒ ध नि॒ प ध म प मग॒ मरे सा रेनि॒ सा |
ल . ज दु रे . . . . . |
+ ९ ११

॥ अंतरा ॥

म प नि॒ प प प सांनि॒ सां ऽ सां ऽ सां | सांनि॒ सां रें सां रें सां
मु ख दें . ख क ला . ही न | उ ड ग ण प ति
१ ५ + ९ ११ १ ५

सांनि॒ ऽ नि॒ सां नि॒ प | सांनि॒ सां रें मंग॒ मं पं पं मंग॒ मं रें सां सां |
व्यो म ब सै . | कि स न द स न छ बि नि र ख द्यु |
+ ९ ११ १ ५ + ९ ११

सां नि॒ ध नि॒ सां सां नि॒ प मग॒ मग॒ म नि॒ ध नि॒ प ध म प मग॒ मरे
ति अ . ना . र द र क मु रे . . . . . .
१ ५ + ९ ११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

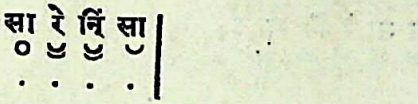

क्र. ५७ राग–हुसेनी-कानडा, ख्याल; एकताल

चंचल दृग रतनारे तेरे चोट लगे सोइ जाने ॥ धृ० ॥ चितवतही घायल कर डारत राखत ना तनु प्राने ॥ १ ॥

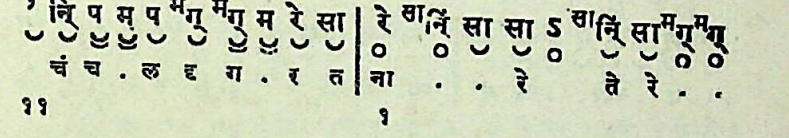

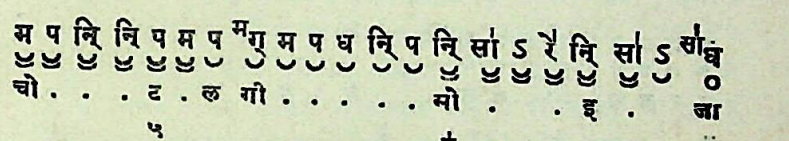

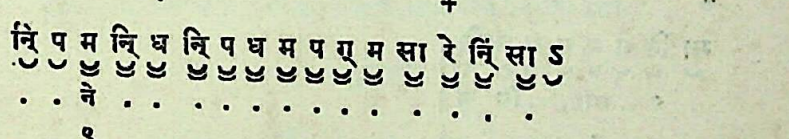

॥ अंतरा ॥

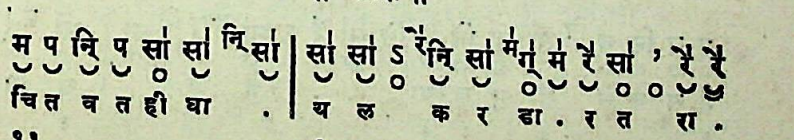

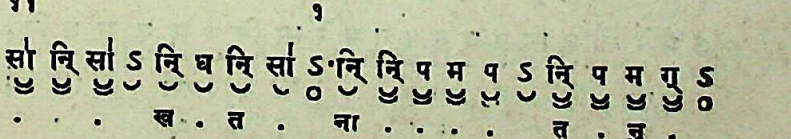

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म नि ध नि प ध म प ग म सा रे नि सा ऽ
प्रा . . . ने . . . . . .
२

क्र. ५८ राग–हुसेनी कानडा, तीनताल (मध्यलय)

बन्यो सिय प्यारीको बनरा । कि वरवश मोहलेत मनरा ॥ धृ० ॥ हँसत असी मुख म्यान ते, सुधा मुखी सित धार ॥ १ ॥

' नि प म ग म म नि | म प म ग ग म प म रे सा रे सा ' सा
० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ब . न्यो . . सि य | प्या री को . . . ब न रा . कि
७ १ ३ +

म म म प | म ग म म ध नि सां नि प ध नि प ध म प ग म रे
० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
व र व श | मो . ह ले . . त . ब . न . रा . . . .
७ १ ३ +

सा नि प म ग म म नि |
० ० ० ० ० ० ० |
. ब . न्यो . . सि य |
७

॥ अंतरा ॥

म म नि ध नि सां सां नि ध नि सां रे ऽ सां म रे नि सां | सां म ग
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ०
हँ स न अ सी मु ख म्या . . . न ते . | सु धा
१ ३ + ७ १

ऽ म रे सा ध नि प ध म प ग म रे सा नि प म ग म म नि |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
मु खी . सि . त . धा . . . र . ब . न्यो . . सि य |
३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—कानडा-मल्हार

इस रागमें दो धैवत और दो निषाद लगते है। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते है।

वादी—ऋषभ संवादी—पंचम.

समय—रात्रीका दूसरा प्रहर

साधारण रूपसे राग का चलन—सा नि॒ सा रे सा नि॒ध॒ नि॒ध॒ नि॒ पं, पं सा, नि॒ रे सा, सा रे म॒ग॒ म॒ग॒ म रे सा, म॒रे प, नि॒ म प म॒ग॒ म॒ग॒, म॒रे प, नी नि॒ म प, म प नि॒ ध॒ नि सां, सां रें नि॒ सां सांध नि॒ म प, नि॒ नि॒ प म प म॒ग॒ म॒ग॒ म रे सा

विशेष—यह राग कानडा और मल्हार के मेलसे उत्पन्न हुवा है। साधारण रूपसे पूर्वांगमे कानडा और उत्तरांगमे मल्हार यह नियम है। उसमे फरक करना याने पूर्वांगमे मल्हार और उत्तरांगमे कानडा लेकर भी गा सकेंगे। वह नियम संभालकर गाना यही गायक या कुशल विद्यार्थी का कर्तव्य है। इसका स्वरूप आलापोंसे विदित होगा।

आलाप

१ सा, नि॒ सा रे सा नि॒ध॒ नि॒ध॒ नि॒प, पंसा, नि॒रेसा

२ साऽनि॒रे, सारे म॒ग॒ म॒ग॒ मरेसा, नि॒सारेसा नि॒ध॒ नि॒ध॒ नी॒सा

३ सारे म॒ग॒ म॒ग॒, म॒रेप, पनि॒ मप म॒ग॒ म॒ग॒ मरेसा

४ सारे म॒ग॒ म॒ग॒, म॒रेप, पपनि॒, नि॒ मप, नि॒ मप म॒ग॒ म॒ग॒, म॒ग॒मरे सारेसा

५ सारे म॒ग॒ म॒ग॒, म॒रेप, पपनि॒, नि॒मप, पनि॒ऽधनीसां, सां रें नि॒सां सांधनि॒मप, नि॒नि॒ प मपनी म॒ग॒ म॒ग॒, ग॒मप म॒ग॒ म॒ग॒, मरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६ मपनीऽधनीसां, सांरेंसां, सांरेंमंग्मंग्मंरेंसां, रेंरेंसांनिंसां, सांध निंमप, निंनिं प मपमंग्मंग्, मरेसा

७ म प ध नि रें नि सांनीऽनीऽधनीसां, सांरेंसां, सांरेंपमंग्मंग्मंरें सां, रें नि सांनीनीऽधनीसां, सासांसांधनिंमप, निं मपमंग्मंग् मरेसा

तान

८ निंसांरेंरेंनिंसा, सांरेंगमरेसानिंसा, सासामरेपपनिंनिंमपग्मरेसा निंसा, सासामरेपपनिंधनिसांधनिंमपग्मरेसानिंसा, निंसांरेंमपनिं सांरेंसांनिंपमपनिंमपग्मरेसानिंसा

९ निंसांरेंसानिंसाधंधंनिंपं–निंसांरेंरेंनिंसाग्मरेसानिंसा, निंसाग्मप ग्मरेसानिंसा, निंसाग्मपग्मधंधंनिंपमपग्मरेसानिंसा, निंसाग्म पग्मनिंधनीसांधनिंपमपग्मरेसानिंसा, निंसांरेंमपनिंसांरेंसांनिंग्मं रेंसांनिंसांनिंनिंमपग्मरेसानिंसा

१० सांरेंरे–रेपप–ग्मम–रेसानिंसा, सांरेंरे–रेपप–पनिंनिं-निंसांसां-सांरेंरें–रेंमंम–सांरेंरें–निंसांसां–पनिंनिं–मपप–ग्मम-रेसानिंसा

११ पपमग्मममरेसा–धंधं–नीनी–पप–मम–पप–ग्ग्–ममरेसानिंसा–निंसांरेंरें–निंसां–ग्ंग्–मंम–रेंसांनिंसा–धंधं–नीनी–पप–मम–पप–ग्ग्–मम–रेसा

१२ सासामरेपपनीनीमप–धनिसांरेंनिंसां–ग्मंरेंसांनिंसां-रेंरें-सांसां-निंनिं–मप–नीनीपमग्मरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ५९ राग-कानडा-मल्हार, झपताल

ग्रमन वर पूरे, कुछ कुछ कहते केते नर करेरे ॥ ध्रु० ॥ कोप कर बरत है आतत परबीन केते नर करे केते नर न करेरे ॥ १ ॥

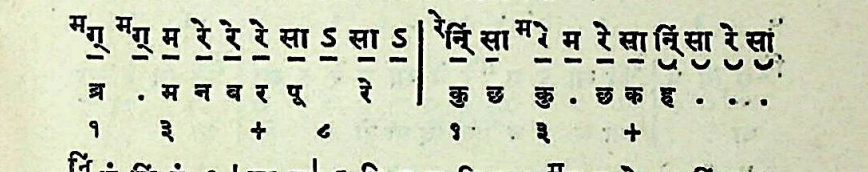

॥ अंतरा ॥

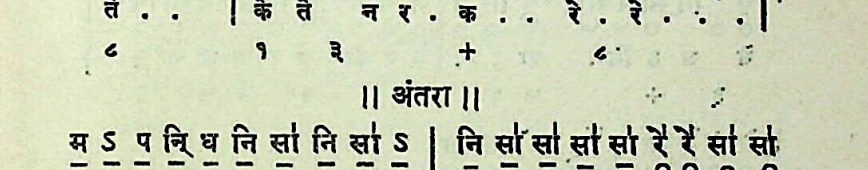

क्र ६० राग-कानडा-मल्हार, द्रुत एकताल

मोरी बूंदरिया पचरंग चूनरिया सास ननदिया दोरनिया वे जठनिया घरकी चरचा अब कैसे घर जाऊरे ॥ ध्रु० ॥ जैसी सुतरी हरकी बिखर रही आनन पर फैलर हो कजरा कंजरा के गूंदे गैली अत पीलीको कैसे छुपाऊं ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

' रेनिं ऽ सा | मग् मग् म प प मरे सा | रे म रे सा रेनिं सा रे सा
० ० ० ० | — ० ० — — — — | ० ० ० ० ० ० ०
मो रि | बूं . द रि या . . | प च रं ग चू . न रि
५ ६ १ ३ + ५ ६ १ ३ +

निं धं निं पं | रेनिं सा ऽ म मरे रे सा म रे ऽ सा | रेनिं सा रे सा
— ० ० | ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० | ० ० ◡ ◡
या . . | सा स न न दि या दो र नि | या . . .
५ ६ १ ३ + ५ ६ १

निं धं ' निं सा रे सा निं धं निं पं | मं मं पं सानिं निं सा निं सा निं सा |
० ० ० ० ◡ ◡ — ० ० | ० ० — ० ० — ० ० ० ० |
वे ज ठ नि . या . . | घ र की च र चा अ ब कै से |
३ + ५ ६ १ ३ + ५ ६

रे रे ' रे सा रे मग् म रे ऽ सा |
० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० |
घ र जा . ऊ रे . मो रि |
१ ३ + ५ ६

॥ अंतरा ॥

म रे प नि् ध नी सां नि सां | ध् नि् ध् नी सां सां सां सां सां सां |
० ० — ० ० — ० ० — | ० ० ० ० — — ० ० ० ० |
जै . सी सु त री ह र की | बि ख र र ही आ न न प र |
१ ३ + ५ ६ १ ३ + ५ ६

नि् सां रें रें रें सां रेंनि् सां नि् ध् नि् प | नि् प प म नि् प नि् म प
◡ ◡ ० ० ० — ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ० ◡ ◡ ०
फै . . ल र हो क ज रा . . | क ज रा . . के गूं . .
१ ३ + ५ ६ १ ३ +

मग् ऽ | म रे प नि् ध नि सां सां सां | सां सां रें सां नि् प म प
— — | ० ० — ० ० ० ० — — | — ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ०
दे | गै . ली अ त पी . ली को | कै . . से . . . छु
५ ६ १ ३ + ५ ६ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

^मग्‌ ऽ म रे सा नि॒ सा ^{रे}नि॒ सा |
० ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० |
पा . ऊं . . . मो री |
+ ५ ६

राग—मालव

इस राग में दो गान्धार और दो धैवत लगते हैं। निषाद कोमल है। ऋषभ वर्जित है। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते है।

जाति—षाडव वादी—मध्यम संवादी—षडज

समय—रात्री का तिसरा प्रहर

साधारण रूपसे रागका चलन—सा नि॒ ध॒ सा, ध॒ नि॒ सा ग ग म, म ध॒ म, ध॒ नि॒ ध॒ म, प ध ध नी॒ ध प म ग म, सा ग॒ सा, म ध॒ नी॒ सां, सां नि॒ ध॒, प ध ध नी॒ ध प म ग म, ग॒ ग॒ सा ऽ नि॒ नि॒ ध॒ सा

विशेष—यह मालकंस का श्रुतिमनोहर प्रकार है। इस राग में मालकंस का चलन होते हुए पंचम शुद्ध गान्धार और शुद्ध धैवत लगाकर रागका श्रुतिमनोहर स्वरूप खुलता है। पूर्वांग में 'ध॒ नी॒ सा ग ऽ म' इस तरह शुद्ध गान्धारका प्रयोग करते है। अवरोह करते समय 'सां नि॒ ध॒,' बोलकर धैवतपर थोडा रुक कर फिर 'प ध ध नी॒ ध प म ग ऽ म,' इस तरह शुद्ध धैवत और शुद्ध गान्धार प्रयोग करके 'ग॒ ग॒ सा' इस तरह आलाप समाप्त करना चाहिये। शुद्ध धैवत और शुद्ध गांधार लगाते समय 'मालगुंजी' का भास होता है।

आलाप

१ सा^{नि॒}ध॒^{नि॒}ध॒^{सा}नि॒सा, ध॒ नि॒ सा^मग॒^मग॒, सागऽम, ^{सा}ग॒सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२ सा, ध्ंनींसाग्, मग्मग्, सागऽम, सा ग् म ध्ग्, मग्सागऽम सा ग्सा

३ ध्ं नि्ं साग्, साऽनि्ं, सागऽम, सा ग् मध्मग्, सा ग् मप म गम, सा ग्सा

४ साग्साऽनि्ं, सागम, सा ग् मध्, मग्, मपऽम, पधपधनी ध प मगऽमगगम, सा ग् मपमग्, सा ग्साऽनि्ं, नि्ं ध्ंसा नि्ंसा

५ नि्ं सा ग् म ध्नी, ध्मग्, म ध् नि्सांनि् ध्सांनि्सां, ग्ं सां नि् ध्, पधपधनी, ध प मगऽमगगम, साग्मपमग्, साग्सा

६ नि्ं सा ग् म ध् नि्सांनि् ध्सांनि्सां, ध् नि् सांग्ंसां, ग्ं सां नि् सां ग्ं सांनि् ध्, ध् नि् सां ध् नि्सांनि्ध्म, पधपधनीधपमगगम, सा ग् मध्मग्, सा ग् मपमगम, सा ग्साऽनि्ं

७ मग्मग्सा, गम, मध्नि् ध्नि् ध्म, पमगगम, नि्ध्, सांऽनि्, ग्ंसां, सां ग्ंमंग्ंसां, ग्ं ग्ं सां नि्सांनि् ध्म, पधपधनी, धपम, गम, सा ग मपमग्, सा ग्सा

८ ममग्, नीनि् ध्म, सांनि् ध्, ग्ंसां, मंग्ं, सांग्ंसां, ग्ं सां नि् ध्, प ध नी प धनीधपम, सा ग् मध्मग्, सागमपमग्सा ग्सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तान

९ निंसाग्मग्सा, निंसाग्मध्मग्मपमग्सा, निंसाग्मध्नीध्मग्मप मग्मग्सा, निंसाग्मध्निंसांनिध्मग्मपमग्मग्सा

१० निंसाग्मम–ग्मम–ग्सा, निंसाग्मध्ध्–मध्ध्–मध्ध्– मग्मप–मग्सा, निंसाग्मध्नीन्नी–ध्नीन्नी–ध्न्नीन्नी–ध्म-गमपपमग्साग्म ग्सा, निंसाग्मध्निंसांसां–निंसांसां–निंसांसां– निध्मग्–पधध-धन्नीन्नी–धपमग–सागमपप–मपप–मग्–साग्मग्सा

११ साग्मग्सानिं–सागमपमग्– पधन्नीधपम-ध्निंसांनिध्नि-सांग्मग्ं सांनि–पधनीधपम–गमपमगम–साग्मग्सा

१२ साग्ग–ग्मम–मध्ध्–ध्निंनि-निंसांसां-सांग्ग्ं-निंसांसां-धन्नीन्नी-पधध–धन्नीन्नी–पधध–मपप–गमम–साग्ग्–ग्मम–ग्सा

१३ साग्–ग्म–मध्–ध्नि–निंसां–सांग्ं–ग्सां–सांनि– निध्– पध–ध्नी–निध्–पध–धप–पम–गम–मप–पम–गम–मग्–ग्सा

क्र. ६१ राग–मालव, ख्याल; एकताल

राधे राधे अमृत फलकी ओर ॥ धृ० ॥ राधा गोविंद मुरली मुकुंद सकल सफलकी ओर ॥ १ ॥

सा	ग	म	म	प	ऽ	म	ग	म	ऽ	म	म	म	म	म	प	म ग्	म	म
०	०	–	ु	ु	०	ु	ु	ु	०	–	०	०	०	०	–	०	०	–
रा	धे	रा	.	.		.	.	.		धे	अ	मृ	त	फ	ल	.		की
		१									५				+			९

गु	ग्	ऽ	सा	निं
ु	ु	०	०	०
ओ	.		र	.
			११	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

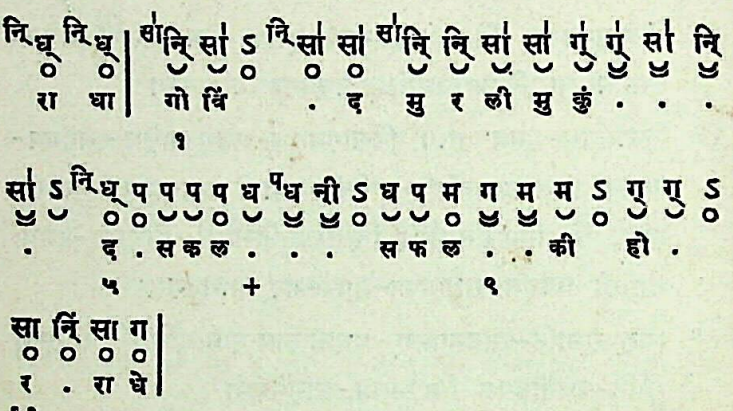

क्र. ६२ राग–मालव, ख्याल; एकताल

मुकुंद मुकुंद जपो संसार। बिन मुकुंद तन होसी छार ॥ ध्रु० ॥ सोई मुकुंद मुक्तिका दाता। सोई मुकुंद हमरा पितु माता ॥ १ ॥

कवी–रवीदास

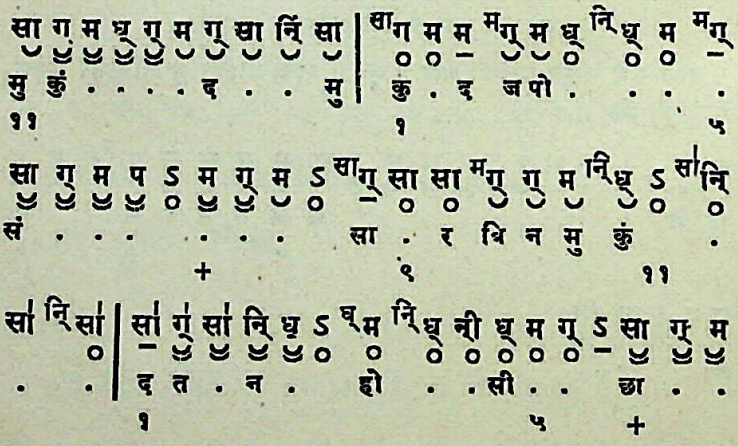

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

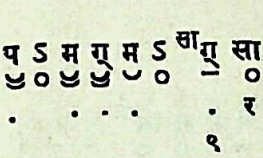

॥ अंतरा ॥

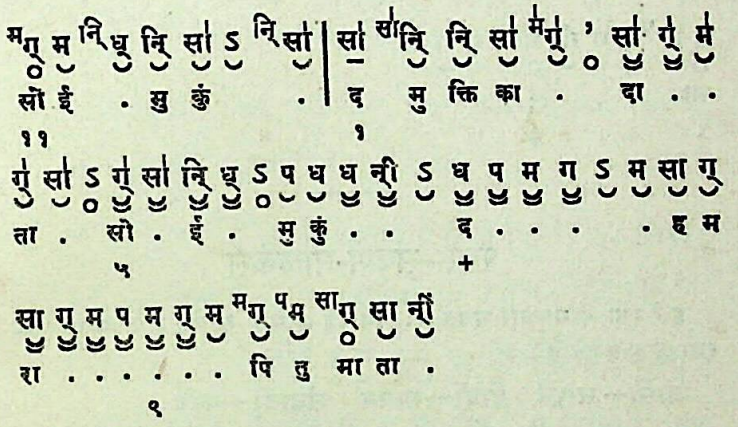

क्र. ६३ राग–मालव, तीनताल (मध्यलय)

हे मेरो मन मोहना, आयो नहीं सखी री ॥ ध्रु० ॥ कै कहुं काज किया संतनका, कै कहुँ गैल भुलावना ॥ १ ॥ –मीराबाईकृत

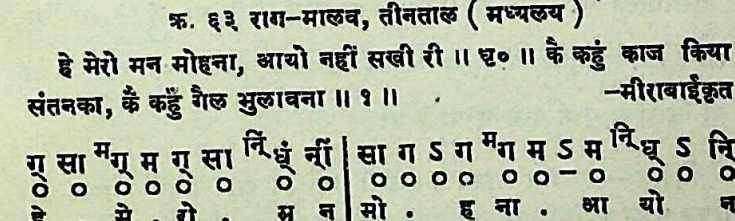

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

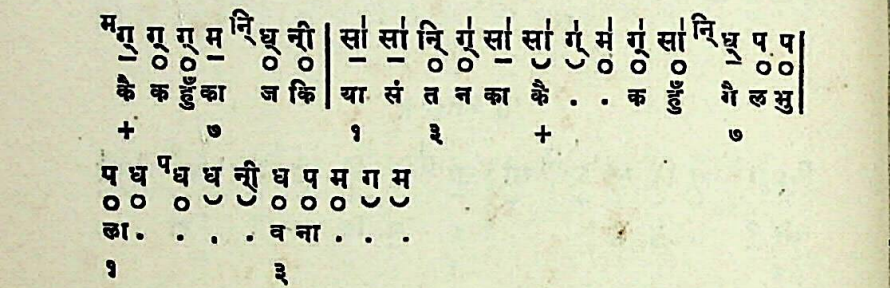

राग–संपूर्ण-मालकंस

इस राग में गान्धार धैवत और निषाद कोमल लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते है।

जाति—सम्पूर्ण वादी—मध्यम संवादी—षडज

समय—रात्री का तीसरा प्रहर

साधारण रूपसे राग का चलनः—सा नि॒ध॒ सा नि॒ सा, ध॒ नि॒ सा म ग॒, सा रे सा, सा ग॒ म नि॒ध॒, म नि॒ध॒ नी ध म ग॒, म॒ प म ग॒, सा॒ रे सा, सां नि॒ ध॒ म ग॒ म॒ प म ग॒ सा॒ रे सा

विशेष—मालकंस ओडव है। उसी का ही यह संपूर्ण स्वरूप है। रिषभ पंचम स्वरोंको एक ढंगसे ही लगाने पडते है। जैसे—सा म ग॒, सा॒ रे सा, म ध॒ नी ध॒ म ग॒ म॒ प म ग॒ सा॒ रे सा, सां नि॒ ध॒ म प म ग॒, सा॒ ग॒ म ग॒ सा॒ रे सा। बाकी सब चलन मालकंस का ही है। रिषभ पंचम लगाने का भी एक नियम है। उस नियमके अनुसार लगाने से रागकी मधुरता बढती है। और राग आकर्षक होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सा, ग्निंसा, सा^निं ध्ं^निं ध्ं^सा निंसा, निंरेसा

२ सा, ध्ंनिंसा^म ग्^म ग्^सा रेसा, ग्सानिंध्ं, ^निं ध्ं^सा निंसा

३ ध्ं निं सा^म ग्^म ग्म, मध्ऽम, पम, ^म ग्^म ग्, सारेसा

४ ध्ं निं साम, म^ध मग्, सा ग् म ^नि ध्^नि ध्निध्म, पम, ^म ग्^म ग्, सा ग् म ध्ग्^म ग्, सा^म ग्मग्, ^सा रेसा

५ निं सा ग् म^नि ध्^नि ध्नी, ध्मग्, ग् म ध् निसा^नि ध्, निरेसा, ग्ं ग्ं सा निसा^नि ध्, म ध्नीध्म, पम, ^म ग्^म ग्, ^ग नींरेसा

६ निं सा ग् म ध् निसानि ध् म ग् म ध् नीसानिरेसा, ध् नि सा^म ग्^म ग्^ग निरेसा, निसानि सा ग् सा निध्, म ध्नीध्म, पम, म प मम^म ग्, सा ग् मग्निं^ग निंरेसा

७ ^ग निंरेसा, म, पम^म ग्, ध्ऽमपम, नीध्म, सानिध्म, पम, रेसा, म^म ग्^म ग्^ग निरेसा, सा^म म^म ग्, ^ग निरेसा, सानिध्, म ध् नी म ध् नीध्मपम, सा ग् म ध्ग्^ग निंरेसा

तान

८ निंसामग्सानिंरेसा, निंसाग्मध्मपमग्मग्सानिंरेसा, निंसाग्मध्नीध्मपमग्मग्सानिंरेसा, निंसाग्मध्निसानिंध्मपमग्मग्सानिंरेसा, निंसागमध्नीसाग्सानिसारेसानिध्मपमग्मग्सानिंरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९ सागग्–गमम–मध्ध–ध्नीनी– निंसांसां-सांग्ग्-सांरेंरें-नींसांसां-ध्नीनी–मध्ध्–मपप–ग्मम–सागग्–निंरेंरे–सा

१० साग्मग्–ग्मध्मम– मध्नीध्– ध्निंसांनि– सांग्मंग्– निंरेंसांनि–ध्निंध्म–मपमग्–साग्मग्–निंरेंसासा

११ निंसाग्मध्मग्म–ध्निंसांनिध्मग्म– ध्निंसांग्सांनिध्नी– सांग्मंग्रेंसांनिंसां–ध्निंसांरेंसानिध्म-ग्मध्नीध्मग्म-पमग्मग्सानिंसा

१२ साग्मग्रेसा–ग्मध्नीध्म–मध्निंसांनिध्–ध्निंसांग्सांनि–सांग्मंग्रेंसां–ध्निंसांरेंसांनि–मध्निंध्मग्–मपमग्मग्–साग्मग्रेसा

१३ निंसानिंसाग्म–साग्साग्मध्–ग्मग्मध्नी– मध्मध्नीसां– ध्निंध्निंसांग्–सांग्सांग्मंग्- निंसांनिंसांरेंसां– ध्नीध्नीसांनि– मध्मध्निंध्–ग्मग्मपम–साग्साग्मग्–निंसानिंसारेसा

१४ मग्मग्सानिं–पमपमग्म–निंध्निंध्मग्–सांनिंसांनिंध्नी– मंग्मंग्सांनि–सांरेंसांरेंसांनि–ध्नीध्नीध्म– मपमपमग्– ग्मग्मग्सा–निंसानिंरेंसासा

१५ निंसाग्मध्नीनीनी–ग्मध्निंसांरेंरें रें–मध्निंसांग्ग्ग्ग्–ध्निंसांग्मंमंमं–ध्निंसां रें रें रें– मध्निंसांसांसां–ग्मध्नीनीनी– ग्म ध्ध्धध–साग्मपपप–साग्मममम– निंसागग्ग्ग्– ध्निंसारेरे रे–ध्निंसासासासा

१६ निंसाग्मध्नीनी–ध्नीनी– ध्मग्म-ध्निंसांसां-निंसांसां-निंसांसां-निंध्–ध्नीसांग्ग्–सांग्ग्–सांनिंध्नि–सांमंमं–ग्मंमं-ग्सांनिंसां-रें रें–सां रें रें–सां रें रें–सांनिंध्नी–सांसां–निंसांसां-निंसांसां-निंध्मग्–मध्नीनी–ध्नीनी–ध्नीनी–ध्मग्म– पप–मपप-मपप-मग्–साग्मम–ग्मम–ग्मम–ग्सानिंसा– रेंरे–सारेंरे–निंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क. ६४ राग–संपूर्ण- मालकंस, ख्याल; एकताल

आपनो रूप पिछान सी लाभ न मूल सी हान बड़ी नहिजीको ॥ धृ० ॥
नाहि बडो सुख भक्ति ते दूसरो दुःख न जानवो राधिका पीको ॥ १ ॥

निं सा गु म ध गु मनिं सा सा गु म प | म ऽ गु सा रे सा निं धुं सा निं
आ . प . नो . . रू . प पि | छा न सी . का .
११ १

गु सा म म ऽ म ध म म मगु मगु म नी ऽ ध सानि सानि सा गु सा
म न भू ल सी . . . हा . . न ब डी . न .
५ +

निं धु म गु म प ऽ म गु सा रे ऽ सा
हि . . जी . . . को . .
९

॥ अंतरा ॥

गु म ध नी सा गसा निं ध म निं ध नी | सानि सा ऽ ध नि सा मगु
ना . हि . . ब डो . सु ख | भ क्ती ते . . .
११ १

ऽ सा रे सा ' सा सा सा गु गु सा नि सा ऽ नि गु सा निं ध ऽ
दु स रो दुः ख न जा . . . . . न . वो
५

म गु सा गु म प ऽ म मगु मगु सा रे सा
. . रा . . . धि का . पी को
+ ९

रा.वि.(६)९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ६५ राग–संपूर्ण-मालकंस, तीनताल (मध्यलय)

मुरलीकी टेर सुनावे री माई को। मोरे आंगन मे ऐडोई डोले मोर मुकुट छबि भावे ॥ ध्रु० ॥ श्रवण सुनत रस मीठी बतियां रहस रहस कर गरे लगावे। सूर घूंघट बाहन सुत देखत लज रिपु छूटत जावे ॥ १ ॥

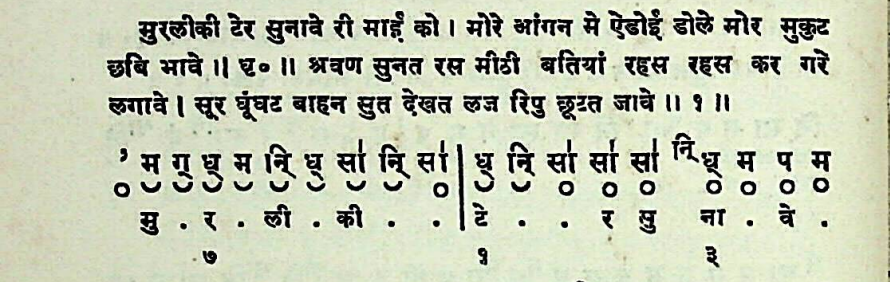

॥ अंतरा ॥

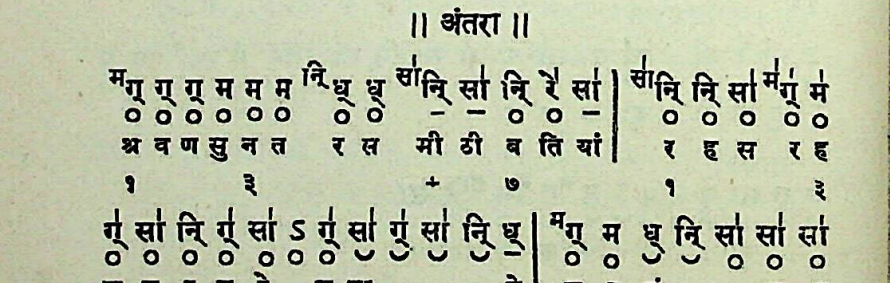

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

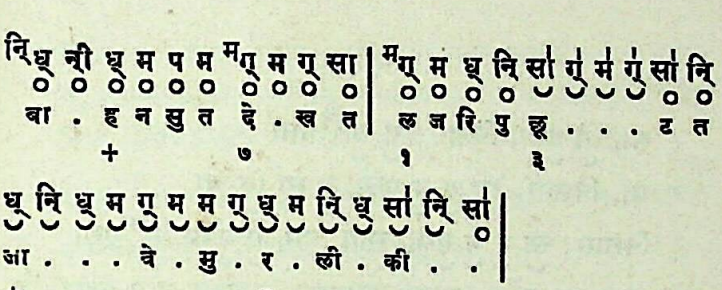

राग—जोग

इस रागमे दो गान्धार और दो निषाद लगते है। रिषभ धैवत वर्जित है। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते है।

जाति—ओडव. वादी—षड्ज. संवादी—पंचम.

समय—रात्री का दुसरा प्रहर

साधारण रूपसे राग का चलन—सा नि॒ पं सा, नि॒ सा ग॒, ग॒ सा नि॒ पं सा, सा ग म प, ग म प नि॒ प म ग सा॒ग॒ सा, सा ग म प, ग म प सां प नि॒ प, नि॒ नि॒ प ग म, सा ग म प म ग सा॒ग॒ सा

विशेष—यह राग मालकंस का एक श्रुति मनोहर रूप है। इस मे तिलंग का ही सब चलन करके अंतमे ग॒ म प म ग, सा ग॒ सा। इन सा ग॒ सा यह दो स्वरोंसेही मालकंस राग दीखाना होता है। साधारण रूपसे 'सा पं नि॒ प सा' ऐस स्वर लगानेसे तिलंग को कुछ अलग रख सकते है। तो भी तिलंग का ही स्वरूप जादा दीखता है। यह नया स्वरूप है। और रागका नया संशोधन है। आजकल जो प्रचार है उसको कुछ नियम बद्ध करके रागका स्वरूप स्पष्ट करनेका प्रयत्न किया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१ सा, नि॒ं प॒सा, नि॒ंसाग्, ग॒ सा॒ नि॒ंपंसा

२ सा, नि॒ंसाग्, सा॒ ग॒ म॒ ग॒सा, ग॒ सा॒ नि॒ंपंसा

३ नि॒ंसाग्, सा॒ ग॒ म॒ ग॒सा, साग, गम, ग॒ म॒पम, ग सा ग्सा

४ सा॒ ग॒ सा॒ सा॒ म ग्, मग्सा, सागगम, ग॒ म॒पम, ग॒ म॒ प॒नि॒प, ग म, सा॒ ग॒ म॒ प॒ ग॒ म॒पमग, साग्, सा॒ ग॒ म॒ ग॒सा

५ सा॒ ग॒ म॒ प॒ ग॒ म॒प, ग॒ म॒ प॒नि॒प, पसा॑, पनि॒प, नि॒ प॒ ग॒म, सा॒ ग॒ म॒ प॒नि॒पमग सा ग्सा

६ सा॒ ग॒ म॒ प॒नि॒प ग म, ग॒ म॒ प॒सा॑, नि॒सा॑, नि॒ सा॑ग्॑सा॑, ग्॑ग्॑ सा॑ नि॒सा॑, नि॒प, ग॒ म॒ प॒सा॑पनि॒प, नि॒नि॒ प॒ ग॒म, सा॒ ग॒ म॒ प॒ नि॒ म॒ प॒ सा॑ऽनि॒पमग सा ग्सा

७ साग्, सा॒ ग॒ म॒ ग॒सा, साग, सा॒ ग॒ म॒प ग मग, ग॒ म॒ प॒ नि॒ म॒ प॒ नी॒, पनीसा॑, सा॑ग्॑, सा॑ग॑म॑ग्॑सा॑, ग्॑ग्॑ सा॑ नि॒सा॑, नि॒प, ग॒ म॒ प॒ सा॑पनि॒मपमग सा ग्सा

८ म ग्म ग्ग् नि॒ं, ग्सा, साग, साम, साग्, सा, साम, साप, मनी पम, पसा॑, पनि॒प, पसा॑, नि॒ग्॑सा॑, ग्॑ सा॑ नि॒प, पनी॒, पसा॑, मनी॒, गम, साग्, साम, गप, मनि, पसा॑ग, सा ग्सा

तान

९ नि॒ंसाग्मग्सा, निंसागमपमगमसाग्ऽसा, निंसागमपनि॒पमगमसा ग्ऽसा, निंसागमपनि॒सा॑नि॒पमगमसाग्ऽसा, निंसागमपनिसा॑ग्॑सा॑ नि॒पमगमसाग्ऽसा, निंसागमपनिसा॑ग॑म॑ग्॑सा॑नि॒पमगमसाग्ऽसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१० निंसागग्–साग्ग्–साग्ग्–साग्मग्सा, निंसागमपप–मपप-मपप-मगसाग्सा–निंसागमपनिंनि्–पनिंनि्–पम–गमम–गमम–साग्सा, निंसागमपनिसांसां–निसांसां–पनिंनि्–मपप–गमम–साग्सा

११ साग्मग्सा–सागमपमग–गमपनिंपम–पनिंसांग्सांनि्– सांग्मंग्सांनि्–पनिंसांनिंपम–गमपनिंपम–साग्मग्सा

१२ सागमप–गमपनि्–मपनिंसां–पनिंसांग्–सांग्मंग्–निंसांग्सां– पनिंसांनि्–मपनिंप–गमपम–साग्मग्सा

१३ साग्सा–साग्सा–साग्मानिंपंनिं–मपम– मपम – गमग्सानिंसा–पनिंप–पनिंप–निंसांनिंपमग–सांग्सां – सांग्सां – सांग्मंग्सांनि्–पनिंप–पनिंप–पनिंमानिंपम–गमग–गमग–साग्मग्सा

१४ ग्मग्सा–पनिंपम–निंसांनिंप–सांग्सांनि्– गंमंग्सां – सांग्सांनि्–पनिंपम–गमग्सा

१५ साग्मग्सानिं–गमपनिंपम–पनिंसांनिंपम–सांग्मंग्सांनि्– पनिंसांनिंपम–पनिंपमगम–साग्मग्सा

१६ साग्सा–साग्सा–गमग–गमग–मपम – मपम – पनिंप – पनिंप – निंसांनि्–निंसांनि्–सांग्सां–सांग्सां–गंमंग–गंमंग–सांग्सां–सांग्सां–निंसांनि्–निंसांनि्–पनिंप–पनिंप–मपम–मपम–गमग–गमग-साग्सा–साग्सा

१७ साग्ग्–सामम–गपप–मनिंनि्–पसांसां–निंग्ग्–सांमंम– सांग्ग्–निंसांसां–पनिंनि्–मपप–गमम–साग्ग्सा

१८ सामग्सानिंसा–मनिंपमगम–पसांनिंपमप– सांग्सांनिंपनि्– सांमंग्सांनिंसा–निंग्सांनिंपम–पनिंपमगम–साग्मग्सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ६६ राग–जोग, ख्याल; एकताल

अब मै कैसे करूरी बीर। हौं तो घनो चाहूं न करूं सुध मन तो धरत न धीर ॥ ध्रु० ॥ जो घायल उन नयन बानके सो जानत यह पीर ॥ १ ॥

—नारायण स्वामीकृत

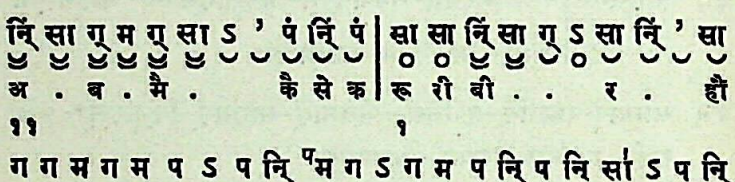

॥ अंतरा ॥

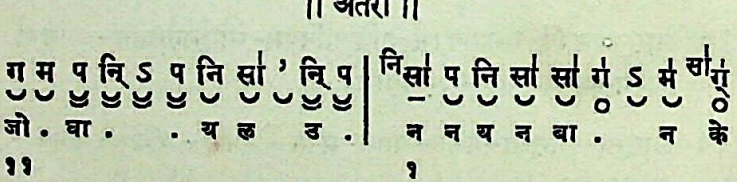

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ६७ राग–जोग, तीनताल (मध्यलय)

सखी तबसों चैन नहिं आवे। जबसो मैं निरख्यो नंदलाल गल मोतियन माल सुहावै ॥ ध्रु० ॥ घुँघरारी अलकैं मुखराजैं कोटि मदन दृग छवि लखि लाजैं कुंडल हलन चलन श्रवणन में वंशी मधुर बजावै ॥ १ ॥

—नारायणस्वामीकृत

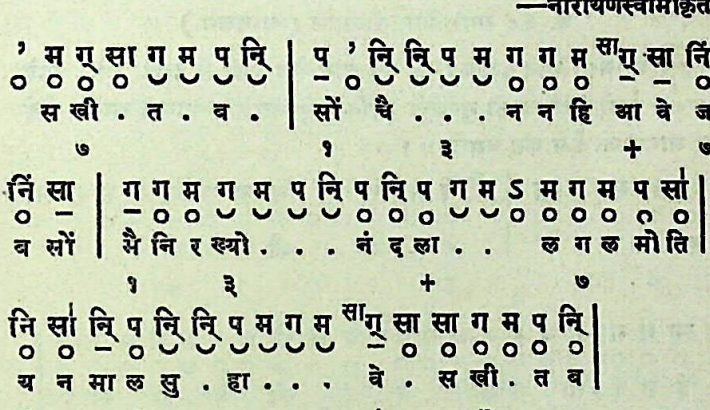
' म ग् सा ग म प नि | प ' नि् नि् प म ग ग म सा ग् सा निं
० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
स खी . त . व . | सों चै . . . न न हि आ वे ज
७ १ ३ + ७
निं सा | ग ग म ग म प नि प नि प ग म ऽ म ग म प सां |
० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
ब सों | मैं नि र ख्यो . . . नं द ला . . ल ग ल मो ति |
१ ३ + ७
नि सां नि् प नि् नि् प म ग म सा ग् सा सा ग म प नि् |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
य न मा ल सु . हा . . . वे . स खी . त ब |
१ ३ + ७

॥ अंतरा ॥

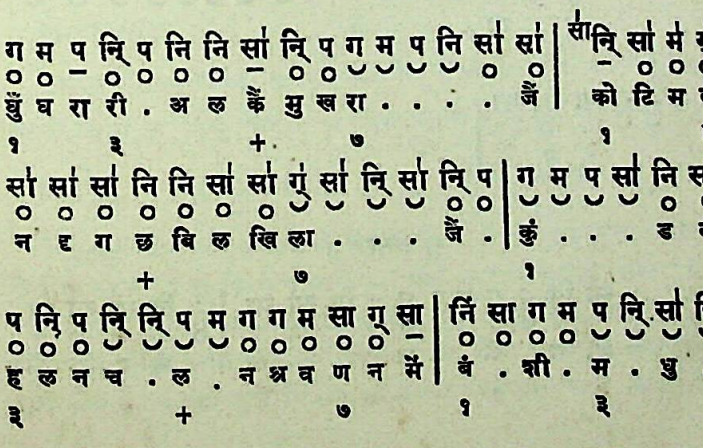
ग म प नि् प नि नि सां नि् प ग म प नि सां सां | सां नि् सां म ग्
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ०
घुँ घ रा री . अ ल कैं मु ख रा . . . . जैं | को टि म द
१ ३ + ७ १ ३
सां सां सां नि नि सां सां ग् सां नि् सां नि् प | ग म प सां नि सां
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ०
न द ग छ बि ल खि ला . . . जैं . | कुं . . . ड ल
+ ७ १
प नि् प नि् नि् प म ग ग म सा ग् सा | निं सा ग म प नि् सां नि्
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ०
ह ल न च . ल . न श्र व ण न में | बं . शी . म . धु .
३ + ७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प म ग म सा ग् सा सा ग म प नि् |
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ — ० ० ० ० ० ० |
र . ब . जा वै स खी . त ब | सों
+ ७

क्र. ६८ राग–जोग, तीनताल (मध्यलय)

द्वारे मेरे बंसी कौन बजावे। नई नई तान लेत बंसी में ठाडो गौरी गावे ॥ ध्रु० ॥ चलो सखी वाको मुखदेखें नंदकि धेनु चरावे। सावरी सखी सोई बड भागन जो हँस कंठ लगावे ॥ १ ॥

' ग् सा सा ऽ सा | ग् निं सा नि् पं ' नि् सा ग् सा ग् म ग् सा
० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ०
द्वा रे मे रे | बं . सी . कौ न ब जा . . वे .
७ १ ३ +

निं सा ग ग | ग म म ग म प प नि् प सां नि् प म ग ग म प नि |
० ० ० ० | ० ० ० ⌣ ⌣ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
न ई न ई | ता . न ले . . त बं . सी . मे . ठा . डो . |
७ १ ३ + ७

प नि् सां गं् सां नि् सां गं् सां नि् प नि् प म ग् म ग् सा नि् सा
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
गौ . . . री . गा . . . वे . . . . . .
१ ३ +

सा ग् म ग् सा सा सा |
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० |
द्वा . . . रे मे रे |
७

॥ अंतरा ॥

ग म ऽ प सां नि् प ग म प प प नि सां सां | ' नि् सां सां नि्
० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ⌣ ⌣ ० — | ० ० ० ० ⌣
च लो स खी वा . को . मु ख दे . . खें | नं द कि धे
१ ३ + ७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

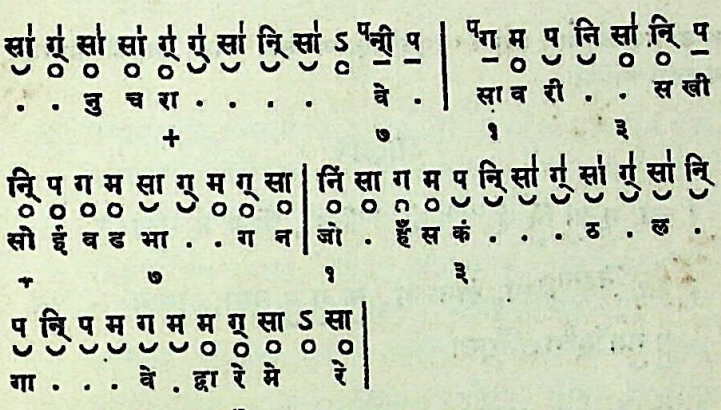

राग—जोग-कंस

इस राग में दो गांधार और दो निषाद लगते है। धैवत कोमल है। बाकी सब स्वर शुद्ध है। रिषभ वर्जित है।

जाति—षाडव वादी—मध्यम संवादी—षड्ज

समय—उत्तर रात्रि

साधारण रूपसे रागका चलन—सा निंध् सानिं सा, निं सा मग् मग्, सा ग रेग म, म निध् निध् म, प म ग, सा ग म ग् सा, सा ग म प म, म नी निध्, प ध् नी ध् प म प म रेग म, मग् मग् गनीं सा

विशेष—जोग और मालकंसके मेलसे यह राग उत्पन्न हुवा, कोमल निषाद केवल 'प ध् नि् ध् प म ग म,' यही स्वर विन्याससे आता है। और जगह कोमल निषाद का उपयोग नहि करना चाहिये। यह राग भी आर्वाचीन होनेसे इसमे मतभेद होना संभव है। साथसाथ चंद्रकंसका जादा मेल है। उसीसे शुद्ध निषाद का उपयोग ज्यादा किया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलापोंका अभ्यास करनेसे रागका स्वरूप स्पष्ट होकर रागकी मधुरता ख्यालमे आयेगी।

आलाप

१ सा, गु सा निं धं, निंधंनीं, सानिंसा, निंसामग्मगसा

२ सा, निंधंसानिंसा, धंनिंसाग्, सा गु म गुसा, निंसागरेगम, पम, प गममग्मग्, सागसा

३ धं निं साग, सा ग मपम, मनिधंनिधंम, पमग, सा गमगसा

४ साग्मनिधंनिधंपम, मनीनिध्, पधं निधंपमपमरेगम, सा ग म धंपम, सा ग म पम, प ग ममग्मग्गनिंसा

५ निंसाग्मधंनीसानिनिध्, धं निंसानिंसा, ग् गं सा नि सानि ध्, निधंनीधंम, प धंनीधंमप, प म गम, मग्मगसा

६ गु म ध निंसानिधंनीसा, धं नि सामग्मग्मग्गनिंसा, निंसानि गंसा गं सा निधं म धंनी धं नि सा निधंम, प धंनीधंपम, प मगम, सागमग्मग्गनींसा

७ मग्मग्गनींसा, पमगरेगम, निधंनिधंपम, निनिध्, साऽनिगंसा, ग्, मम्मग्मग्गनीसा, नि सा गंसा, नि गं सानिध्, म धंनीधंम, प धं निधंपम, गमगरेगम, मग्मग्गनींसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तान

८ निंसाग्मग्सा,निंसागमग्सानिंसा, निंसागमध्निध्मपमगमग्सा, निंसागमध्निसांनिध्मपध्नीध्पमगमग्सा, निंसागमध्नीसांग्सा निध्निसांग्मग्सांनिध्मपध्नीध्पमगमग्सा

९ नींसागमध्ध्- मध्ध्- मध्ध्- पमगमग्सा, निंसागमध्नीनी- ध्नीनी-ध्म-पध्नीध्पमगमग्सा, निंसागमध्नीसांग्ग्- सांग्ग्- सांनिध्म-पध्नीनी-ध्नीनी-ध्नीनी-ध्पगम-पपमग-मग्सा

१० सागग-गमम- मध्ध्- ध्निनि- निसांसा- सांग्ग्- निसांसा- ध्निनि-पध्ध्-ध्नीनी-पध्ध्-मपप-गमम-साग्ग्-निंसासा

११ सागमपमग- मध्निसांनिध्- ध्निसांग्सांनि- सांगमग्सांनि- ध्निसांनिध्म-पध्नीध्पम-गमग्सानिंसा

१२ निंसागमध्ध्-गमध्नीसांसा- मध्नीसांग्ग्- ध्निसांमम-ग्मग्सांनीनी-ध्नीध्ध्मम-मपमगसासा

ऋ. ६९ राग-जोगकंस, ख्याल; एकताल

आव पियारे मीत हमारे। निस दिन देखूँ पाँव तुम्हारे ॥ धृ० ॥ जे तुझ पाऊँ अंग लगाऊँ। क्यूँ समझाऊँ बारण जाऊँ ॥ १ ॥

कवी-दादू दयाल

| | | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ अंतरा ॥

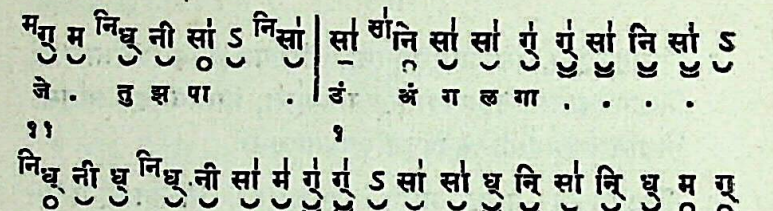

क्र. ७० राग—जोगकंस, तीनताल (मध्यलय)

प्रीतम, तू मोहिं प्रानते प्यारे। जो तोहि देखि हियो सुख पावत, सो बड़ भागन वारों ॥ धृ० ॥ जो तोको पल भरन निहारूँ, दीखत जग अँधियारो ॥ १ ॥

कवी—नारायणस्वामी

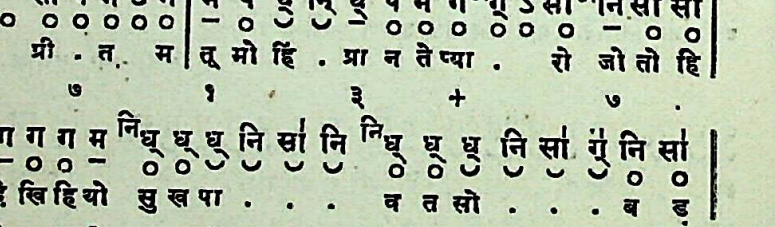

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध् नि् ध् प म
हिं . प्रा न ते
३

॥ अंतरा ॥

म ग् म ग् म नि ध् | नि नि सां सां सां गं मं गं सां नी सां सां
जो तो को प ल | म र न नि हा . . . रू दी ख त
\+ ७ १ ३ \+

नि ध् ध् म म | प ऽ ध् नि् ध् म प ग म ग ग् सा प ऽ म ऽ ग | म
ज ग अं धि | या . . रो . . . . . मी त म | द्
७ १ ३ + ७ १

राग—चंद्र-कंस

इस रागमें गान्धार धैवत कोमल है। पंचम वर्जित है। बाकी सब स्वर शुद्ध है।

जाति—षाडव **वादी**—मध्यम **संवादी**—षडज.

समय—रात्रीका तिसरा प्रहर

साधारण रूपसे राग का चलन—सा नि ध् नी सा, ध् नि सा ग्, सा ग म नि सा नि सा, म नि ध् नी ध् म, म ध् नि सां, ध् नि सां रें ऽ सां नि ध्, म नि ध् नी ध् म, ग् म ध् म ग्, सा ग् म नि सा नि सा

विशेष—यह मालकंस का एक अर्वाचीन प्रकार है। प्राचीन चंद्रकंस इससे बहुत अलग है। मालकंस में शुद्ध निषाद का प्रयोग करना यही इस रागकी विशेषता है। तार सप्तकमे शुद्ध रिषभ का उपयोग 'ध् नि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां रें सां नि ध्' इस प्रकारसे करते है। बाकी शुद्ध रिषभ का उपयोग अल्पत्वमेही करते है। आलापों को देखनेसे भली भांति राग का स्वरूप स्पष्ट होगा।

आलाप

१ सा$^{नि}$धं$^{नि}$धं$^{नी}$सा, धं$^{नि}$सा^{म}ग्^{म}ग्^{म}नि$^{नि}$सा

२ धं नि सा^{म}ग्^{म}ग्, सा ग म धु^{म}ग्^{म}ग्, सा ग म$^{नि}$नि$^{सा}$नि$^{नि}$सा

३ नि$^{नि}$धं$^{नि}$सा$^{नि}$म, ^{म}ग्, म$^{नि}$ग्$^{नि}$ध्$^{नी}$नि$^{नि}$ध्$^{नि}$म^{म}ग्, सा ग म$^{नि}$नि$^{सा}$नि$^{नि}$सा

४ सा^{म}ग्^{म}, म$^{नि}$ध्$^{नि}$ध्$^{नि}$म^{म}ग्, म$^{नि}$ध्$^{नी}$सा$^{नि}$सा, सा$^{नि}$ध्, म$^{नी}$ध्$^{नी}$ध्^{म}म^{म}ग्, सा ग म धु^{म}ग्, सा ग म$^{नि}$नि$^{सा}$नि$^{नि}$सा

५ नि सा ग म धु$^{नी}$सा$^{नि}$सा$^{नि}$नि$^{नि}$ध्, धु नि सा, धु नि सा$^{रें}$ऽसा$^{रें}$सा नि$^{नि}$ध्, धु नि सा धु नि सा$^{नि}$ध्$^{नि}$म^{म}ग्, ग म धु$^{नी}$नि$^{नि}$ध्$^{नि}$म^{म}ग्, सा ग म$^{नि}$नि$^{सा}$नि$^{नि}$सा

६ नि सा ग म धु नी सा$^{नि}$ध्$^{सा}$नि सा, धु नि सा$^{ग्}$^{म}ग्, सा ग म ग सा, ग्ग सा नि सा^{ऽ}नि ग सा नि ध्, धु नि सा$^{रें}$ऽसा$^{रें}$सा नि नि$^{नि}$ध्, धु नि सा$^{नि}$ध्$^{नि}$ध्^{म}ग्, सा ग म धु^{म}ग्^{म}नी सा

तान

७ निसाग्मग्सा, निसाग्मध्मग्मग्सा, निसाग्मध्निध्मग्मग्सा, निसाग्मध्निसा$^{नि}$ध्मग्मग्सा, निसाग्मध्निसा$^{रें}$सा$^{नि}$ध्मग्मग्सा, निसाग्मध्निसा$^{ग्}$सा$^{नि}$ध्मग्मग्सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८ निंसाग्मम–ग्मम–ग्सा, निंसाग्मध्ध्–मध्ध्–मध्ध्–मगसा, नींसाग्मध्नीनी–ध्नीनी–ध्म–ग्ममग्सा, निंसाग्मध्निंसांसां–निंसांसां–निंसांसां–ध्निंसांरेंरें–सांरेंरें–सांनि-ध्नीनी-ध्नीनी-ध्मग्मग्सा

९ ग्ममग्सा–ध्निध्म–निंसांनिध्–सांग्सांनि–ग्ममग्सा–सांरेंसांनि–ध्निध्म–ग्ममग्सा

१० साग्ममग्सानिं–साग्मधमग्–ग्ममध्निध्म–मध्निंसांनिध्–ध्निंसांग्सांनि, सांग्ममग्सांनि–ध्निंसांरेंसांनि–मध्निंसांनिध्–ग्ममध्निध्म–साग्ममग्सा

११ साग्ग्–ग्मम–मध्ध्–ध्नीनी–निंसांसां–सांग्ग्–ग्ममम–सांरेंरें–निंसांसां–ध्नीनी–मध्ध्–ग्मम–साग्ग्–निंसासा

१२ निंसाग्ममध्नीध्म–ग्ममध्निंसांग्सांनि–ध्निंसांग्ममग्सांनि–ध्निंसांरेंसांनिध्नी–मध्नीसांनिध्ममग्–ग्ममध्नीध्मग्सा

ऋ. ७१ राग–चंद्र-कंस, ख्याल; तिलवाडा

नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो। तुम नाथनके नाथ सुवामी, दाता नाम तिहारो ॥ धृ० ॥ तीन लोकके तुम प्रतिपालक, मैं हूँ दास तिहारो ॥ १ ॥

—कवी-सूरदास

म	ग्	म	ध्	नी	सां	नि	ध्	नी	सां	सां	नि	ध्	म	म	ग्	सा
०	ु	ु	ु	ु	०	ु	ु		–	ु	ु	ु	ु	०	ु	ु
ना	थ	मो	.	.		.	.		ही	अ	ब	की	.	.	बे	.
									१							

म	ग्	म	निं	सा	सा	सां	निं	निं	सा	म	ग्	ग्	म	नि	ध्	ऽ
ु	ु	ु	ु	ु	०		ु	ु	०	ु	ु	ु	०	ु	ु	०
बा		.	.	रो		तु	म	ना		थ	न	के	.	.		ना
		५														+

ध्	नि	सां	ऽ	नि	
ु	ु	ु	०	ु	
	.	.		थ	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां सां ध् नि सां रें ऽ सां रें सां नि निध् ध् नि सां नि ध् म मगु
० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
स्वा मी दा . . . ता . . . . ना . . म ति हा .
१३

मनिं सा मगु म ध् नि सां निध् नी |
⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣ |
रो . ना थ मो . . . . |ही

॥ अंतरा ॥

मगु ऽ म ध् नि सां ऽ नि सां ऽ नि नि सां सां गु गु सां नि सां ऽ
० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ – – ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
ती न लो . . क के तु म प्र ति पा . . . .
१ ५

ऽ नि गु सां नि निध् ऽ निध् नी सां म गु सां ऽ सां सां ध् नि सां
० ० ⌣ ⌣ ⌣ ० – ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
. ल . क . मै . हूँ . दा . स ति हा . .
+

रें ऽ निसां नि ध् म मगु मनिं सा
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ⌣ ⌣
. रो . . . . . .
१३

क्र. ७२ राग–चंद्रकंस, तीनताल (मध्यलय)

अब मोहि भीजत क्यों न उबारो। दीनबन्धु करुनामय स्वामी जनके दुःख निवारो ॥ ध्रु० ॥ ममता घटा, मोहकी बूँदे, सलिता मैन अपारो। बूड़त कतहुं थाह नहिं पावत गुरुजन ओट अधारो ॥ १ ॥

—कवी–सूरदास

सां गु सां नि सां निध् नी | सां नि ध् म गु सा सा गु म गु सा
० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ० ० ० | – ० ० – ० ० ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ –
अ . ब . मो हि . | भी ज त क्यों न उ बा . . . रो
७ १ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा निं सा म | ऽ म म ग् म नि ध् नी नी ध् नि सां नि ध् नि ध् नि ध्
० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
दी न बं | धु क रु ना म य स्वा . . मी ज न के
७ १ ३ + ७

नि सां रें | ऽ सां सां सां नि ध् नि सां नि ध् नि ध् म ग् म ग् सा
० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
. . . | दुः ख नि . वा . . . रो . . . . . .
१ ३ +

निं सा सां ग् सां नि सां नि ध् नी |
० ० ० ० ० ० ० ० ० |
. . अ . ब . मो हि . |
७

॥ अंतरा ॥

म ग् ग् म म नि ध् ध् नि सां नि सां रें सां नि सां | सां नि सां म ग्
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ०
म म ता घ टा मो . . ह की बूँ . . दे | स लि ता
१ ३ + ७ १

मं ग् सां सां सां ध् नि सां रें ऽ सां रें सां नि ध् | ध् नि सां सां नि
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ०
. मैं . न अ पा . . . रो . . | बू . . ड त
३ + ७ १

नि ध् ध् म म ग् ऽ ग् सा ग् सा ग् म ग् सा | म ग् म नि ध् नी ध् नि
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ०
क त हुं था ह न हि पा . . व त | गु रु ज न ओ .
३ + ७ १ ३

सां रें सां सां सां रें सां नि ध् नि सां ग् सां नि सां नि ध् नी |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
. . ट अ धा . . . रो . अ . ब . मो ही . |
+ ७

रा.वि.(६)१०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग–पंचम-मालकंस

इस राग रागमें मालकंसके स्वरही लगते है। ग ध नी कोमल लगते है। और ऋषभ वर्जित है। मालकंसमें रिषभ पंचम वर्जित रहते है। इस पंचम मालकंसमें केवल रिषभ वर्जित है। बाकी सब चलन वादी संवादी इत्यादी मालकंस रागके माफक ही है। पंचम साधारण रूपसे एक नियमके साथ लगाना चाहिये। सीधे आरोह अवरोहमें पंचम सीधा नहि लगेगा। अवरोह करते समय 'सां नि् ध् म प, म ग् सा इस तरह पंचम लगेगा। इसके अलग प्रकारमें 'सा ग् म ध् प म' 'सा ग् म ग् प म' 'ध् म प म' 'सां नि् ध् म प म' इस तरहसे पंचमका उपयोग करके इस रागको गाते है। सब चलन राग मालकंसकाही होनेसे इसके आलाप तान अलग नहि दिये है। मालकंस रागके आलाप-तान लेकर ऊपर दिये हुए ढंगसे पंचम लगाना चाहिये। उसीसे यह राग गाना उतना कठिन नहि होगा।

क्र. ७३ राग–पंचम-मालकंस, तीनताल (मध्यलय)

ऐसे प्रभु अनाथके स्वामी। कहियत दीनदास पर-पीरक सब घट अन्तर यामी ॥ धृ० ॥ करत बिबस्त्र द्रुपद-तनयाको 'सरन' शब्द कहि आयो' पूर्ण अनन्त कोटि परिवसननि, अरिको गरब गँवायो ॥ १ ॥

कवी–सूरदास

'	ध्	नि्	सां	नि्	ध्	नि्	ध्	म	ग्	म प	'	म	ग्	सा	ग्	म	ग्	सा	सा
०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०	—	०	०	०	०	०	०	०	—	
ऐ	.	.	.	से	.	.	.	प्र		भू		अ	ना	.	थ	के	स्वा	.	मी
७										१			३			+			

नि्	नि्	सा	सा	म	ग्	ग्	म	ध्	नी	ध्	प	म	म	ग्	म	ग्	सा	म	ग्	म	ध्	नी	
०	०	०	०	—	०	ऽ	ऽ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
क	हि	य	त	दी	न	दा	.	.	स	प	र	पी	.	र	क	स	ब	घ	ट				
७				१			३			+				७										

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा गु सा नि ध म गु म ध नि सा नि ध म गु म प म गु सा ध
० ०
अं . . . त र जा . . . . . मी . . . . . ऐ
१ ३ +

नि सा नि ध नि ध म गु |
० ० ० ० ० ० ० ० |
. . . से . . . प्र | भू
७

॥ अंतरा ॥

म गु गु म म नि ध नि सा सा सा सा सा गु नि सा सा | सा नि नि सा
० ० ० ० – ० ० ० ० ० ० ० ० ० – | ० ० ० ०
क र त वि ब ख्व द्रु प द त न था . को | स र न
१ ३ + ७ १

म गु ऽ म गु सा गु गु सा नि सा ऽ नि सा गु सा नि ध | गु सा सा
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० – | ० ० ०
श ब्द क हि आ . . . . यो | पू र्ण अ
३ + ७ १

नि ध म ध नि सा नि ध म गु प म ग सा | सा नि सा म ग म ध नि
– ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ०
नं त को . . . टि प रि ब स न नि | अ रि को . ग र
३ + ७ १ ३

सा गु गु सा नि ध म गु म ध नि सा नि ध नि ध म गु | म प
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | – –
ब ग्ँ . वा . . . यो . ऐ . . . से . . . प्र | भू
+ ७ १

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—मालती-बसंत

इस राग में दो मध्यम और ऋषभ कोमल लगता हैं और पंचम वर्जित हैं।

जाति—षाडव वादी—धैवत संवादी—गान्धार

समय—रात का अंतिम प्रहर

राग का मुख्य अंग—सा म म॑ म ग, म॑ ध निं॑ध, म॑ ग रे॒ सा, निं, रे॒ सा

आरोह—सा निं रे सा, सा ग, म॑ ध सां

अवरोह—सां नि रें॒ नि ध, म॑ ग, सा म म॑ म ग, म॑ ग रे॒ सा

विशेष—सोहनी, हिण्डोल, पूरिया और ललित इन रागोंकी छाया इस रागमें आती है। पूर्वांगमें पूरिया और उत्तरांगमें हिण्डोल राग मिलाकर यह राग गाया जाता है और चलन सोहनीका रहेगा। "म॑ ग, म ग रे॒ सा" इसमें बसन्तका रूप "म॑ ग रे॒ सा रे॒ सा नीं" इसमें पूरियाका रूप, "सा ध ध नी म॑ ध" इसमें हिण्डोलका रूप और "सा म म, म॑ म ग," इसमें ललित रागका रूप दिखाई देता है। इन चारों रागोंका मेल करते हुवे गानेमें कठिनता उत्पन्न होती है। यही इस रागकी विशेषता है। निम्न लिखित आलापोंको देखनेसे रागका चलन और स्वरूप और स्पष्टतासे प्रतीत होगा।

आलाप

१ सा रे॒ सा निंध, सानिंरेसा, निं रे॒ ग, म॑गरेसा

२ सा रे॒ सानिंध, निंधंसाऽनिंरेसा, निं रे॒ ग, म॑ग, धम॑ध, धम॑ग, म॑ग, म॑गरेसानिं, रेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३ साम, म^ग^मम-म-ग, ^ध^म-ध, ^नि^म-ध, धम-मग, रे॒ ग॒म-गरे॒सा

४ साध^नि^ध^नि^ध^नि^म-ध, ^ध^म-^नि^धसा॑, निरे॒॑सा॑, सा॑ रे॒॑ सा॒॑नीध, नि॒ध म-ग, साम, म-मग, रे॒गम-गरे॒सा

५ साम, म-मग, साध^नि^ध^नि^ध^नि^म-^नि^धसा॑निरे॒॑सा॑, निरे॒॑ग॑, म॒॑ नि रे॒॑सा॑, सा॑निरे॒॑निध, ध॒ नि॒ ध॒ ध॒सा॑^सा॑^धम-ग, मनिधम-ग, साम, म-मग, म-गरे॒सा

६ निं, म-गरे॒सा, म^म-^म^म-^मग, निधम-ग, सा॑^सा॑^ध^सा॑^धसा॑, ग॑सा॑, म॑-ग॑रे॒॑सा॑, सा॑ रे॒॑ सा॒॑निध, ^नि^म-ध, सा॒मम-मग, म-गरे॒सा

तान

७ सागम-गरे॒सा, सागम-धधम-गम-गरे॒सा, सागम-धसा॑सा॑धम-ग मम-गम-गरे॒सा, सागम-धसा॑सा॑ग॑ग॑रे॒॑सा॑, म॑-ग॑रे॒॑सा॑निधम-ग म-गरे॒सा

८ सागमम-मम-गम-गरे॒सा, सागम-धधनिम-धम-गम-गरे॒सा, निंरे॒ गम-धनिरे॒॑निधनिधम-गम-गरे॒सा, गम-धसा॑ग॑ग॑सा॑सा॑म॑-ग॑रे॒॑सा॑, निधम-गम-गरे॒सा

९ सासा–रे॒निंसा–रे॒निंसा–रे॒सानिंध–धंनिंरे॒गम-गरे॒सा–निंरे॒गम-धगम-गरे॒सा, निनिधम-गम-गरे॒निंसा, सा॑सा॑धध–ग॑ग॑सा॑सा॑–म॑-ग॑रे॒॑सा॑निधम-गम-गरे॒सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१० सामम–म॒गम– म॒गम–म॒गरे॒सा– साधध– निधध– निधध–
निधम॒ग–गम॒धसां– रे॒ंनिसां– रे॒ंनिसां– रे॒ंसांनिध– धनिरे॒ंगं–
मं॒गंगं–मं॒गंगं–मं॒गंरे॒ंसां–धनि– रे॒ंनिनि– रे॒ंनिनि– रे॒ंनिधम –
गम॒धध–म॒धध–म॒धध–म॒ग–गम॒म॒–गम॒म॒–गरे॒निंसा

११ गम॒म॒–गम॒म॒–गरे॒–म॒धध–म॒धध–म॒ग–धसांसां–धसांसां-
धम॒–रे॒ंगंगं–रे॒ंगंगं–रे॒ंसां–धनिनि–धनिनि-धम॒-मम॒म-मम॒म-
गग–गम॒म॒–गम॒म॒–गरे॒निंसा

१२ सासा–गग–मम–म॒म॒–मम–गग–म॒म॒– धध– सांसां– रे॒ंरे॒–
निनि–धध–निनि–म॒म॒ –धध–म॒म॒–गग–म॒म॒–मम–म॒म॒–
गग–म॒म॒–गग–रे॒रे॒–सासा

क्र. १७४ राग–मालती-बसंत, ख्याल; आडाचौताल

ताल सुर भेद गावत गुनियन सब तान तालके प्रमान न्यारे न्यारे कर दिखात ॥ धृ० ॥ वादी-समवादी संकीरन संपूरन कहे गुरु तानसेन उपज निपज न्यारे न्यारे कर दिखात ॥ १ ॥

संग्रहकार स्व. पं. वझेबुवा

'	म॒	ऽ	ग	रे॒	सा	रे॒	सा	नीं	ऽ	धं	सा	ऽ	म	म	म	म	म	म	ऽ	म॒	म
०	०	०	०	०	०	◡	◡	०	–	–	–	–	–	–	०	०	०	०	–	०	०
	ता		ल	सु	र	भे	.	.		द	गा		व	त	गु	नि	य	न		स	.
						१				३				७	+					११	

ग	ग	ऽ	ग	म॒	ध	ऽ	ध	ध॒म॒	ध	नि॒सां	ऽ	सां	नि	रे॒	नि	ध	म॒	ग	म॒
–	–	०	०	०	०	०	०	–	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ब	ता		न	ता	.		ल	के	प्र	मा		न	न्या	.	रे	न्या	.	रे	क
				१				३							७		+		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग म॒ ग रे॒ सा ' म॒ ऽ ग रे॒ सा |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
र दि खा . त ता ल सु र |
११

॥ अंतरा ॥

सा ध ऽ ध ध ध नि॒ म॒ ऽ ध ध ध॒ म॒ ध सां सां सां सां नि रें॒ नि ध |
० ० — — ० ० — — — — ० ० ० ० ० — ० ० ० ० |
वा . दी स म वा . दि सं की . र न सं पू . र न |
१ ३ ७ + ११

म॒ ग म॒ ग ऽ म॒ ग म॒ ग रे॒ नि॒ सा ऽ सा ऽ नि॒ नि॒ धं नि॒ सा सा |
० ० ० ० — — — — — — — — ० ० ० ० ० ० |
क हे गु रु ता . न से . न उ प ज नि प ज |
१ ३ ७ + ११

सा ध ध म॒ ग ग म॒ ग म॒ ग ऽ रे॒ सा ' म॒ ऽ ग रे॒ सा |
— — — — — — ० ० ० ० — — — ० ० ० ० ० |
न्या . रे न्या . रे क र दि खा . त ता ल सु र | भेद
१ ३ ७ + ११

क. ७५ राग—मालती-बसंत, तीनताल (मध्यलय)

संतो ऐसा धुन्ध पसारा। इस घट अंतर बाग-बगीचा। इसीमे सिरजन हारा ॥ ध्रु० ॥ इस घट अंतर सात समुद्रा इसीमे वारा-पारा। इस घट अंतर हीरा मोती इसीमे परखन हारा ॥ १ ॥

' म॒ ऽ ग रे॒ नि॒ सा नि॒ धं | ' सा सा सा म॒ म॒ म॒ म॒ ग ' ग ग
० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ०
सं तो ऐ . . . सा . | धु न्ध प सा रा . . . इ स
+ ७ १ ३ +

ग ग म॒ ध ध | ध॒ म॒ ध म॒ ध नि सां सां नि रें॒ नि ध ध म॒ ग |
० ० — ० ० | — ० ० ० ० ० — ० ० — ० ० ० ० |
घ ट अं न्त र | बा ग ब गी . . चा इ सी मे सि र ज न |
७ १ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म॒ ग ऽ म॒ ग रे॒ सा
० ० — ० ० ० ०
हा . रा . . .
१ ३

॥ अंतरा ॥

सा सा ध ध ध ध ध | नि॒ म॒ ध म॒ ध नि सां सां सां सां म॒ ग सां |
० ० ८ ० — ० ० | — ० ० ◡ ◡ ० — ० ० — — — |
इ स घ ट अं त र | सा त स मु . . द्रा इ सी मे वा रा |
+ ७ १ ३ + ७

रे॒ नि सां ध नि॒ म॒ ध सां सां ध ध म॒ ग ग | ग ग म॒ ध ग म॒ ग |
◡ ◡ ० — — — ० ० ० ० — ० ० | — ◡ ◡ ◡ ◡ ० ० |
या . . . रा . इ स घ ट अं त र | ही रा . . . मो . |
१ ३ + ७ १ ३

रे॒ सा सा सा ग म॒ म॒ ध ध | ध सां ऽ नि ध नि ध म॒ ग म॒ |
० ० ० ० — ० ० ० ० | ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ |
ती . इ सी मे प र ख न | हा . . रा . . . . . |
+ ७ १ ३

ध म॒ ग रे॒ नि॒ सा
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡
. . . . . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—भटिहार (भटियार)

इस राग में रिषभ कोमल तथा दो मध्यम लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते है।

जाति—संपूर्ण (चलनमे ओडव-संपूर्ण) वादी—मध्यम

संवादी—षडज समय—रात्रि का अंतिम प्रहर

साधारण रूपसे राग का चलनः—सा ध प म, म॰ ध सां, रें नि ध प प ध नी प, ध म, प ग रे सा

आरोह—सा रे सा म, प ग, म॰ ध सां

अवरोह—रें नि ध प म, प ग रे सा

विशेष—भटिहार अथवा भटियार यह राग रात्रिके अन्तिम प्रहरमें ही अधिकतर गाया जाता है। तीव्र मध्यम यह स्वर रात्रिगेयत्वका निदर्शक है। इस रागमें प ग ध म॰ यह स्वर संगति रागकी मधुरता बढ़ाती है। आरोहमें निषाद दुर्बल और अवरोहमें वक्र रूपसे आता है। भटिहार इस पुराने रागका उल्लेख ग्रन्थोंमें मिलता है। परन्तु आजकलका इसका स्वरूप ग्रन्थोक्तसे कुछ भिन्नही दीख पडता है।

आलाप

१ सारेसा, ग, पगरेसा, साम, मपग, म॰ध, म॰ग, पगरेसा

२ सारेसाम, मपपग, म॰ध, रेंनिधपम, मु पपग, पगरेसा

३ सा रे निं सामं, पमपमपग, म॰धनिसां, सांऽनिरेंनिधप, पु धु निनिप, धम, पग, निधम॰ग, पगरेसा

४ म॰धसां, सांऽनिरेंसां, रेंगरेंसां, म॰गरेंसां, रेंनिधप, सांध, नुिप, धम, पुग, रेंनिधम॰ग, पगरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ साध, निधनिधपम, निधप, रेंनिधप, गंरेंसां, मंगंरेंसां, मंग रेंसा, धडमं, सांडनि, रेंनिधप, पधनीप, धम, पगरेंसा

६ म, निधपम, धु नि धु धसांडनिरेंसां, रेंगं रेंरेंगं, मंगंरेंसां, सांडनिरेंनिध, धु नि धु धनिप, पु धु मं पधम, मु पु मु मु पग, पगरेंसा

७ साधनिधनिधमंधसां, निरेंसां, सांरेंगं, मंगंरेंसां, निसांडनिरें निध, निधनीप, धु मंमं रेंनिधप, निधपम, मधनिधपम, मु पु पग, पगरेंसा

तान

८ सारेंसासागगरेंसा, सासाममपपगगमंगरेंसा, सासाममपपधध ममपपगगरेंनिंसा, सासागगपपधधममपपधधनीनीपपधधममपप गरेंनिंसा, सासागगममपपधधनीनीपपनिनिरें रेंनीनीधधपपममपप गगमंगरेंसा

९ सारेंनिंसागगरेंसा, पपगरेंनिंसा, धधममपपगरेंनिंसा, निनिपप-रेंनिधप–गंगंरेंसां–रेंनिधप–धधममपपगरेंनिंसा

१० सारेंनिंसागरेंनिंसा, गपगरेंनिंसा, मंधनिरेंनिधपप, धनिपप–गंगंरेंनिधप–धनिधप–मंधनीधपमं–गपगरेंनिंसा

११ सागग–गमम–मपप–पधध–धनिनि–निरें रें– रेंगंगं– गंमंमं–रेंगंगं–निरें रें–धनीनी–पधध–मपप–गपगरेंनिंसा

१२ सासा–मम–पप–गग–मंमं–गरेंनिंसा, सासा–मम–पप–धध-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नीनी–पप–मम–धध–निनि–रेंरें–निनि–धध–पप–गग–पप–गरेंनिंसा

१३ सासासा–धधध–पप–गग–पप–गरेंनिंसा, ममम–निनिनि–धध–निनिनि–रेंरेंरें–निनि–गंगंगं–रेंरेंरें–निनि–धधध–नीनीनी–पप–ममम–धधध–पप–गगग–पपप–गरेंनिंसा

१४ ममम–धधध– मममम– नीनीनी– धधध– रेंरेंरें–निनिनि–गंगंगं–निनिनि–रेंरेंरें–धधध–नीनीनी–पपप– धधध– ममम–पपप–गरेंनिंसा

१५ रेंगरेंसा–मधपम–धनिधप–निरेंनिध–रेंगंरेंसां– गंमं–गंरें– निरें निध–धनिधप–मधमग–गपगरें–रेंगरेंसा

क्र. ७६ राग–भटिहार, ख्याल; एकताल

तू करतार करो बेडा पार ॥ धृ० ॥ इतनी बिनती मोरी सुन लीजिये महाराज करो बेडा पार ॥ १ ॥

ग	म	प	म	प	प	ग	मरें	सा	ग	प	ग	प	ग	गरें	सा	प	धनी	धप	म	ध
◡	◡	◡	◡	—	०	०	—	◡	◡	◡	◡	◡	◡	—	—	०	०	०	◡	◡
तू	.	क	र	ता	.	.	र	क	रो	बे	.	डा	.	पा	.	.	.	.	.	.
				१								५		+						

निध	पप	पग	प	ग	रें	सा	
०	०	०	◡	◡	०	०	
.	.	.	.	.	र	.	
९				११			

॥ अंतरा ॥

म	ध	सां	सां	सां	सां	ऽ	रें	सां	ऽ	सां	सां	रें	नि	ध	पप	पग	प	ग	रें	सा
◡	◡	◡	◡	◡	◡	०	◡	◡	०	◡	◡	◡	०	◡	◡	०	◡	◡	०	—
इ	त	नी	बि	न	ती	मो	री	सु	न				लीजि	ये	.	म	हा	रा		ज
				१												५				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग प ग प ग रे सा म ध नि ध प प ग प ग रे सा ग म प म
ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० ऽ ऽ ० ० ० ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
क रो बे . डा . पा . . . . . र . तू . क र तार
+ ९ ११

क. ७७ राग–भटिहार, तीनताल (मध्यलय)

आओ प्यारे हृदय-सदनमें। पल कपाट दै राखूँगी ॥ ध्रु० ॥ जान लिये छल-छंद-फंद सब। अब न चले सत्य भाखूंगी ॥ १ ॥

–कवी जुगलप्रिया

सा ध ध | नि ध प म म ध प म ग रे रे सा म ध सां सां |
० ० ० ० | ० ० — ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० |
आ . ओ | प्या . रे ह्र द य स द न में प ल क पा |
७ १ ३ + ७

रें नि ध प म ध नि ध प म ग रे ऽ सा
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
. ट दे . रा . खूं . गी . .
१ ३ +

॥ अंतरा ॥

म ध सां | सां रें सां नि रें गं मं गं रें सां सां नि रें नि ध |
— ० ० | — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
जा न लि | ये छ ल छं . द फं . द स व श व न च |
७ १ ३ + ७

ध नि प म ध नि ध प म ग रे ऽ सा
— ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ले स त्य भा . खूं . गी . .
१ ३ +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ७८ राग–भटिहार, तीनताल (मध्यलय)

पियाको संदेसवा मोरा कहियो जाय मेरी प्यारी तोहे अमोल गहना बनाऊंगी ॥ धृ० ॥ कल न परत सखि मोहे दिन रतियां पियाको संदेसा नहि आवे तवतहँ शृंगार ना बनाऊंगी ॥ १ ॥

'	ध	म	ध	रें	नि	S	ध	म	प	प	ग	प	प	ध	ध	म	प	ग	रे	सा
	०	०	०	०	०	०	०	—	—	—	—	०	०	—	०	०	०	०		
	पि	या	को	सं	दे		स	बा		मो	रा	क	हि	यो	जा			य		
	+			७				१		३		+			७					

'	सा	म	म	म	म	प	ग	ग	ध	म	ध	सां	सां	नि	रें	सां	रें	नि	ध	ध
	०	०	०	०	०	⌣	⌣		०	०	०	०	०	०	०	—				
		मे		रि	प्या	री	तो		हे	अ	मो		ल	ग	ह	ना	ब	ना		ऊं
	१			३					+				७				१			

प	प	ग	ग	रे	सा
०	०	०	०		
गी		.	.		
३					

॥ अंतरा ॥

ध	म	ध	म	ध	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नि	रें	सां	नि	नि	रें		
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	—	०	०	०	०		
	क	ल	ना	प	र	त	स	खि	मो	हे	दि	न	र	ति	या	पिं	या	को		
	+			७					१				३			+					

म	ग	रें	सां	सां	सां	रें	नि	नि	ध	प	म	ध	म	ध	रें	नि	ध	ध		
०	०	०	—	०	०	०	०	०	—	०	०	०	०	०	०	०	०			
सं	दे		. सा	न	हि	आ		वे		.	त	ब	त	हँ	शृं	गा		र		
	७			१			३			+				७						

प	म	प	प	ग	ग	ग	रे	सा
—	०	०	०	०	०	०		
ना	ब	ना		. ऊं	गी		.	
३			१					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—भंखार

इस रागमें रिषभ कोमल और दो मध्यम लगते है। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

वादी—पंचम संवादी—षड्ज

समय—रात्री का अंतिम प्रहर

साधारण रूपसे राग का चलन—सा निं रें सा, ग, म प म ग, म॑ ध म॑ ग, प ग रें सा, निं नि सा रें ग, म ग, म॑ ध म॑ ग, म॑ ध सां, रें नि ध म॑ म ग, म॑ ग रें सा

विशेष—भंखार यह राग संपूर्ण है। यह राग उत्तरांग प्रधान होने से रात्रि के अन्तिम प्रहर मे गाया जाता है। इस राग में भटिहार की तरह दोनों मध्यमों का उपयोग किया जाता है। इस में मुक्त मध्यम भटिहार की तरह न होने से भटिहार इससे भिन्न रहता है। और भटिहार की तरह ही प ग, म॑ ध यह स्वर संगति अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह राग अप्रसिद्ध होनेसे सुनने में कम आता है।

आलाप

१ सानिंरेंसा, ग, पगरेंसा, निंनिंसारेंग, मग, म॑गरेंसा

२ निंसा, गमप, पमपग, म॑धम॑ग, गु म॑ गु गम॑ग, पगरेंसा

३ सानिंरेंसा, मग, म॑ध, म॑ धसां, रेंनिध, पमपग, पगरेंसा

४ म॑धसां, सांनिरेंसां, रेंगरेंसा, रेंनिध, सांम, मपग, पगरेंसा

५ म॑धसां, निरेंसां, गंडरेंमगरेंसां, सांडनिरेंनिध, म॑धसांनीधम॑ग, म॑गरेंसा

६ ग, म॑गरेंसा, मपग, धम॑ग, सांडनि, रेंसां, गरेंसां, म॑गरेंसां, म॑गरेंसा, साम, गु मप, पमपग, म॑धम॑ग, पमरेंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७ पगरेसा, ग म ग गमग, ध नि ध धनीध, रेंगं रेंरेंगंऽरें, गं मं गं गंमंऽगं, नि सां नि निरेंनिध, ग म ध ग मधमग, पगरेसा

८ निं निं सा रेंग, ग म प ग मपपग, म ध नी म धसां, नि रें गं नि रेंगंऽरें, सांम, ग मपपग, मधमग, मगरेसा

तान

९ सारेंनिंसागगरेसा, सागमपगमगरेसा, सागमपगमधनीधमग मगरेसा, सागम धनीसांरेंनिधमगपगरेसा, सागमधनीरेंगंरें सांनिरेंनिधमगमगरेसा

१० गगरेसा–पपगरेसा–धधमममगगपगरेसा – नीनीधधरेंरेंनिधनिध मगपगरेसा–नीनीधध–रेंरेंनिनि–गंगंरेंरें– मंमंगंरेंनिसां – रेंरें निध–निधमगपगरेसा

११ सागग–गमम–मधध–धनिनि–निरेंरें–रेंगंगं–गंमंमं-रेंगंगं– निरेंरें–धनिनि–मधध–गमम–गपप–गरेसा

१२ गमगरेंनिंसा–धनिधमगम–रेंगंरेंनिधनी–गंमंगंरेंनिसां – निरें निधमग–गमगरेंनिंसा

१३ गमम–गमम–गरे–धनिनि– धनिनि– धम – रेंगंगं – रेंगंगं– रेंनि–धनिनि–धनिनि–धम–गमम–गपप–गग–पपग–पपग–रेसा

१४ गमम–गपप–मधध–गमम–गपप–गरेसा–मधध-धनिनि-निरेंरें– धनिनि–रेंगंगं–निरेंरें–धनिनि–मधध–गमम–गपप–गरेसा

१५ गमगगमगरेसा–धनिधधनिधमग–रेंगंरेंरेंगंगंरेंनि –धनिधधनी निधम–गमगगपपगग–रेंगरेंरेंमगरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ७९ राग–मंखार, ख्याल; एकताल

सिमरसुमिर ताकों हौं जीवा। चरणकमल तेरे धोय धोय पीवा ॥ ध्रु० ॥
सुन सुन अमृत नाम ध्यावां। आठ पहर तेरे गुण गावां ॥ १ ॥

काव्य–गुरुनानक

प ग रे सा ग म ग म प | म प ऽ ध म ध ऽ म ध म ग म ग
सि म र सु मि र ता . . | को . हौं . . जी . वा .
११ १

ग म म नि ध ध म ग म ग म ग रे सा सा सा ध ऽ म
च र ण क म ल ते . रे . धो य धो . य पी . .
५ + ९

ध म ग म ग
वा . . .

॥ अंतरा ॥

ध म ध सां सां सां नि रें | सां ऽ सां नि रें गं ऽ रें सां ऽ नि रें नि ध
सु न सु न अ मृ त | ना म ध्या . . वां . आ . ठ प
११ १

म म म प ग ऽ ग ग ग म नी ऽ ध म ऽ ग म ग रे सा
ह र ते रे . गु ण गा . . वां . . . . .
५ + ९

क्र. ८० राग–मंखार, तीनताल (मध्यलय)

नैनों नीर बहै तन क्षीना भये केश दुधवानी ॥ ध्रु० ॥ रूँधा कंठ शब्द नहि उचरे अब क्या करहि परानी ॥ १ ॥

—काव्य–गुरुनानक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

| | | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प नि ध म म ग म ग रे सा
० ० ० ० ० ० ० ० ०
सा . रा . . . . . .

१ ३

॥ अंतरा ॥

म ध नि सां सां | सां सां सां नि रें सां नि रें ग रें सां सां सां |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
जा को यो गी | खो ज न हा . रा पा यो . न हि ति हि |

+ ७ १ ३ + ७

नि रें नि ध म ग म ऽ ग प गं रें सा सा | ग म म नी नी ध म
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
पा . रा . . . . . सो स्वा मी तु म | नि क ट प छा . नो

१ ३ + ७ १ ३

ग म नि रें नि ध नि ध म म | ग म ध नि रें नि ध म ग रे
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
. . रू . प रे . ख ते . | न्या . . . . . रा . . .

+ ७ १ ३

ग म ग रे नि सा
० ० ० ० ० ०
. . . . . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—ललितावरी

इस राग में ऋषभ कोमल और दो मध्यम लगते हैं। पंचम वर्जित है।

वादी—षडज संवादी—मध्यम

साधारण रूपसे रागका चलन—सा निं रे् सा, रे् निं धं, मं धं सा निं रे् सा, निं रे् ग, म ग रे् ग, म ग रे् सा, ग म ध नी नि ध, म ग, ग म ध सा, नि रे् सा, सा रे् नि सा नि ध, ग म ध म ग म रे् ग, म ग रे् सा

विशेष—यह ललित रागकाही एक प्रकार है। सब चलन ललित राग का होते हुए ललितसे यह राग अलग रखनेके लिये शुद्ध मध्यम वादी होते हुए गान्धार पर न्यास करना चाहिये। जैसे—म, म म ग, म ग म रे् ग, नि ध म म ग रे् ग, इस तरह स्वर न्यास पूर्वांगमे गान्धार पर और उत्तरांगमे धैवत पर न्यास करनेसे ललितसे यह राग अलग दीख पडता है। हिंडोलका अंग भी प्रतीत होता है। ख्याल पद्धतीवाले ललित राग कोमल धैवतसे गाते हैं। तो यह राग शुद्ध धैवतसे ललित गाना है यह समझ मनमे रखकर ऊपर दिये हुए स्वर न्यासको जोड देंगे तो यह ललित रागसे अलग दीख पडेगा।

आलाप

१ सानिंरे्सा, रे्निंधं, मं धंसा, निंरे्सा

२ निंरे्ग, म ग रे् ग, ग म ध म गम, म म रे् ग, म ग रे्सा

३ निं रे् ग म ध, धम ग, ग म धनी नि धम ग, ग म ध म गम रे् ग, म ग रे्सा

४ निं रे् ग म धनी नि ध, म धसा निं रे्सा, सा रे् निसा नि ध,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म ध नी म धनीधमग, ग म ध म गमरेग, मगरेसा

५ निं रें ग म ध नीसांनिरेंसां, निरेंगडरेंमगरेंसां, नि रें गं रें निसां, नि रें नि ध म गममगरेग, रें ग म ग रेसा

६ गरे, मगरेग, धम, निध, रेंनि, गंरें, मंगरेंसां, सांडनि रेंनिध, मधमनिधमग, ममगरेग, मगरेसा

तान

७ निंरेंगगरेंसा, निंरेंगमगरेंनिंसा, निंरेंगमधमगमगरेंनिंसा, निंरेंगमधनिधमगममगरेंनिंसा, निंरेंगमधनिसांनिधमग मगरेंनिंसा, निंरेंगमधनिरेंनिधमगममगरेंनिंसा

८ रेंगगरेंसा–गममगरें–मधधमग–धनिनिधम–निरें रेंनिध–रेंगंगरेंनि–धनिनिधम–गममगरे–रेंगगरेंसा

९ निंरेंगरे–रेंगमग–गमधम– मधनिध– धनिरेंनि– निरेंगरें– धनिरेंसां–मधनिध–गममम–रेंगमग–रेंसा

१० निंरेंगमधध–मधध–मधध–गमधनिरें रें– निरें रें– निरें रें– धनिनि–मधध–गममम–रेंगग–रेंसासा

११ गगरेंसासा–ममगरें–धधमग–निनिधम–रें रेंनिध–गंगरेंसां–रें रेंनिध–निनिधम–धधममम–ममगरें–गगरेंसा

१२ गगरेंगममगरें–धधमधनिनिधम–निनिधनिरें रेंनिध–गंगरेंगमंगरेंसां–सांसांनिसांरें रेंनिध– धधमधनिनिधम– ममगम धधममम–गगरेंगमगरेंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ८२ राग–ललितावरी, ख्याल; ताल तिलवाडा

हमसे तुमसे लागी लोने हरवा परियो पंया तोरे ॥ धृ० ॥ अवधके दिन बीत गईली तुमी बालमुवा तोरे ॥ १ ॥

| | | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

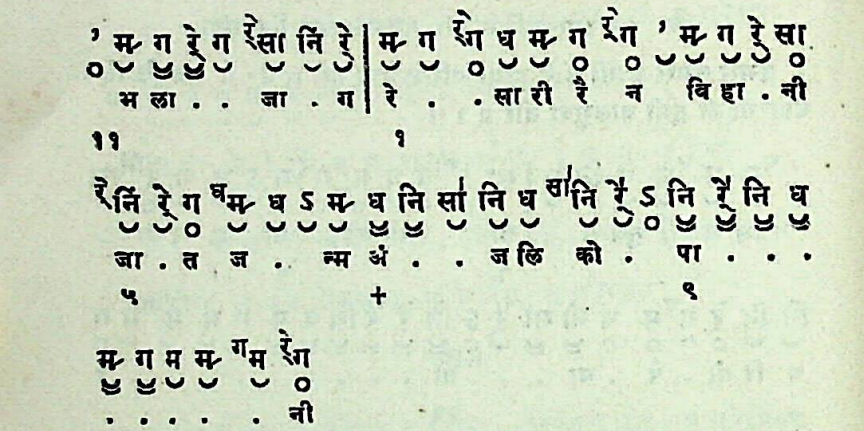

॥ अंतरा ॥

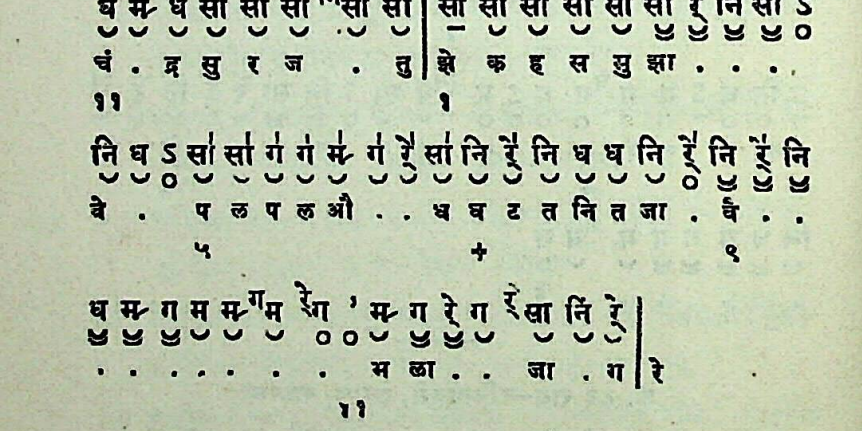

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ८४ राग–ललितावरी, तीनताल (मध्यलय)

कहा नर अपनो जन्म गँवावे । माया मद विषया रस राच्यो राम शरण नहि आवे ॥ धृ० ॥ इह संसार सकल है सुपनो । देख कहा लोभावे ॥ १ ॥ जो उपजे सो सकल विनाशे रहन न कोऊ पावे ॥ २ ॥ –गुरु नानककृत

| | | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग—पंचम

इस रागमे रिषभ कोमल और दो मध्यम लगते हैं। पंचम वर्जित है। संपूर्ण पंचम प्रकारमे पंचम लगता है।

वादी—मध्यम संवादी—षडज समय—उत्तर रात्रि

साधारण रूपसे राग का चलन—सा निं रें सा, सा म, म म॑ म ग, म॑ ध नि ध म॑ ग, म॑ ध सां नि रें सां, गं रें सां, मं॑ गं रें सां, सां नि ध, नि प ध म॑ ग॒म ग, प रे सा

विशेष—यह मारवा अंगका राग है। इसके दो प्रकार प्रचारमे है। एक षाडव (पंचम वर्जित) और दूसरा संपूर्ण। यह दोनों प्रकार ललित अंगसे गाते है। दोनों प्रकार मे दो मध्यमका उपयोग करते है। यह राग उत्तर रात्रीमे गाये जाते है। षाडव प्रकारमे हिंडोल और सोहनी अंग रहता है। इस प्रकारमे कोई रिषभ को दुर्बल मानते है।

आलाप

१ सांनिरेंसा, साम, मम॑मग, ध॒म॑धम॑मग म॑गरेंसा

२ सामग, ध॒म॑धम॑मग, म॑ध॒धसांनिरेंसां, सांनिध, म॑धम॑ग, सामग, नि॒ धनीधम॑ग, म॑गरेंसा

३ म॑धसांनिरेंसां, गंरेंसां, गंम॑गंरेंसां, सांरेंनिधम॑मग, ग॒ म॒नि धम॑ग, ग॒ म॒धम॑ग, म, म॑मग, म॑गरेंसा

४ म॑ म॒ धसांनिरेंसां, रें॒ नि॒ ध॒ म॒ धसां, सांरेंगरेंसां, म॑गं, म॑ग, मनीधम॑मग, गम॑धम॑मग, म॑गरेंसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंचमको लगाकर संपूर्ण प्रकारके आलाप

५ साग, म॒गरे॒सा, गनीधप॒म॒पम॒ग, गम॒धसां, निरे॒सां, म॒ धसां, निरे॒निधम॒प, म॒धम॒मग, पगरे॒सा

६ म॒गरे॒सा, निधप, रे॒निध, गरे॒सां, म॒गरे॒सां, म॒गरे॒सा, सासां निध, निपधम॒गमग, पगरे॒सा

तान

७ सागम॒गरे॒सा, सागम॒धनिधम॒मम॒गरे॒सा, सागम॒धसांनिधम॒ मगम॒गरे॒सा, सागम॒धनिसांरे॒सांनिधम॒गमम॒मगरे॒सा

८ गगरे॒सा–म॒म॒गरे॒सासा–निनिधम॒–धधम॒मगरे॒सा-सांसांनिध–रे॒रे॒सांनि–गांगरे॒सां–रे॒सांनिध–निनिधम॒मग–म॒गरे॒सा

९ गम॒म॒गरे॒निंसा–धनिनिधम॒गम॒–सांरे॒रे॒सांनिधनी–रे॒गांगरे॒सां निसां–निरे॒रे॒सांनिधम॒–धनिनिधम॒मग–गम॒म॒गरे॒निंसा

१० गम॒गरे॒–धनिधम॒–निरे॒सांनि–रे॒गांरे॒सां–गांम॒गांरे॒–निरे॒निध–धनिधम॒–गम॒गरे॒–रे॒गरे॒सा

ऋ. ८५ राग-पंचम, (पाडव प्रकार) ताल तिलवाडा

फूली बसंत बहारिया प्यारे ना सरकी छब देखी मनमे ॥ ध्रु० ॥ नल्गे सो संजोई गुलाब गुलखेरू गुल लाला गेंदा और बेलरिया बना बनमे ॥ १ ॥

| | | |

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

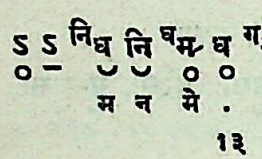

॥ अंतरा ॥

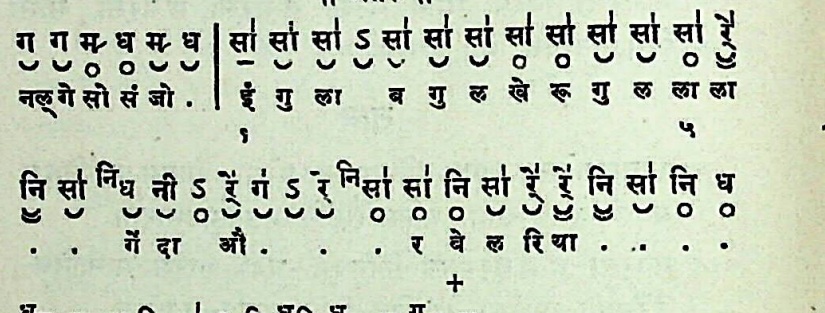

क ८६ राग–पंचम, (पाडव प्रकार) ख्याल; एकताल

देखो प्यारी बिपिनमें, कैसी छबि छाय झुकिरही लता अति लगत सुहावनी ॥ ध्रु० ॥ फूले फूल रंग रंग, भँवर गुंजार करें ठौर ठौर कोकिला बोलत मन भावनी ॥ १ ॥ —काव्य–नारायणस्वामी

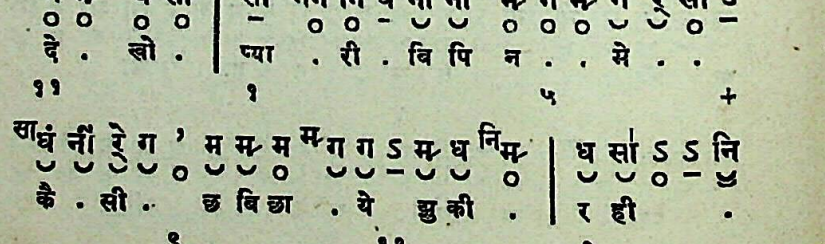

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

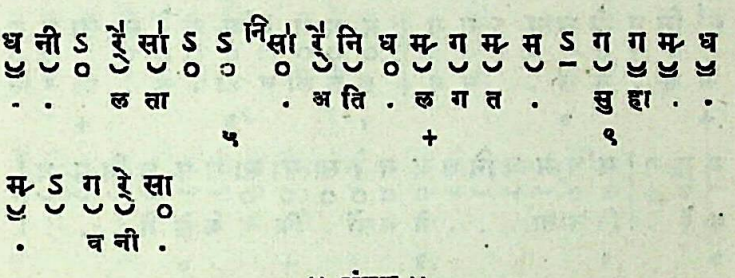

॥ अंतरा ॥

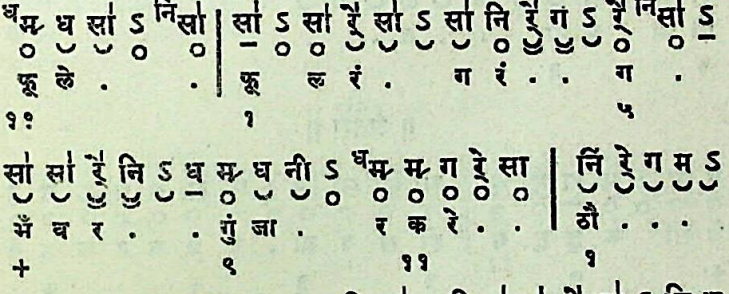
ध म॒ ध सां ऽ नि सां | सां ऽ सां रें सां ऽ सां नि रें ग ऽ रें नि सां ऽ
फू ले . . | फू ल रं . ग रं . . ग .
१९ १ ५
सां सां रें नि ऽ ध म॒ ध नी ऽ ध म॒ म॒ ग रे सा | निं रे ग म ऽ
भँ व र . . गुं जा . र क रे . . | ठौ . . .
+ ९ ११ १
म म॒ ग ऽ ग म॒ ध ऽ म॒ ध नि सां ऽ नि म॒ ग रें सां ऽ नि ध
र ठौ . र को . कि ला . . . बो . ल त . .
५ +
नी ध नी ध म॒ ग म॒ ग रे सा
. म न भा . . व नी .
९

क्र. ८७ राग–पंचम, (षाडव प्रकार) तीनताल (मध्यलय)

मै इनके संग इकली न जाऊं। बीर तिहारे नित तानेनसों, फिर कैसे मैं पीछो छुटाऊं ॥ ध्रु० ॥ जैसी कछू तुम हौ सब जानू। प्रकट कहते कहा फल पाऊ ॥ १ ॥

—काव्य–नारायणस्वामी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि ध नी ध म॒ ऽ ग ग | म॒ ध म॒ ग म॒ ग रे॒ सा सा म म
मै इ . न के . सं ग | इ क ली न जा . ऊं . बी र ति
+ ७ १ ३ +

म म॒ ग | म॒ ध म॒ ध नि ध म॒ ग रे॒ सा सा सा ग म॒ ध नि म॒ ध |
हा रे . | नि त ता . . . ने न सों . फि र कै से मैं . . . |
७ १ ३ + ७

सां सां ऽ सां ध नि सां नि ध म॒ ग म॒
पी छो छु टा . . . ऊं . . .
१ ३

॥ अंतरा ॥

म म ऽ म॒ ग म॒ ध | सां सां सां नि रें॒ सां सां गं गं म॒ गं रें॒
जै सी क छू तु म | हो स ब जा . नू प्र क ट क ह ते
+ ७ १ ३ + ७

सां रें॒ | सां सां नि ध नि सां नि ध म॒ ग म॒
. क | हा फ ल पा . . . ऊ . . .
१ ३

क्र. ८८ राग–पंचम (संपूर्ण प्रकार), ख्याल; एकताल

वामदेव महादेव पारवतीपते बैजुके साधे पशुपती ॥ धृ० ॥ रुद्रमाल गले चंद्र बिराजत भस्म भूषण अंग गोरख जुगजती ॥ १ ॥

ग रे॒ ग म॒ ग रे॒ निं सा ऽ सा | म म ऽ ' म ध ऽ ऽ प म ग रे॒ म
वा . . म दे . व | म हा . . दे . . . .
११ १ ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

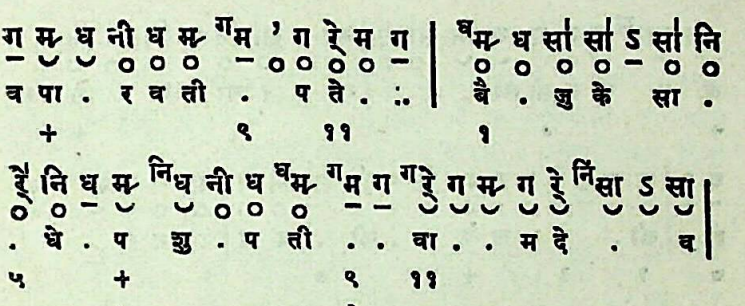

॥ अंतरा ॥

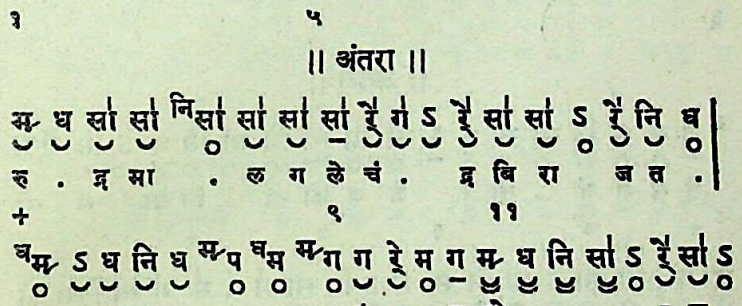

क्र. ८९ राग–पंचम (संपूर्ण प्रकार) तीनताल (मध्यलय)

अबकर सोलाह शृंगार प्यारी कैसी होली अलबेली बनठन बसंत ॥ध्रु०॥ तू सतवंती जब कीनो निवास सो अत बसंत काहूं नाक पतिवरता गल पुष्पमाल सिर सरका सेश नाथ देत दौलत प्रसाद ॥ १ ॥

गुरुबंधू व. रमेशचंद्र ठाकूरजीके संग्रहसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा सा म॒ ग ग म॒ ध नि सां ध | सां ऽ सां नि ध नि सां नि ध प
० ० ० ० ० ० ० ० | — ० ० ० ० ० ० ० —
अ ब क र सो ला . ह शं | गा र प्या . री . कैं . सी
+ ७ १ ३ +

प ऽ | ध म ऽ ऽ ग ग म॒ नि ध नि सां नि ध | म॒ ग ग म॒ ध म॒
— — | ० ० — — ० ० ० ० ० ० — ० ० | ० ० ० ० ० ०
हो | ली . अ ल बे . . ली . ब न | ठ न ब . . .
७ १ ३ + ७ १

ग सा ऽ सा
० ० ० ०
सं . त
३

॥ अंतरा ॥

म॒ ग म॒ ध नि सां सां | ऽ सां सां सां नि सां नि ध ऽ नि म॒ ग
— ० ० ० ० — | — ० ० — ० ० ० ० ० ० —
तू स त वं . ती | ज ब की नो . नि वा स सो
+ ७ १ ३ + ७

म॒ ध | सां सां ऽ सां नि सां ध ऽ नि सां गं गं मं॒ गं सां | सां सां
० ० | ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | ० ०
अ त | ब सं त का हु ना क प ति व र ता . | ग ल
१ ३ + ७ १

सां ध सां ऽ सां रें सां सां सां नि ध निध प प | म॒ प ऽ ध म ऽ
— ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० — | म॒ — — ० ० —
पु ष्प मा ल सि . र स . र का . से | . रा .
३ + ७ १ ३

ऽ प नि ध नि सां नि | निध म॒ म॒ ग म॒ ग सा सा
— ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ०
ना . थ दे . त | दौ . ल त प्र सा . द
+ ७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्र. ९० राग–पंचम (संपूर्ण प्रकार), तीनताल (मध्यलय)

मन, पछितैहो भजन बिनकीने। धन दौलत कछुकाम न आवे। कमल नयन गुन चित बिन दीने ॥ ध्रु० ॥ देखतको यह जगत संगाती। तात मात अपने सुख भीने ॥ १ ॥ ललित किसोरी दुंद मिटेना। आनंद कन्द बिना हरि चीने ॥ २ ॥

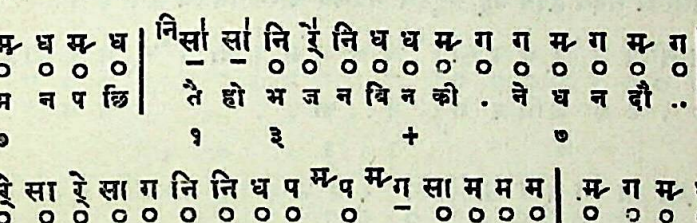
म ध म ध | नि सां सां नि रें नि ध ध म ग ग म ग म ग |
० ० ० ० | — — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
म न प छि | तै हो भ ज न बि न की . ने ध न दौ .. |
७ १ ३ + ७
रे सा रे सा ग नि नि ध प म प म ग सा म म म | म ग म ध
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० | ० ० ० ०
ल त क छु का . म न भा . दे क म ल न | थ न गु न
१ ३ + ७ १
नि सां सां रें सां नि ध म ग म ध म ध | नि सां सां नि रें नि ध
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० | — — ० ० ० ०
चि त बि न दी . ने . म न प छि | तै हो भ ज न बिन
३ + ७ १ ३

॥ अंतरा ॥

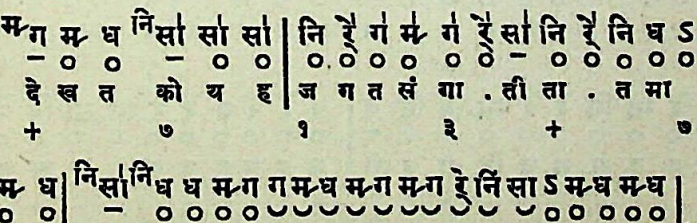
म ग म ध नि सां सां सां | नि रें गं मं गं रें सां नि रें नि ध ऽ प
— ० ० — ० ० | ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० ०
दे ख त को थ ह | ज ग त सं गा . ती ता . त मा त
+ ७ १ ३ + ७
म ध | नि सां नि ध ध म ग ग म ध म ग म ग रें निं सा ऽ म ध म ध |
० ० | — ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
अ प | ने सु ख भी . ने . . . . . म न पछि | तैहो
१ ३ + ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरवणी

क्र. ९१ राग–लंकादहन सारंग (मराठी पद), तीनताल (मध्यलय)

भेटेल कधि जगदंबा जय अवलंब देउनि न विलंब नील चरणांभुज मजला ॥ ध्रु० ॥ हर हर हर आठ प्रहर विसरलो जगज्जननी पद समज विसरलो सदय हृदय बहु सदुदय भवभय करिल विलय हे ॥ १ ॥

नी नी प म रे म प सां | सां ध नी प म प सां ऽ म॒ग॒ म रे सा |
० ० ० ० ० ० ० ० | — — — ० ० — — ० ० ० ० |
भे . टे ल क धि ज ग | दं . बा . . . . ज य अ व |
+ ७ | १ ३ + ७ |

रे सा सा म॒ग॒ म रे सा रे सा म॒रे म म प प | नि सां नि रें सां नि |
— ० ० ० ० ० ० — ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० |
लं ब दे उ नि न वि लं ब नी . ल च र | णां . भु ज म ज |
१ ३ + ७ | १ ३ |

नि म प नी नी प म रे म प सां |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
ला . भे . टे ल क धि ज ग | दंबा
+ ७

॥ अंतरा ॥

म म म म प प नी नी नि नि सां नि सां नि सां | नि सां ऽ रें रें |
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० — | ० ० ० ० |
ह र ह र ह र आ ठ प्र ह र वि स र लो | ज ग ज्ज न |
१ ३ + ७ | १ ३ |

मं रें सां नि रें रें सां नि नि प — | प रें रें मं रें रें सां सां नि रें |
० ० ० ० ० ० ० ० ० — | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० |
नी प द स म ज वि स र लो | स द य ह द य ब हु स दु |
+ ७ १ ३ + |

रे सां ध नि प प | नि नि प प म प म॒रे म |
० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० |
द य म ब म य | क रि ल वि ल य हे . |
७ १ ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi